सत्र : 2025- 26

प्रश्न- पत्र की रूपरेखा

कक्षा: दसवीं

विषय : हिंदी

समय : 3 घंटे

पूर्णांक (लिखित): 80

आंतरिक मूल्यांकन:20

नोट- (i) प्रश्न पत्र के सात भाग (क से छ तक) होंगे।
(ii) प्रश्न- पत्र में कुल 11 प्रश्न होंगे।
(iii) सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य होंगे।

भाग- क :वस्तुनिष्ठ प्रश्न (10)

(i) बहुवैकल्पिक प्रश्न

प्रश्न 1: (I) में निर्धारित विषयों-संधि (स्वर संधि), समास (तत्पुरुष व कर्मधारय समास), भाववाचक संज्ञा निर्माण, पर्यायवाची शब्द तथा विशेषण निर्माण में से पाँच बहुवैकल्पिक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न एक अंक का होगा। 5 × 1 = 5

(II) में 'हिंदी पुस्तक-10 में से कविता, कहानी भाग के अभ्यासों में दिए गए भाग 'क' विषय बोध के अन्तर्गत केवल भाग 'I' में दिए गए प्रश्नों में से चार बहुवैकल्पिक प्रश्न (कविता में से 2, कहानी/लघुकथा में से 2) पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न एक अंक का होगा। 4 × 1 = 4

(III) मुहावरे/लोकोक्तियों से संबंधित एक बहुवैकल्पिक प्रश्न पूछा जाएगा। 1 × 1 = 1

(ii) अन्य वस्तुनिष्ठ प्रश्न (10)

विशेष नोट: इसमें 'रिक्त स्थानों की पूर्ति' अथवा 'मिलान कीजिए,' 'एक शब्द' अथवा 'एक वाक्य में उत्तर दें' किसी भी प्रकार के हो सकते हैं। प्रश्न पत्र निर्माता इनमें से सबको लगभग समान प्रतिनिधित्व देता हुआ निम्नलिखित अनुसार यथोचित प्रश्न पूछ सकता है।

(IV) एक अपठित गद्यांश देकर उसके नीचे पाँच प्रश्न (तीन प्रश्नों के उत्तर गद्यांश में से ढूँढ़कर, एक कठिन शब्द के अर्थ, एक प्रश्न गद्यांश के शीर्षक /केन्द्रीय भाव से सम्बन्धित) दिए जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न एक अंक का होगा। 5 × 1 = 5

(V) में निर्धारित विषयों-समरूपी भिन्नार्थक शब्द, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, 'विलोम (विपरीत)शब्द','अनेकार्थी शब्द' और वाक्य 'शुद्धि' में से पाँच प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न एक अंक का होगा। 5 × 1 = 5

भाग- ख पाठ्य-पुस्तक से संबंधित अन्य प्रश्न (30)

प्रश्न-2: पाठ्य पुस्तक के कविता भाग में से कोई दो पद्यांश देकर उनमें से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या करने के लिए कहा जाएगा। 4 × 1 = 4

प्रश्न-3: में 'हिंदी पुस्तक-10' में 'निबन्ध,'कहानी एवं एकांकी' के अभ्यासों में दिए भाग 'क' विषय बोध के अन्तर्गत केवल भाग 'I' में दिए गए प्रश्नों में से छह प्रश्न (निबन्ध में से 2 कहानी में से 2 तथा एकांकी में से 2) पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न का एक अंक होगा। 6 × 1 = 6

प्रश्न-4: में 'हिंदी पुस्तक 10' में से 'कहानी', 'निबन्ध' एवं 'एकांकी' के अभ्यासों में दिए भाग-'क' विषय बोध के अन्तर्गत केवल भाग 'II' में दिए गए प्रश्नों में से छह प्रश्न पूछे जाएँगे, जिनमें से चार प्रश्नों के उत्तर लगभग तीन चार पंक्तियों में लिखने के लिए कहा जाएगा। $4 \times 2 = 8$

प्रश्न-5: पाठ्य-पुस्तक के गद्य भाग ('कहानी', 'निबन्ध एवं 'एकांकी') के निबन्धात्मक प्रश्नों (अभ्यासों में दिए भाग 'क' विषय बोध के अन्तर्गत केवल भाग 'III' में दिए गए प्रश्न) में से पाँच निबन्धात्मक प्रश्न (प्रत्येक विधा में से एक प्रश्न पूछना अनिवार्य) पूछे जाएँगे, जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग छह-सात पक्तियों में लिखने के लिए कहा जाएगा। $3 \times 4 = 12$

भाग- ग अनुवाद (पंजाबी वाक्यों का हिंदी में अनुवाद) (4)

प्रश्न-6: यह प्रश्न 'अनुवाद' से सम्बन्धित होगा। इस प्रश्न में पंजाबी का लगभग 35-40 शब्दों का एक गद्यांश देकर उसका हिंदी में अनुवाद करने के लिए कहा जाएगा।

भाग- घ विज्ञापन, सूचना और प्रतिवेदन (4)

प्रश्न-7: 'विज्ञापन', 'सूचना' और 'प्रतिवेदन' तीनों में से कोई दो में से प्रश्न पूछे जाएँगे, जिनमें से एक प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए कहा जाएगा।

भाग- ङ मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ (3)

प्रश्न-8: चार मुहावरे / लोकोक्तियाँ देकर उनमें से किन्हीं तीन मुहावरों/लोकोक्तियों को वाक्य में इस तरह प्रयोग करने के लिए कहा जाएगा ताकि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए। $3 \times 1 = 3$

भाग- च (रचनात्मक लेखन) (14)

प्रश्न-9: यह प्रश्न 'पत्र लेखन' से सम्बन्धित होगा। इसमें 100 प्रतिशत आन्तरिक विकल्प दिया जाएगा। 7

प्रश्न-10: यह प्रश्न 'अनुच्छेद-लेखन' से सम्बन्धित होगा। कोई तीन विषय देकर उनमें से किसी एक विषय पर लगभग 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखने के लिए कहा जाएगा। 7

भाग- छ प्रपत्र–पूर्ति (5)

प्रश्न-11: बैंक, डाकखाना, रेलवे से सम्बन्धित प्रपत्रों में से किन्हीं दो के प्रपत्र देकर उनमें से किसी एक प्रपत्र की पूर्ति करने के लिए कहा जाएगा। प्रपत्र की रूपरेखा प्रश्न-पत्र में ही दी जाएगी। $5 \times 1 = 5$

विशेष: प्रश्न पत्र निर्माता बैंक, डाकखाना, रेलवे से सम्बन्धित प्रश्नों में किसी भी प्रपत्र में पाँच स्थानों की पूर्ति करने के लिए कहा जाएगा। प्रत्येक रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए 1 अंक निर्धारित है।

विशेष नोट:- पाठ्य पुस्तक (हिंदी पुस्तक-10) के अभ्यासों को निम्नलिखित शीर्षकों से प्रस्तुत किया गया है:-

1. विषय बोध 2. भाषा बोध 3. रचनात्मक अभिव्यक्ति 4. पाठ्येतर सक्रियता 5. ज्ञान विस्तार

परीक्षा में केवल विषय बोध व भाषा बोध से सम्बन्धित प्रश्न ही पूछे जाएँगे। रचनात्मक अभिव्यक्ति, पाठ्येतर सक्रियता व ज्ञान विस्तार का उपयोग विद्यार्थी की प्रतिभा निखार हेतु आंतरिक मूल्यांकन के अंतर्गत किया जाए।

पाठ - 01 (तुलसीदास दोहावली)

1) श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधारि।
बरनऊँ रघुबर विमल जसु, जो दायकु फल चारि ।। 1

व्याख्या - तुलसीदास जी लिखते हैं कि अपने गुरु जी के कमल रूपी सुंदर चरणों की धूल से मैं अपने मन के दर्पण को साफ़ करता हूँ और तत्पश्चात् प्रभु राम जी का निर्मल यशगान करता हूँ । ऐसा करने से चारों फल - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त होते हैं।

2) राम नाम मनी दीप धरु, जीह देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहरु हुँ, जौ चाहसि उजियार ।। 2

व्याख्या - तुलसीदास जी कहते हैं कि यदि मनुष्य अपने मन के भीतर और बाहर दोनों स्थानों पर उजाला करना चाहता है तो राम नाम रूपी मणियों के दीपक को हृदय में धारण करना चाहिए । ऐसा करने से अज्ञान रूपी अन्धकार नष्ट हो जाता है और ज्ञान रूपी उजाला प्राप्त हो जाता है।

3) जड़ चेतन गुन दोषभय, बिस्व कीन्ह करतार ।
संत हंस गुन गहहिं पय, परिहरि बारि विकार ।। 3

व्याख्या - तुलसीदास जी लिखते हैं कि ईश्वर ने इस समस्त जड़-चेतन संसार को गुण और दोष से युक्त बनाया है लेकिन संतों में हंस के समान नीर-क्षीर विवेक होता है । इसी विवेक का प्रयोग करके संत दोष रूपी जल को त्याग कर गुण रूपी दूध को ग्रहण करते हैं ।

4) प्रभु तरुवर कपि डार पर, ते किए आपु समान ।
तुलसी कहुँ न राम से, साहिब सील निधान ।। 4

व्याख्या - कवि कहता है कि प्रभु श्रीराम जी बहुत महान और उदार हैं । भगवान श्रीराम स्वयं तो वृक्षों के नीचे रहते थे और बन्दर पेड़ों की डालियों पर रहते **थे परन्तु** फिर भी ऐसे बंदरों को भी उन्होंने अपने समान बना लिया । ऐसे उदार, शीलनिधान प्रभु श्रीराम जैसे स्वामी दुनिया में अन्यत्र कोई नहीं **हैं** ।

5) तुलसी ममता राम सो समता सब संसार ।
राग न रोष न दोष दुःख, दास भए भव पार ।। 5

व्याख्या - तुलसीदास जी कहते हैं कि श्रीराम में ममता रखनी चाहिए और संसार के सभी प्राणियों के प्रति समता का भाव रखना चाहिए । इससे मनुष्य राग, रोष, दोष, दुःख आदि से मुक्त हो जाता है । इस प्रकार श्रीराम का दास होने के कारण व्यक्ति भवसागर से पार हो जाता है ।

6) गिरिजा संत समागम सम, न लाभ कछु आन ।
बिनु हरि कृपा न होइ सो, गावहिं वेद पुरान ।। 6

व्याख्या - तुलसीदास जी लिखते हैं कि शिवजी पार्वती जी को संतों के सम्मेलन की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि हे पार्वती ! संतों के साथ बैठकर उनके विचार सुनने से ज़्यादा लाभकारी कुछ भी नहीं है और परमात्मा की कृपा के बिना संतों की संगति प्राप्त नहीं होती, ऐसा वेद-पुराणों में कहा गया है।

7) पर सुख संपति देखि सुनि, जरहिं जे जड़ बिनु आगि।
तुलसी तिन के भाग ते, चलै भलाई भागि ।। 7

व्याख्या - तुलसीदास लिखते हैं कि जो मूर्ख लोग दूसरों के सुख और सम्पत्ति को देखकर ईर्ष्या से जलते रहते हैं , उन लोगों के भाग्य से भलाई स्वयं ही भाग जाती है । तात्पर्य यह है कि दूसरों की प्रगति को देखकर जलने वालों का कभी भी भला नहीं होता।

8) साहब ते सेवक बड़ो, जो निज धरम सुजान ।
राम बाँध उतरै उदधि, लांघि गए हनुमान ॥ 8

व्याख्या - तुलसीदास लिखते हैं कि वह सेवक तो स्वामी से भी बड़ा होता है जो अपने धर्म का पालन सच्चे मन से करता है। इसी बात को स्पष्ट करते हुए कवि कहते हैं कि स्वामी श्रीराम तो सागर पर पुल **बंधने** के बाद ही समुद्र पार कर सके परन्तु उनके सेवक हनुमान तो बिना पुल के ही समुद्र को पार गए ।

9) सचिव वैद गुरु तीनि जो, प्रिय बोलहिं भयु आस ।
राज, धर्म, तन तीनि कर, होइ बेगिही नास ।। 9

व्याख्या - कवि कहते हैं कि यदि किसी राजा का मंत्री, वैद्य और गुरु - ये तीनों राज-भय से अथवा किसी लोभ-लालच से उसकी बात निर्विरोध मान लेते हैं **अर्थात्** उसकी हाँ में हाँ मिलाते हैं तो उस**का** राज्य , धर्म और शरीर तीनों शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं । इस लिए ऐसे चापलूस सलाहकारों से बचना चाहिए ।

10) बिनु बिस्वास भगति नहिं, तेहि विनु द्रवहिं न राम ।
राम कृपा बिनु सपनेहुँ, जीवन लह विश्राम ।। 10

व्याख्या - तुलसीदास लिखते हैं कि सच्चा भक्त भगवान पर अटूट विश्वास रखता है । बिना भगवान पर विश्वास किये प्रभु-कृपा प्राप्त करना संभव ही नहीं है । भगवान राम की कृपा के बिना स्वप्न में **भी** चैन नहीं मिलता । इस लिए प्रभु श्रीराम पर अखंड विश्वास रखते हुए भक्ति करना ही सब प्रकार से लाभकारी होता है ।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए –

1. तुलसीदास जी के अनुसार राम जी के निर्मल यश का गान करने से कौन-से चार फल मिलते हैं ?
उत्तर - भगवान राम जी के निर्मल यश का गान करने से - धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष चार फल प्राप्त होते हैं ।

2. मन के भीतर और बाहर उजाला करने के लिए तुलसी कौन-सा दीपक हृदय में रखने की बात करते हैं ?
उत्तर - मन के भीतर और बाहर उजाला करने के लिए तुलसी राम-नाम रूपी मणियों का दीपक हृदय में रखने की बात करते हैं ।

3. संत किसकी भांति नीर-क्षीर विवेक करते हैं ?
उत्तर - संत हंस की भांति नीर-क्षीर विवेक करते हैं ।

4.तुलसीदास के अनुसार भवसागर को कैसे पार किया जा सकता है?
उत्तर - भगवान राम जी से सच्चा प्रेम करके भवसागर को पार किया जा सकता है ।

5. जो व्यक्ति दूसरों के सुख और समृद्धि को देखकर ईर्ष्या से जलता है ,उसे भाग्य में क्या मिलता है ?
उत्तर - जो व्यक्ति दूसरों के सुख और समृद्धि को देखकर ईर्ष्या से जलता है, उसके भाग्य से भलाई और खुशहाली भाग जाती है ।

6. रामभक्ति के लिए गोस्वामी तुलसीदास किसकी आवश्यकता बतलाते हैं ?
उत्तर - रामभक्ति के लिए गोस्वामी तुलसीदास सच्चे और अटूट विश्वास की आवश्यकता बतलाते हैं ।

पाठ - 2 मीराबाई (पदावली)

सप्रसंग व्याख्या

(1) बसौ मेरे नैनन में नंद लाल।

मोहनि मूरति साँवरी सूरति नैना बनै विसाल।
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल अरुण तिलक दिये भाल।
अधर सुधारस मुरली राजति उर वैजन्ती माल।
छुद्र घंटिका कटि तट सोभित नुपूर शब्द रसाल।
मीरा प्रभु सन्तन सुखदाई भक्त बछल गोपाल।। (1)

व्याख्या: मीराबाई कहती हैं कि हे नंद के पुत्र श्री कृष्ण, आप मेरी आँखों में बस जाओ। आपकी मन को मोहित करने वाली सुन्दर छवि, साँवली सूरत व बड़ी-बड़ी आँखें हैं। आपने मोर के पंखों का बना मुकुट व मकर की आकृति के कुंडल धारण किये हैं। आपके माथे पर लाल रंग का तिलक शोभा बढ़ा रहा है। आपके होठों पर अमृत के समान मीठी ध्वनि निकालने वाली मुरली है और हृदय पर वैज**य**न्ती माला सुशोभित है। छोटी-छोटी घंटियाँ आपकी कमर पर बंधी हैं, पाँवों में छोटे-छोटे घुँघरू बँधे हैं, जिनकी ध्वनि मन को आकर्षित करती है। मीरा के प्रभु श्री कृष्ण का यह रूप सं**तों** को सुख देने वाला तथा भक्तों की रक्षा करने वाला है।

(2) मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।
तात मात भ्रात बंधु, आपनो न कोई।
छांड़ि दई कुल की कानि, कहा करै कोई।
संतन ढिग बैठि बैठि, लोक लाज खोई।
अँसुअन जल सींचि सीचि, प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेलि फैल गई, आनंद फल होई।
भगत देखि राजी भई, जगत देखि रोई।
दासी मीरा लाल गिरधर, तारौ अब मोही। (2)

व्याख्या: मीराबाई जी कहती हैं कि गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाले श्री कृष्ण ही मेरे अपने हैं- दूसरा कोई मेरा नहीं है **।** जिनके सिर पर मोर के पंखों का सुन्दर मुकुट है, वही मेरे पति हैं। माता-पिता, भाई, सगा-संबंधी मेरा कोई अपना नहीं है। मैंने कुल की मर्यादा छोड़ दी है- मुझे अब किसी की परवाह नहीं है। सन्तों की संगति में रह कर मैंने लोक लाज को छोड़ दिया है। श्री कृष्ण रूपी प्रेम की बेल को मैंने अपने आँसुओं के जल से सींचा है। अब तो प्रेम की वह बेल खिल गई है और उस पर भक्ति के मीठे-मीठे फल लग **गए** हैं, जिससे आनन्द की प्राप्ति होगी। मीरा जी कहती हैं कि भक्तों को देखकर उन्हें खुशी मिलती है- संसार का झमेला तो दुःख ही देने वाला है जिसमें रोना-धोना ही है। मीराबाई श्री कृष्ण से प्रार्थना करती हैं कि वे उनकी दासी हैं -अब संसार रूपी समुद्र से उनका उद्धार किया जाए।

(क) विषय-बोध

1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए-

(1) प्र- श्री कृष्ण ने कौन-सा पर्वत धारण किया था?
उत्तर- श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत धारण किया था।
(2) प्र- मीरा किसे अपने नयनों में बसाना चाहती है?
उत्तर- मीरा श्री कृष्ण को अपने नयनों में बसाना चाहती है।
(3) प्र- श्रीकृष्ण ने किस प्रकार का मुकुट और कुंडल धारण किए हैं?
उत्तर- श्रीकृष्ण ने मोर के पंखों का मुकुट और मकर की आकृति के कुंडल धारण किए हैं।
(4) प्र- मीरा किसे देखकर प्रसन्न हुई और किसे देखकर दुःखी हुई?
उत्तर- मीरा भक्तों को देखकर प्रसन्न हुई और सांसारिक मोह-माया में फँसे हुए लोगों को देखकर दुःखी हुई।
(5) प्र- संतों की संगति में रहकर मीरा ने क्या छोड़ दिया?
उत्तर- संतो की संगति में रहकर मीरा ने कुल की मर्यादा तथा लोक लाज को छोड़ दिया।
(6) प्र- मीरा अपने आँसुओं के जल से किस बेल को सींच रही थी?
उत्तर- मीरा अपने आँसुओं के जल से श्री कृष्ण **के** प्रेम रूपी बेल को सींच रही थी।
(7) प्र- पदावली के दूसरे पद में मीराबाई गिरिधर से क्या चाहती है?
उत्तर- पदावली के दूसरे पद में मीराबाई **गिरिधर** से अपना उद्धार चाहती **है।**

पाठ – 3 नीति के दोहे

रहीम---

कहि रहीम सम्पत्ति **सगे, बनत बहुत बहु रीत ।**
विपत कसौटी जे कसे, सोई साँचै **मीत ।। (1)**

व्याख्या-रहीम जी कहते हैं कि जब तक मनुष्य के पास धन-दौलत, पैसा व संपत्ति रहती है तब तक मनुष्य के बहुत से रिश्तेदार, मित्र व दोस्त होते हैं और वे अनेक प्रकार से मित्र बनने का प्रयास करते हैं। परंतु जो मुसीबत के समय हमारा साथ देता है, विपत्ति की कसौटी पर खरा उतरता है, वही वास्तव में सच्चा मित्र होता है।

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय ।
रहिमन सींचे **मूल को, फूलै फलै अधाय ।। (2)**

व्याख्या- इस दोहे में रहीम जी कहते हैं कि एक की साधना पूरी तरह से करने पर सब साधे जाते हैं अर्थात् अगर हम एक समय में एक काम की तरफ पूर्ण रूप से ध्यान देते हैं तो बाकी सारे काम भी पूरे हो जाते हैं। इसके विपरीत अगर हम सभी कार्य एक साथ करने का प्रयास करते हैं तो सब बेकार हो जाता है। जिस प्रकार वृक्ष की जड़ को सींचने पर उस पर लगे फल-फूल भी अपने आप तृप्त हो जाते हैं, उन्हें अलग से सींचना नहीं पड़ता। ठीक उसी प्रकार एक समय पर एक काम की ओर ध्यान केंद्रित करने पर बाकी काम भी अच्छे से संपन्न हो जाते हैं।

तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहि न पान ।
कहि रहीम पर काज हित, सम्पत्ति **संचहिं सुजान।। (3)**

व्याख्या-इस दोहे में रहीम जी कहते हैं कि पेड़ कभी अपना फल स्वयं नहीं खाता बल्कि अपने फल से दूसरों की भूख मिटाता है। सरोवर अपना पानी स्वयं नहीं पीता बल्कि अपने जल से दूसरों की प्यास बुझाता है। ठीक उसी प्रकार अच्छे और सज्जन व्यक्ति संपत्ति का संचय अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों की भलाई के लिए करते हैं **अर्थात्** वह अपने द्वारा एकत्र की गई धन-दौलत को दूसरों की भलाई में लगा देते हैं।

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ **काम आवे सुई, का करे तरवारि ।। (4)**

व्याख्या-इस दोहे में रहीम जी कहते हैं कि हमें बड़ी वस्तु को देखकर छोटी वस्तु के महत्व को भूलना नहीं चाहिए। ठीक वैसे ही जैसे जहाँ पर सुई का काम होता है वहाँ पर तलवार कुछ नहीं कर सकती **अर्थात्** सुई चाहे आकार में कितनी भी छोटी क्यों न हो परंतु उसका कार्य वही कर सकती है, तलवार जैसी बड़ी चीज भी नहीं। अतः हमें बड़ी वस्तु को देखकर छोटी वस्तु की उपयोगिता को भूलना नहीं चाहिए।

बिहारी-------------------------------------

कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय ।
बह खाये बौरात है, यह पाये बौराय ॥(5)

व्याख्या- इस दोहे में बिहारी जी कहते हैं कि कनक **अर्थात्** सोने का नशा कनक **अर्थात्** धतूरे के नशे से सौ गुना अधिक होता है। धतूरे को तो खाने से नशा चढ़ता है परंतु सोना **अर्थात्** धन-दौलत को प्राप्त करने पर ही मनुष्य को उसका नशा चढ़ जाता है। **अर्थात्** अधिक धन दौलत का नशा **अर्थात्** अभिमान मनुष्य को पागल बना देता है।

इहि आशा अटक्यो रहै, अलि गुलाब के मूल ।
हो इहै बहुरि बसंत ऋतु, इन डारनि पै फूल ।। (6)

व्याख्या-बिहारी जी कहते हैं कि भँवरा इसी आशा के साथ पतझड़ में भी गुलाब की जड़ व डालियों के आसपास मंडराता रहता है कि बसंत आने पर इन डालियों पर फिर से फूल खिलेंगे और वह उन फूलों का रसपान करेगा। इसी तरह मनुष्य को भी जीवन में निराश न होकर आने वाले अच्छे दिनों के लिए आशावादी बनकर रहना चाहिए।

सोहतु संग समानु सो, यहै कहै सब लोग।
पान पीक ओठनु बनै, नैननु काजर जोग।। (7)

व्याख्या- इस दोहे में बिहारी जी कहते हैं कि एक जैसे स्वभाव और गुणों वाले लोगों का साथ शोभा देता है, ऐसा सब लोग कहते व मानते हैं। जैसे पान का रंग लाल होता है और उसकी लाल रंग की पीक होठों पर ही अच्छी लगती है। काजल का रंग काला होता है और वह आँखों में ही शोभा देता है।

गुनी गुनी सबकै कहैं, निगुनी गुनी न होतु।
सुन्यौ कहूँ तरू अरक तें, अरक- समान उदोतु ॥ (8)

व्याख्या-बिहारी जी कहते हैं कि गुणी-गुणी कहने से कोई गुणहीन व्यक्ति गुणवान नहीं बन जाता। जिस प्रकार सूर्य को अर्क भी कहते हैं और आक का पौधा भी अर्क कहलाता है परंतु अर्क कहलाने मात्र से आक के पौधे में सूर्य के समान गुण नहीं आ जाते। अतः हमें किसी के नाम पर नहीं बल्कि उसके गुणों व योग्यता पर ध्यान देना चाहिए।

वृन्द ---------------------------------

करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान ।
रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान ।। (9)

व्याख्या-वृन्द जी कहते हैं कि लगातार अभ्यास करने से एक मूर्ख व्यक्ति भी विद्वान बन सकता है। जिस प्रकार रस्सी के बार-बार घिसने से पत्थर पर भी निशान पड़ जाते हैं। अतः लगातार मेहनत करके कमज़ोर व्यक्ति भी अपने लक्ष्य को पा सकता है।

फेर न ह्वै है कपट सों, जो कीजै व्यापार
जैसे हाँडी काठ की, चढ़ै न दूजी बार ।। (10)

व्याख्या- वृन्द जी कहते हैं कि छल और कपट का व्यवहार बार-बार नहीं चल सकता। इनसे बार-बार व्यापार नहीं किया जा सकता। जैसे लकड़ी की हाँडी को एक ही बार आग पर चढ़ाया जा सकता है दूसरी बार नहीं। अतः छल और कपट का व्यवहार एक ही बार किया जा सकता है, बार-बार नहीं।

मधुर वचन ते जात मिट, उत्तम जन अभिमान
तनिक सीत जल सों मिटे, जैसे दूध उफान ।। (11)

व्याख्या-वृन्द जी कहते हैं कि मीठे वचन बोलने से बड़े से बड़े अभिमानी व्यक्ति का अभिमान भी दूर हो जाता है जैसे दूध में आए उफान को ज़रा से **ठंडे** जल के छींटे दूर कर देते हैं या शांत कर देते हैं उसी प्रकार मीठे वचनों से किसी के भी घमं**ड** को शांत किया जा सकता है।

अरि छोटो गनिये नहीं, जाते होत बिगार ।
तृण समूह को तनिक में, जारत तनिक अंगार ।। (12)

व्याख्या-वृन्द जी कहते हैं कि कभी भी अपने शत्रु को अपने से छोटा या कमज़ोर नहीं समझना चाहिए क्योंकि कई बार छोटी वस्तुएँ भी बहुत बड़ा बिगाड़ कर देती हैं। जिस प्रकार एक छोटा-सा अंगारा तिनकों के बहुत बड़े समूह को जला देता है। उसी प्रकार छोटा-सा शत्रु भी कई बार बहुत बड़ा नुकसान कर देता है।

अभ्यास

प्रश्न (1) रहीम जी के अनुसार सच्चे मित्र की क्या पहचान है?
उत्तर - रहीम जी के अनुसार सच्चा मित्र वही होता है जो मुसीबत के समय हमारा साथ **दे**ता है।

प्रश्न (2) ज्ञानी व्यक्ति संपत्ति का संचय किस लिए करते हैं?
उत्तर- ज्ञानी व्यक्ति संपत्ति का संचय दूसरों की भलाई के लिए करते हैं।

प्रश्न (3) बिहारी जी के अनुसार किसका साथ शोभा देता है?
उत्तर- बिहारी जी के अनुसार एक जैसी प्रकृति व स्वभाव वाले लोगों का साथ शोभा देता है।

प्रश्न (4) बिहारी जी ने मानव को आशावादी होने का क्या संदेश दिया है?
उत्तर - बिहारी जी ने भँवरे के माध्यम से मनुष्य को निराश न हो कर आने वाले अच्छे दिनों के लिए आशावादी होने का संदेश दिया है।

प्रश्न (5) छल और कपट का व्यवहार बार-बार नहीं चल सकता - इसके लिए वृन्द जी ने क्या उदाहरण दिया है?
उत्तर- छल और कपट का व्यवहार बार-बार नहीं चल सकता इसके लिए वृन्द जी ने काठ **अर्थात्** लकड़ी की हाँडी की उदाहरण दी है कि जिस प्रकार लकड़ी की हाँडी को बार-बार आग पर नहीं चढ़ाया जा सकता उसी प्रकार छल कपट का व्यवहार भी बार-बार नहीं चल सकता।

प्रश्न (6) निरंतर अभ्यास से व्यक्ति कैसे योग्य बन जाता है? वृंद जी ने इसके लिए क्या उदाहरण दिया है?

उत्तर- निरंतर अभ्यास से व्यक्ति योग्य बन जाता है इसके लिए वृंद जी ने पत्थर और रस्सी की उदाहरण देते हुए कहा है कि जिस प्रकार बार-बार रस्सी घिसने से पत्थर पर भी निशान पड़ जाते हैं, उसी प्रकार बार-बार अभ्यास करते रहने से एक मूर्ख व्यक्ति भी विद्वान बन जाता है।

प्रश्न (7) शत्रु को कमज़ोर या छोटा क्यों नहीं समझना चाहिए?

उत्तर- शत्रु को कमज़ोर या छोटा इसलिए नहीं समझना चाहिए क्योंकि कई बार छोटा-सा शत्रु भी बहुत बड़ा **नुक्सान** कर देता है, ठीक वैसे ही जैसे एक छोटा-सा अंगारा तिनकों के बहुत बड़े समूह को जला देता है।

पाठ - 4

हम राज्य लिए मरते हैं (मैथिलीशरण गुप्त)

सप्रसंग व्याख्या

हम राज्य लिए मरते हैं।
सच्चा राज्य परन्तु हमारे कर्षक ही करते हैं।
जिनके खेतों में है अन्न,
कौन अधिक उनसे सम्पन्न ?
पत्नी-सहित विचरते हैं वे, भव वैभव भरते हैं,
हम राज्य लिए मरते हैं।

व्याख्या:- उर्मिला कहती है कि हम राज परिवार के लोग राज्य कलह के कारण दुःखी हैं। जबकि वास्तव में सच्चा राज्य हमारे किसान करते हैं। वे स्वयं अपने खेतों में अन्न उत्पन्न करते हैं। इसलिए किसानों से धनवान कोई नहीं। **वे** अपनी पत्नी संग जीवन यापन करते हैं जबकि हम गृहक्लेश के कारण वियोग सह रहे हैं। अतः किसान हम से अधिक सुखी हैं।

वे गोधन के धनी उदार,
उनको सुलभ सुधा की धार,
सहनशीलता के आगर वे श्रम सागर तरते हैं।
हम राज्य लिए मरते हैं।

व्याख्या - उर्मिला किसानों की प्रशंसा करते हुए कहती है कि किसानों के पास अमृत की धारा के समान गाय का दूध सहज ही मिल जाता है। किसान सहनशीलता की मूर्ति **हैं**। वे सदैव परिश्रम करने में विश्वास रखते हैं जबकि हम राज परिवार के सदस्य राज्य कलह के कारण दुःखी है।

यदि वे करें, उचित है गर्व,
बात बात में उत्सव-पर्व,
हम से प्रहरी रक्षक जिनके, वे किससे डरते हैं ?
हम राज्य लिए मरते हैं।

व्याख्या :- उर्मिला आगे कहती है कि यदि किसान अपने ऊपर गर्व या मान करते हैं तो इसमें कुछ भी अनुचित नहीं है। उनका ऐसा सोचना बिल्कुल उचित है। वह छोटी-छोटी बातों में खुशी का मौका तलाश लेते हैं। वह प्रतिदिन उत्सव या त्योहार मनाते हैं। जब हम जैसे लोग उनके रक्षक हैं तो उन्हें किसी से भयभीत होने की जरूरत नहीं। जबकि हम राज्य के लिए मरते हैं।

करके मीन मेख सब ओर,
किया करें बुध वाद कठोर,
शाखामयी बुद्धि तजकर वे मूल धर्म धरते हैं।
हम राज्य लिए मरते हैं।

व्याख्या :- प्रस्तुत पंक्तियों में उर्मिला किसानों के सरल व सादे जीवन की ओर संकेत करते हुए कहती है कि किसान व्यर्थ के वाद-विवाद को त्याग कर धर्म के मूल सिद्धांतों को अपनाते हैं। जबकि विद्वान लोग छोटी-छोटी बात पर बहस करते हैं। जबकि हम राजवंशी राज्य कलह के कारण दुःखी हैं।

होते कहीं वही हम लोग,
कौन भोगता फिर ये भोग ?
उन्हीं अन्नदाताओं के सुख आज दुःख हरते हैं।
हम राज्य लिए मरते हैं।

व्याख्या :- प्रस्तुत पंक्तियों में उर्मिला के मन की पीड़ा उजागर होती है। उर्मिला कहती है कि अगर हम राजवंशी न होकर किसान होते तो हमें राज्य कलह के कारण दुः ख न सहना पड़ता अर्थात् हम पति-पत्नी में भी वियोग न **होता** ।**यदि हम भी किसान ही होते तो राज्य कलह के कष्ट हमें न भोगने पड़ते** । उनके सुखों को देखकर हमारे दुःख दूर हो जाते है हैं। लेकिन हम फिर भी राज्य कलह के कारण दुःख भोगते हैं।

(क) विषय - बोध

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए-

(1) प्रस्तुत गीत में उर्मिला किसकी प्रशंसा कर रही है?

उत्तर- प्रस्तुत गीत में उर्मिला **किसानों** की प्रशंसा कर रही है।

(2) किसान संसार को समृद्ध कैसे बनाते हैं?

उत्तर- किसान अन्न पैदा करके संसार को समृद्ध बनाते हैं।

(3) किसान किस प्रकार परिश्रम रूपी समुद्र को धीरज से तैर कर पार करते हैं?

उत्तर- किसान सहनशील होने के कारण अपने परिश्रम और धैर्य से परिश्रम रूपी समुद्र को तैर कर पार करते हैं।

(4) किसानों का अपने ऊपर गर्व करना कैसे उचित है?

उत्तर- किसानों का अपने ऊपर गर्व करना इसलिए उचित है क्योंकि वे समस्त संसार के अन्नदाता होते हैं।

(5) किसान व्यर्थ के वाद-विवाद को छोड़कर किस धर्म का पालन करते हैं?

उत्तर- किसान व्यर्थ के वाद-विवाद को छोड़कर धर्म की मूल बात का पालन करते हैं।

(6) "हम राज्य लिए मरते हैं" में उर्मिला राज्य के कारण होने वाली किस कलह की बात कहना चाहती है?

उत्तर- "हम राज्य लिए मरते हैं" में उर्मिला राज्य के लिए श्री राम को बनवास दिए जाने तथा भरत को राज्य देने से उत्पन्न कलह की बात कहना चाहती है।

पाठ- 5 गाता खग   कवि- सुमित्रानंदन पंत
सप्रसंग व्याख्या

1. **गाता खग प्रात: उठकर-**
सुंदर, सुखमय जग-जीवन!
गाता खग संध्या-तट पर-
मंगल, मधुमय जग-जीवन।

व्याख्या- कवि प्रकृति के विविध स्वरूपों में से पक्षियों के बारे में बताते हुए कहता है कि पक्षी प्रभात के समय संसार के लोगों के सुंदर, सुखमय और समृद्ध जीवन की कामना के गीत गाता है। संध्या के समय पक्षी नदी के तट पर संसार के प्राणियों के मंगलमय अर्थात सुखी और आनंद से भरे जीवन की चाह के गीत गाता है।

2. **कहती अपलक तारावलि**
अपनी आँखों का अनुभव,
अवलोक आँख आँसू की
भर आतीं आँखें नीरव!

व्याख्या- इस पद्यांश में तारों की अनेक पंक्तियाँ संसार को एकटक देखते हुए अपनी आँखों का अनुभव बता रही हैं कि सारे जग का जीवन दु:ख, करुणा और विषमता से भरा हुआ है। संसार के लोगों की वेदना देखकर तारों की आँखों में भी आँसू आ जाते हैं। तारों की अनेक पंक्तियाँ अपने आँसू ओस के रूप में बहाती हैं। कवि कहता है कि आँखों की भाषा मौन होती है।

3. **हँसमुख प्रसून सिखलाते**
पल भर है, जो हँस पाओ,
अपने उर की सौरभ से
जग का आँगन भर जाओ।

व्याख्या- कवि कहता है कि मानव को फूलों से प्रेरणा लेते हुए सदा मुस्कराते रहना चाहिए। मानव का जीवन बहुत छोटा और नाशवान है। यदि हो सके तो मानव को अपने जीवन की विषमताओं और मुश्किलों को दूर करके आनंद और प्रसन्नता से जीवन व्यतीत करना चाहिए। मानव को इस छोटे से जीवन में संसार में आशा और खुशियाँ बाँटकर संसार के आँगन को मुस्कराहट और विश्वास से भर देना चाहिए। अपने सद्गुणों से संसार के वातावरण को भी आनंदित और सुखद बनाना चाहिए। जिस तरह फूल अपना सर्वस्व देकर वातावरण को आनंद से भर देता है उसी तरह मानव को भी अपने सद्गुणों से संसार को समृद्ध बनाना चाहिए।

4. **उठ-उठ लहरें कहतीं यह-**
हम कूल विलोक न पाएँ,
पर इस उमंग में बह-बह
नित आगे बढ़ती जाएँ ।

व्याख्या- कवि कहता है कि लहरें किनारा पाने की उमंग में निरंतर आगे बढ़ती रहती हैं। कई बार उन्हें किनारा नहीं मिलता और वे रास्ते में ही विलीन हो जाती हैं। लेकिन लहरें फिर से उठती हैं और किनारे की उमंग में फिर से गतिशील हो जाती हैं। कवि कहता है कि लहरों से मानव को प्रेरणा लेनी चाहिए। मानव को असफलता या किसी डर की परवाह किए बिना अपनी मंज़िल की ओर बढ़ते रहना चाहिए। लक्ष्य प्राप्ति के रास्ते में कितने ही बंधन, रुकावटें क्यों न आ जाएँ लेकिन हमें निरंतर परिश्रम करते हुए अपने कदमों को आगे बढ़ाते रहना चाहिए।

5. **कँप कँप हिलोर रह जाती-**
रे मिलता नहीं किनारा।
बुद्बुद् विलीन हो चुपके
पा जाता आशय सारा।

शब्दार्थ:- हिलोर - लहर,तरंग; बुद्बुद् - जल का बुलबुला, विलीन - नष्ट हो जाना; आशय - मकसद

व्याख्या- कवि कहता है कि सागर में लहरें बार-बार उठ कर किनारा पाने का प्रयास करतीं हैं। उनमें निरंतर कंपन होता रहता है। रास्तें में ही बिखर जाने के कारण लहरों को किनारा नहीं मिल पाता। इसके विपरीत लहरों के जल से पैदा हुआ बुलबुला अपने जीवन के मकसद को समझता हुआ उसी जल में समा जाता है, जिस से वह पैदा हुआ था। जल के बुलबुले के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि मृत्यु के बाद मनुष्य का परमात्मा से मिलन अर्थात परमात्मा में समा जाना ही उसके जीवन का मकसद है।

(क) विषय- बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए-

1. **पक्षी प्रात: उठकर क्या गाता है ?**
   उत्तर - पक्षी प्रात: उठकर जग के प्राणियों के सुंदर, सुखमय और समृद्ध जीवन की कामना के गीत गाता है।
2. **तारों की पंक्तियों की आँखों का अनुभव क्या है ?**
   उत्तर- तारों की पंक्तियों की आँखों **का अनुभव** देखकर लगता है कि जैसे वे कह रही हों कि सारे जग का जीवन दु:ख, करुणा और विषमता से भरा हुआ है।
3. **फूल हमें क्या संदेश देते हैं?**
   उत्तर- फूल हमें सदैव मुस्कराते रहने का संदेश देते हैं।
4. **लहरें किस उमंग में आगे बढ़ती जाती हैं ?**
   उत्तर- लहरें इस उमंग में आगे बढ़ती जाती हैं कि उन्हें कभी न कभी तो अपना लक्ष्य (किनारा) प्राप्त हो ही जाएगा।
5. **बुलबुला विलीन होकर क्या पा जाता है ?**
   उत्तर- बुलबुला विलीन होकर अपने जीवन का अन्तिम आशय पा जाता है।

पाठ - 6 जड़ की मुस्कान   कवि : हरिवंश राय बच्चन
सप्रसंग व्याख्या

1) **एक दिन तने ने भी कहा था,**
जड़ ?
जड़ तो जड़ ही है ;
जीवन से सदा डरी रही है,
और यही है उसका सारा इतिहास

कि ज़मीन में मुँह गड़ाए पड़ी रही है
लेकिन मैं ज़मीन से ऊपर उठा,
बाहर निकला,
बढ़ा हूँ
मजबूत बना हूँ,
इसी से तो तना हूँ।

व्याख्या- कवि कहता है कि एक दिन तने ने जड़ के बारे में कहा कि जड़ तो निर्जीव है। वह तो सदा जीवन से डरी रही है और यही उसका इतिहास है कि वह हमेशा ज़मीन में मुँह गड़ा कर पड़ी रही है लेकिन मैं ज़मीन से ऊपर उठकर बाहर निकला हूँ। बड़ा हुआ हूँ और मज़बूत बना हूँ। इसलिए तो मैं तना कहलाता हूँ।

2) **एक दिन डालों ने भी कहा था,**
तना ?
किस बात पर है तना ?
जहां बिठाल दिया गया था वहीं पर है बना ;
प्रगतिशील जगती में तिल भर नहीं डोला है,
खाया है, मोटाया है, सहलाया चोला है;
लेकिन हम तने से फूटीं,
दिशा-दिशा में गईं
ऊपर उठीं,
नीचे आईं
हर हवा के लिए दोल बनीं, लहराईं,
इसी से तो डाल कहलाईं।

व्याख्या :- कवि कहता है कि एक दिन डालियों ने भी तने के बारे में कहा कि तना किस बात पर घमंड करता है? उसे जहाँ पर बिठा दिया गया था, वह वहीं पर बैठा है। इस प्रगतिशील संसार में वह बिल्कुल भी गतिशील नहीं है। उसने केवल ज़मीन से खुराक लेकर मज़बूत, सुविधाभोगी शरीर बनाया है लेकिन हम तने से ही जन्म लेकर सभी दिशाओं में गईं। कभी ऊपर उठीं, कभी नीचे आईं और हवा में हिली-डुलीं, लहराईं । इसीलिए तो हम डालियाँ कहलाईं।

3) **एक दिन पत्तियों ने भी कहा था,**
डाल?
डाल में क्या है कमाल?
माना वह झूमी, झुकी, डोली है
ध्वनि-प्रधान दुनिया में
एक शब्द भी वह कभी बोली है?
लेकिन हम हर-हर स्वर करती हैं
मर्मर स्वर मर्मभरा भरती हैं,
नूतन हर वर्ष हुई,
पतझर में झर
बहार-फूट फिर छहरती हैं,
विथकित-चित पंथी का
शाप-ताप हरतीं हैं।

व्याख्या :- कवि कहता है कि एक दिन पत्तियों ने भी डालियों के सम्बन्ध में कहा कि डालियों में भला क्या विशेषता है? यह बात सत्य है कि वे झूमती, झुकती और हिलती डुलती हैं लेकिन आवाज़ वाली इस दुनिया में क्या कभी उन्होंने एक शब्द भी बोला है? इसके विपरीत हम सदा हर-हर का शब्द बोलती रहती हैं। हमारे आपस में टकराने से वातावरण हमारी खड़खड़ाहट की आवाज़ से भर जाता है। हम हर वर्ष नया स्वरूप प्राप्त कर लेती हैं और पतझड़ में झड़ जाती हैं। बसंत ऋतु आने पर हम फिर से निकल आती हैं और डालियों पर छा जाती हैं। हम थके हुए मन वाले राहगीरों की परेशानियों तथा गर्मी को दूर करके उन्हें शांति प्रदान करती हैं।

4) **एक दिन फूलों ने भी कहा था,**
पत्तियाँ?
पत्तियों ने क्या किया?
संख्या के बल पर बस डालों को छाप लिया,
डालों के बल पर ही चल-चपल रही हैं,
हवाओं के बल पर ही मचल रही हैं
लेकिन हम अपने से खुले, खिले, फूले हैं-
रंग लिए, रस लिए, पराग लिए-
हमारी यश-गंध दूर-दूर-दूर फैली है,
भ्रमरों ने आकर हमारे गुन गाए हैं,
हम पर बौराए हैं।
सबकी सुन पाई है,
जड़ मुसकराई है!

व्याख्या- कवि कहता है कि एक दिन फूलों ने भी पत्तियों के सम्बन्ध में कहा कि पत्तियों ने भला किया ही क्या है अर्थात् पत्तियों में कोई विशेषता नहीं है। पत्तियों ने तो केवल अपनी संख्या के बल पर ही डालियों को ढक लिया है। वे डालियों के बल पर ही हिल-डुल रही हैं और हवाओं के कारण ही मचल रही हैं लेकिन हम फूल स्वयं ही रंग, रस, पराग लेकर खुले, खिले और फूले हैं। हमारे यश की सुगन्ध दूर-दूर तक फैली हुई है। भँवरे भी आकर हमारे गुणों का गान करते हैं। वे हम पर पागल-से होकर मंडराते रहते हैं। इन सब की बातों को सुनकर जड़ केवल मुस्कराती है क्योंकि वह जानती है कि यदि वह न होती तो तना, डाल, पत्तियाँ और फूल भी न होते। इन सब का अस्तित्व जड़ के कारण ही है।

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1) **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक- दो पंक्तियों में दीजिए-**

1) **प्र- एक दिन तने ने जड़ को क्या कहा?**

उत्तर- एक दिन तने ने जड़ को कहा कि वह तो निर्जीव है और सदा जीवन से डरी रहती है।

2) **प्र- जड़ का इतिहास क्या है?**

उत्तर- जड़ का इतिहास यह है कि वह सदा ज़मीन के अंदर मुँह गड़ा कर पड़ी रहती है और कभी भी मिट्टी से बाहर नहीं निकलती।

3) **प्र- डाली तने को हीन क्यों समझती है?**

उत्तर- डाली तने को हीन इसलिए समझती है क्योंकि उसे जहाँ बिठा दिया जाता है, वह वहीं बैठा रहता है। कभी भी गतिशील नहीं होता जबकि डाली लहराती रहती है ।

4) **पत्तियाँ डाल की किस कमी की ओर संकेत करती हैं?**

उत्तर- डाल पत्तियों की तरह हर-हर स्वर नहीं करती। वह कभी भी एक शब्द नहीं बोलती।

5) **फूलों ने पत्तियों की चंचलता का आधार क्या बताया?**

उत्तर- फूलों ने पत्तियों की चंचलता का आधार डालियों को बताया।

6) **सबकी बातें सुनकर जड़ क्यों मुस्कराई?**

उत्तर- सबकी बातें सुनकर जड़ इसलिए मुस्कराई क्योंकि उसे पता है कि यदि वह न होती तो तना, डाल, पत्तियां और फूल भी न होते। इन सब का अस्तित्व जड़ के कारण ही है।

पाठ - 7

ममता (कहानी)

जयशंकर प्रसाद जी (कहानीकार)

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1) **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए :-**

प्रश्न 1. ममता कौन थी?

उत्तर : ममता रोहतास दुर्ग के मंत्री चूड़ामणि की पुत्री थी।

प्रश्न 2. मंत्री चूड़ामणि को किस की चिंता थी?

उत्तर : मंत्री चूड़ामणि को अपनी जवान विधवा बेटी ममता के भविष्य तथा अपने दुर्ग की चिंता थी।

प्रश्न 3. मंत्री चूड़ामणि ने अपनी विधवा पुत्री ममता को उपहार में क्या देना चाहा ?

उत्तर : मंत्री चूड़ामणि ने अपनी विधवा पुत्री ममता को सोने-चाँदी के आभूषण उपहार में देने चाहे।

प्रश्न 4. डोलियों में छिपकर दुर्ग के अंदर कौन आए?

उत्तर : स्त्री-वेश में डोलियों में छिपकर दुर्ग के अन्दर शेरशाह के सिपाही आए।

प्रश्न 5. ममता रोहतास दुर्ग छोड़ कर कहाँ रहने लगी?

उत्तर : अपने पिता चूड़ामणि की मृत्यु के बाद ममता दुर्ग छोड़कर काशी के निकट बौद्ध विहार के खंडहरों में झोंपड़ी बनाकर रहने लगी।

प्रश्न 6. ममता से झोंपड़ी में किसने आश्रय माँगा?

उत्तर : ममता से झोंपड़ी में सातों देशों के नरेश हुमायूँ ने आश्रय माँगा।

प्रश्न 7. ममता पथिक को झोंपड़ी में स्थान देकर स्वयं कहाँ चली गई?

उत्तर : ममता पथिक को झोंपड़ी में स्थान देकर स्वयं खंडहरों में रात बिताने के लिए चली गई।

प्रश्न 8. चौसा युद्ध किन-किन के मध्य हुआ?

उत्तर : चौसा युद्ध हुमायूँ और शेरशाह सूरी के मध्य हुआ।

प्रश्न 9. विश्राम के बाद जाते हुए पथिक ने मिरजा को क्या आदेश दिया?

उत्तर : विश्राम के बाद जाते हुए पथिक ने मिरजा को यह आदेश दिया- "मिरजा! उस स्त्री को मैं कुछ भी न दे सका। उसका घर बनवा देना, क्योंकि विपत्ति में मैंने यहाँ आश्रय पाया था। यह स्थान भूलना मत।"

प्रश्न 10. ममता की जीर्ण-कंकाल अवस्था में उसकी सेवा कौन कर रहीं थीं?

उत्तर : ममता की जीर्ण-कंकाल अवस्था में उसकी सेवा गाँव की स्त्रियाँ कर रही थीं। जिनके सुख-दुःख में ममता जीवन भर सहभागिनी रही।

2) **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए :**

प्रश्न 1. ब्राह्मण चूड़ामणि कैसे मारा गया?

उत्तर : ब्राह्मण चूड़ामणि रोहतास दुर्ग का मंत्री था। उसे अपनी विधवा बेटी ममता के भविष्य की चिंता रहती थी। जिसके कारण उसने म्लेच्छों से रिश्वत स्वीकार कर ली। दूसरे दिन डोलियों में भरकर स्त्री-वेश में शेरशाह सूरी के सिपाही रोहतास दुर्ग में प्रवेश कर गए। चूड़ामणि ने जब डोलियों का आवरण खुलवाना चाहा तो पठानों ने इसे महिलाओं का अपमान कहा। तभी वहाँ पर तलवारें खिंच गई और चूड़ामणि मारा गया।

प्रश्न 2. ममता ने झोंपड़ी में आए व्यक्ति की सहायता किस प्रकार की ?

उत्तर : एक रात जब ममता पूजा पाठ कर रही थी तब उसे एक भीषण आकृति वाला व्यक्ति अपने द्वार पर खड़ा दिखाई दिया, जो उससे आश्रय माँग रहा था। जब ममता को पता चला कि वह एक मुग़ल है तो वह उसकी मदद नहीं करना चाहती थी परंतु उसके अंदर 'अतिथि देवो भव' की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। इसलिए अतिथि की सेवा को अपना धर्म समझकर उसने उस मुग़ल को अपनी झोपड़ी में रात बिताने के लिए स्थान दे दिया और स्वयं खंडहरों में जाकर रात बिताई।

प्रश्न 3. ममता ने अपनी झोंपड़ी के द्वार पर आए अश्वारोही को बुलाकर क्या कहा ?

उत्तर : ममता ने अपनी झोंपड़ी के द्वार पर आए अश्वारोही को बुलाकर कहा कि वह नहीं जानती कि वह श**हन**शाह था या साधारण मुग़ल पर एक दिन इसी झोंपड़ी में वह ठहरा था। ममता ने सुना था कि वह उसका घर बनवाने की आज्ञा दे गया था। वह आजीवन अपनी झोंपड़ी खुदवाने के डर से भयभीत रही थी। परंतु आज वह अपने चिर विश्राम गृह में जा रही है, इसलिए अब तुम इसका मकान बनवाओ या महल, उसे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

प्रश्न 4. हुमायूँ द्वारा दिए गए आदेश का पालन कितने वर्षों बाद तथा किस रूप में हुआ?

उत्तर : हुमायूँ द्वारा दिए गए आदेश का पालन 47 वर्षों के बाद हुआ । हुमायूँ के बेटे अकबर ने अपने सैनिकों की सहायता से उस स्थान को ढूँढा जहाँ पर उसके पिता ने एक दिन के लिए विश्राम किया था। फिर वहाँ पर एक अष्टकोण मंदिर बनवाया गया। परंतु वहाँ पर ममता का कोई नाम नहीं था।

प्रश्न 5. मंदिर में लगाए शिलालेख पर क्या लिखा गया?

उत्तर : अकबर ने ममता की झोंपड़ी के स्थान पर एक अष्टकोण मंदिर बनवाया और उस पर एक शिलालेख लगाया गया। जिस पर लिखा था, 'सातों देशों के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था। उनके पुत्र अकबर ने उसकी स्मृति में यह गगनचुंबी मंदिर बनवाया।' शिलालेख पर इतना सब लिखा गया। परंतु हुमायूँ को आश्रय देने वाली ममता का कहीं कोई नाम नही था।

3) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 6 या 7 पंक्तियों में दीजिए :

प्रश्न 1. ममता का चरित्र चित्रण कीजिए ?

उत्तर : ममता इस कहानी की प्रमुख पात्रा है। सारी कहानी उसी के इर्द-गिर्द घूमती है। उसी के नाम पर इस कहानी का नामकरण 'ममता' किया गया है। वह अत्यंत सुंदर है। वह विधवा है। उसमें भारतीय नारी के सभी गुण मौजूद हैं। वह रोहतास दुर्ग के मंत्री चूड़ामणि की पुत्री है। ब्राह्मण होने के कारण उसके मन में धन के प्रति कोई लालच नहीं है। वह राष्ट्रप्रेम की भावना से ओतप्रोत है। अपने पिता द्वारा ली गई रिश्वत को वह लौटा देने का आग्रह करती है। वह त्याग करना और कष्ट सहना जानती है। यह जानते हुए भी कि उसके पिता की हत्या यवनों के हाथों हुई है, वह एक मुगल को आश्रय देती है क्योंकि उसके मन में 'अतिथि देवो भव' की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। वह अपने द्वारा किए गए उपकार का बदला भी नहीं चाहती इसीलिए मुगल के द्वारा उसका घर बनवाने की बात से वह डर जाती है। वह आजीवन सभी के सुख- दु:ख की सहभागिनी रही। इसीलिए उसके अंतिम समय में गाँव की स्त्रियाँ उसकी सेवा के लिए उसको घेर कर बैठी थीं। अतः हम कह सकते हैं कि ममता एक देशभक्त, स्वाभिमानी, परोपकारी, अतिथि देवो भव की भावना से परिपूर्ण एक कर्तव्यनिष्ठ नारी है।

प्रश्न 2. 'ममता' कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर : 'ममता' कहानी 'जयशंकर प्रसाद जी द्वारा रचित एक ऐतिहासिक कहानी है। इस कहानी में लेखक ने ममता के माध्यम से एक आदर्श, कर्तव्यनिष्ठ, त्यागी व तपस्वी जीवन जीने जैसे गुणों को अपनाने की शिक्षा दी है। लेखक के अनुसार इतिहास बनाने में केवल राजाओं का ही हाथ नहीं होता बल्कि एक आम आदमी का भी हाथ होता है। लेखक ने एक विधवा ब्राह्मणी ममता के माध्यम से एक ओर तो हमें रिश्वत न लेने की शिक्षा दी है और साथ ही 'अतिथि देवो भव' की भावना को भी अपनाने के लिए प्रेरित किया है। इस प्रकार इस कहानी से हमें भ्रष्टाचार का विरोध करना, पथिक को आश्रय देना, परोपकार का बदला न चाहना आदि शिक्षाएँ प्राप्त होती हैं।

पाठ – 8 अशिक्षित का हृदय (कहानी)

विश्वंभर नाथ शर्मा 'कौशिक' (कहानीकार)

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए:

प्रश्न 1. बूढ़े मनोहर सिंह का नीम का पेड़ किस के पास गिरवी था ?

उत्तर : बूढ़े मनोहर सिंह का नीम का पेड़ ठाकुर शिवपाल सिंह के पास गिरवी था।

प्रश्न 2. ठाकुर शिवपाल सिंह रुपए न लौटाए जाने पर किस बात की धमकी देता है ?

उत्तर : ठाकुर शिवपाल सिंह रुपए न लौटाए जाने पर नीम का पेड़ कटवा देने की धमकी देता है।

प्रश्न 3. मनोहर सिंह ने रुपए लौटाने की मोहलत कब तक की मांगी थी ?

उत्तर : मनोहर सिंह ने रुपए लौटाने की मोहलत एक सप्ताह की **मां**गी थी।

प्रश्न 4. नीम का वृक्ष किस के हाथ का लगाया हुआ था ?

उत्तर : नीम का वृक्ष बूढ़े मनोहर सिंह के पिता जी के हाथ का लगाया हुआ था।

प्रश्न 5. तेजा सिंह कौन था ?

उत्तर : तेजा सिंह गाँव के एक प्रतिष्ठित किसान का बेटा था। उसकी आयु 15-16 वर्ष की थी।

प्रश्न 6. ठाकुर शिवपाल सिंह का कर्ज़ अदा हो जाने के बाद मनोहर सिंह ने अपने नीम के पेड़ के विषय में क्या निर्णय लिया ?

उत्तर : ठाकुर शिवपाल सिंह का कर्ज़ अदा हो जाने के बाद मनोहर सिंह ने सभी गाँव वालों के सामने अपना नीम का पेड़ बालक तेजा सिंह के नाम कर दिया।

2) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए :

प्रश्न 1. मनोहर सिंह ने अपने नीम के पेड़ को गिरवी क्यों रखा ?

उत्तर : एक वर्ष पूर्व मनोहर सिंह को खेती कराने की सनक सवार हुई थी। उसने ठाकुर शिवपाल सिंह की कुछ भूमि लगान पर लेकर खेती कराई थी। परंतु दुर्भाग्य से उस साल वर्षा न हुई, जिसके कारण कुछ भी पैदावार न हुई। ठाकुर शिवपाल सिंह को लगान न पहुँचा। तब ठाकुर शिवपाल सिंह ने मनोहर सिंह का नीम का पेड़ जो उसके पिता के हाथ का लगाया हुआ था, गिरवी रख लिया।

प्रश्न 2. ठाकुर शिवपाल सिंह नीम के पेड़ पर अपना अधिकार क्यों जताते हैं ?

उत्तर : मनोहर सिंह ने डेढ़ वर्ष पूर्व ठाकुर शिवपाल सिंह से खेती करने के लिए रुपए उधार लिए थे। जिसे वह हाथ तंग होने के कारण चुका नहीं पाया। यहाँ तक कि वह उसका ब्याज भी नहीं दे पाया। तब ठाकुर ने रुपयों के स्थान पर मनोहर सिंह का नीम का पेड़ अपने पास गिरवी रख लिया। एक सप्ताह की मोहलत के पश्चात भी जब ठाकुर को रुपए नहीं मिले तब वह नीम के पेड़ पर अपना अधिकार जताते हैं।

प्रश्न 3. मनोहर सिंह ठाकुर शिवपाल सिंह से अपने नीम के वृक्ष के लिए क्या आश्वासन चाहता था ?

उत्तर : मनोहर सिंह जब ठाकुर शिवपाल सिंह का कर्ज़ न चुका पाया तो ठाकुर ने उसका नीम का पेड़ अपने पास गिरवी रख लिया। मनोहर सिंह ने उसे कहा कि अब आपके रुपए का कोई जोखिम नहीं है। क्योंकि यह पेड़ कम से कम 25-30 रुपए का तो अवश्य होगा। यदि वह उधार न चुका पाया तो वह पेड़ उनका हो जाएगा। परंतु वह ठाकुर शिवपाल सिंह से यह आश्वासन चाहता था कि कुछ भी हो जाए परंतु वे उस पेड़ को कटवाएंगे नहीं।

प्रश्न 4. नीम के वृक्ष के साथ मनोहर सिंह का इतना लगाव क्यों था ?

उत्तर : नीम का वृक्ष उसके पिता के हाथ का लगाया हुआ था। इसके साथ उसका बचपन बीता था। वह वृक्ष उसे और उसके परिवार को दातुन और छाया देता रहा था, जिससे उसे सुख मिलता था। वह पेड़ उसे मित्र के समान प्रिय था और उसके पिता के हाथ की निशानी थी इसीलिए उस पेड़ से उसे बहुत लगाव था।

प्रश्न 5. मनोहर सिंह ने अपना पेड़ बचाने के लिए क्या उपाय किया ?

उत्तर : मनोहर सिंह ने अपना पेड़ बचाने के लिए हर संभव उपाय किया। उसने बहुत दौड़-धूप की और दो-चार आदमियों से कर्ज़ भी माँगा परंतु किसी ने उसे रुपए न दिए। फिर उसने निश्चय किया कि उसके जीते जी कोई पेड़ न काट सकेगा। उसने अपनी तलवार निकालकर साफ़ कर ली और हर समय पेड़ के नीचे पड़ा रहने लगा। एक दिन जब ठाकुर के आदमी पेड़ काटने के लिए आए तो वह तलवार निकालकर डट कर खड़ा हो गया और उन्हें डरा धमका कर वापस भेज दिया।

प्रश्न 6. मनोहर सिंह की किस बात से तेजा सिंह प्रभावित हुआ ?

उत्तर : तेजा सिंह मनोहर सिंह को चाचा कहकर बुलाता था। एक दिन मनोहर सिंह को अकेला बड़बड़ाता हुआ देखकर उसका कारण पूछता है। मनोहर सिंह उसे अपना सारा कष्ट और आपबीती बताता है। मनोहर सिंह उसे कहता है कि वह इस पेड़ के लिए मर मिटने को भी तैयार है तो एक पेड़ के प्रति उसका इतना लगाव देखकर तेजा सिंह बहुत प्रभावित होता है।

प्रश्न 7. तेजा सिंह ने मनोहर सिंह की सहायता किस प्रकार की ?

उत्तर : तेजा सिंह मनोहर सिंह का एक पेड़ के प्रति लगाव देखकर बहुत प्रभावित होता है। वह मनोहर सिंह की पेड़ बचाने में सहायता करना चाहता है। इसलिए वह अपने घर से 25 रुपए लेकर आता है। परंतु शीघ्र ही पता चलता है कि वह पैसे उसने चुराए हैं। तेजा के पिता उससे वे रुपए ले लेते हैं। तब तेजा सिंह मनोहर सिंह का कर्ज़ चुकाने के लिए अपनी नानी द्वारा दी गई सोने की अंगूठी उसे दे देता है, जिस पर उसके पिता का कोई अधिकार नहीं था। तब तेजा के पिता अंगूठी के स्थान पर 25 रुपए देकर ठाकुर का कर्ज़ चुका देते हैं। इस प्रकार तेजा सिंह मनोहर सिंह की पेड़ बचाने में सहायता करता है।

3) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 6-7 पंक्तियों में दीजिए :

प्रश्न 1. मनोहर सिंह का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर : मनोहर सिंह 'अशिक्षित का हृदय' कहानी का प्रमुख पात्र है। सारी कहानी उसी के इर्द-गिर्द घूमती है। उसकी आयु लगभग 55 वर्ष है। उसने अपनी जवानी फौज में नौकरी करते हुए बिताई। अब वह संसार में अकेला है। परिवार का कोई सगा-संबंधी नहीं। गाँव में 1-2 दूर के संबंधी है जिन से भोजन बनवा कर वह अपनी जीवन की गाड़ी खींच रहा था। एक बार वह ठाकुर शिवपाल सिंह से खेती के लिए कर्ज़ लेता है। जिसे वह चुका नहीं पाता तो ठाकुर उसका नीम का पेड़ अपने पास गिरवी रख लेता है। मनोहर सिंह ठाकुर को पेड़ तो दे देता है परंतु उससे केवल एक आश्वासन चाहता है कि वह उस पेड़ को काटे नहीं। वह उस नीम के पेड़ से अपने भाई जैसे प्रेम करता है क्योंकि वह उसके पिता के हाथ का लगाया हुआ था। उस पेड़ के लिए वह मर मिटने को भी तैयार हो जाता है। जब उसे पता चलता है कि तेजा सिंह उसके पेड़ को बचाने के लिए घर से पैसे चुरा कर लाया है, तब वह उसे भी ऐसा करने से मना करता है और उसके पैसे वापस कर देता है। तेजा सिंह द्वारा पेड़ बचाने में सहायता करने पर वह अपना पेड़ उसी के नाम कर देता है। इस प्रकार वह हमारे सामने प्रकृति से प्रेम करने वाला, अपने पिता की धरोहर का सम्मान करने वाले,स्वाभिमानी व परोपकार को मानने वाले व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत हुआ है।

प्रश्न 2. तेजा सिंह का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर : तेजा सिंह इस कहानी का दूसरा प्रमुख पात्र है। वह पन्द्रह-सोलह साल का एक किशोर है। गाँव के एक प्रतिष्ठित किसान का बेटा है। वह बहुत ही समझदार व भावुक है। वह मनोहर सिंह को चाचा कहकर बुलाता है। जब वह मनोहर सिंह का पेड़ के प्रति प्रेम देखता है तो उससे बहुत प्रभावित होता है। वह मनोहर सिंह के पेड़ की रक्षा के लिए अपने घर से 25 रुपए चुरा कर लाता है। पिता द्वारा पैसे वापस ले लिए जाने पर वह अपनी नानी द्वारा दी गई सोने की अंगूठी पेड़ को बचाने के लिए दे देता है। तेजा सिंह का पेड़ के प्रति प्रेम देखकर मनोहर सिंह अपना नीम का पेड़ उसी को दे देता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि तेजा सिंह एक साहसी, समझदार, भावुक व प्रकृति प्रेमी किशोर के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत हुआ है।

प्रश्न 3. 'अशिक्षित का हृदय' कहानी का उद्देश्य क्या है ?

उत्तर : 'अशिक्षित का हृदय' कहानी विश्वंभर नाथ शर्मा 'कौशिक' जी द्वारा रचित एक उद्देश्य पूर्ण कहानी है। इस कहानी में अशिक्षित मनोहर सिंह के निश्छल और स्नेहपूर्ण हृदय का चित्रण किया गया है। व्यक्ति का व्यक्ति के प्रति प्रेम तो अक्सर सुनने को मिलता है परंतु किसी का एक पेड़ के प्रति प्रेम कम ही देखने को मिलता है जो इस कहानी में दिखाया गया है। इसी के साथ इस कहानी में कर्ज़ लेने के नुकसान के बारे में भी बताया है। लेखक ने यहाँ पर यह भी बताने का प्रयत्न किया है कि जिस व्यक्ति के पास धन दौलत नहीं होती उसके मित्र भी उससे दूर भागते हैं। मनोहर सिंह और तेजा सिंह के माध्यम से लेखक ने लोगों को प्रकृति से प्रेम करने और मानवीय भावनाओं का सम्मान करने के लिए भी प्रेरित किया है।

पाठ - 9 दो कलाकार (मन्नू भंडारी)

(क) विषय-बोध

1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए:

(1) छात्रावास में रहने वाली दो सहेलियों के नाम क्या थे?

उत्तर- छात्रावास में रहने वाली दो सहेलियों के नाम अरुणा और चित्रा थे।

(2) चित्रा कहानी के आरम्भ में अरुणा को क्यों जगाती है?

उत्तर- चित्रा कहानी के आरम्भ में अरुणा को अपने द्वारा बनाया हुआ चित्र दिखाने के लिए जगाती है।

(3) अरुणा चित्रा के चित्रों के बारे में क्या कहती है?

उत्तर- अरुणा चित्रा के चित्रों के बारे में कहती है कि "कागज़ पर इन बेजान चित्रों को बनाने की बजाय दो-चार की ज़िन्दगी क्यों नहीं बना देती।"

(4) अरुणा छात्रावास में रात को देर से लौटती है तो शीला उसके बारे में क्या कहती है?

उत्तर- अरुणा छात्रावास में रात को देर से लौटती है तो शीला उसके बारे में कहती है कि वह बहुत गुणी है। वह दूसरों के बारे में सोचने वाली समाज सेविका है।

(5) चित्रा के पिता जी ने पत्र में क्या लिखा था?

उत्तर- चित्रा के पिता जी ने पत्र में लिखा था कि जैसे ही उसकी पढ़ाई खत्म हो जाएगी, वह विदेश जा सकती है।

(6) अरुणा बाढ़ पीड़ितों की सहायता करके स्वयंसेवकों के दल के साथ कितने दिनों दिनों बाद लौटीं?
उत्तर- अरुणा बाढ़ पीड़ितों की सहायता करके स्वयंसेवकों के दल के साथ 15 दिनों बाद लौटीं।
(7) विदेश में चित्रा के किस चित्र ने धूम मचाई थी?
उत्तर- विदेश में चित्रा के भिखमंगी और दो अनाथ बच्चों के चित्र ने धूम मचाई थी।
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए :-
प्रश्न 1. अरुणा के समाज सेवा के कार्यों के बारे में लिखिए।
उत्तर - अरुणा एक सच्ची समाज सेविका है। वह छात्रावास में रहते हुए सदा समाज सेवा के कार्यों में जुटी रहती है। वह वहाँ रहकर चपरासियों, दाइयों आदि के बच्चों को मुफ्त पढ़ाती है। बाढ़ पीड़ितों की सेवा के लिए बहुत दिन छात्रावास से बाहर रहती है। फुलिया के बीमार बच्चे की सेवा में दिन रात एक कर देती है। भिखारिन के मरने के बाद वह उसके दोनों बच्चों का पालन पोषण करती है। इस तरह वह सदा समाज सेवा के कार्यों में लगी रहती है।
प्रश्न 2. मरी हुई भिखारिन और उसके दोनों बच्चों को उसके सूखे शरीर से चिपक कर रोते देख चित्रा ने क्या किया?
उत्तर - चित्रा जब वापस लौट रही थी तो उसने देखा कि भिखारिन मर चुकी है और उसके दोनों बच्चे उसके सूखे शरीर से लिपट कर रो रहे हैं। चित्रा के संवेदनशील मन से रहा नहीं गया। उसके अंदर का कलाकार जाग उठा। वह वहीं रुक गई और उस दृश्य को उसने कागज़ पर उतार कर एक चित्र का रूप दे दिया।
प्रश्न 3. चित्रा की हॉस्टल से विदाई के समय अरुणा क्यों नहीं पहुँच सकी ?
उत्तर - जब चित्रा ने आकर अरुणा को मरी हुई भिखारिन और उसके रोते हुए बच्चों के बारे में बताया तो अरुणा यह सुनकर स्वयं को रोक नहीं पाई और वह उसी समय उस भिखारिन के बच्चों के पास पहुँच गयी। उन बच्चों को संभालने में व्यस्त होने के कारण ही वह चित्रा की विदाई के समय वहाँ पर पहुँच नहीं पाई।
प्रश्न 4 - प्रदर्शनी में अरुणा के साथ कौन से बच्चे थे ?
उत्तर - प्रदर्शनी में अरुणा के साथ जो दो बच्चे थे, वे उसी मरी हुई भिखारिन के बच्चे थे जो अपनी माँ के मरने के बाद बेसहारा हो गये थे। जिन बच्चों का चित्र बनाकर चित्रा ने प्रसिद्धि प्राप्त की थी ,उन्हीं बच्चों को अरुणा ने माँ की तरह पाल पोस कर बड़ा किया था। प्रदर्शनी में अरुणा के साथ वही दोनों बच्चे थे।
प्रश्न - निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए :-
प्रश्न - 1 'दो कलाकार' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
उत्तर - 'दो कलाकार' मन्नू भंडारी द्वारा लिखित एक उद्देश्यपूर्ण कहानी है। इस कहानी में लेखिका ने मानवीय गुणों को कला से बढ़कर माना है। कहानी में अरुणा और चित्रा दो सहेलियाँ हैं। चित्रा एक प्रसिद्ध चित्रकार है। वह अपने चित्रों से देश-विदेश में प्रसिद्धि पाती है। मरी हुई भिखारिन व उसके साथ चिपक कर रोते हुए बच्चों का चित्र बनाकर वह बहुत नाम कमाती है, लेकिन अरुणा उन्हीं बच्चों को पाल पोस कर बड़ा करती है और उन्हें माँ का प्यार देती है। इस कारण वह चित्रा से भी बड़ी कलाकार कहलाती है। अतः इस कहानी में लेखक का उद्देश्य यह बताना है कि कलाकार में मानवीय गुणों का होना अति आवश्यक है।
प्रश्न 2 'दो कलाकार' के आधार पर अरुणा का चरित्र चित्रण करें।
उत्तर: अरुणा 'दो कलाकार' कहानी की एक मुख्य पात्रा है। वह एक सच्ची समाज सेविका है। वह मानवीय गुणों से भरपूर है। छात्रावास में रहते हुए ग़रीबों, चपरासियों आदि के बच्चों को वह निःशुल्क पढ़ाती है। किसी के दुःख को देखकर द्रवित हो उठती है। फुलिया दाई के बीमार बच्चे की सेवा करती है। बच्चे की मृत्यु के पश्चात बहुत दुःखी होती है। जिस भिखारिन के चित्र को बनाकर उसकी सहेली चित्रा देश-विदेश में ख्याति पाती है, अरुणा उन्हीं बच्चों का माँ बनकर पालन-पोषण करती है। इस तरह वह अपनी महानता का परिचय देती है। इस प्रकार अरुणा अपने मानवीय गुणों के कारण चित्रा से भी बड़ी कलाकार बन जाती है।
प्रश्न 3 चित्रा एक मंझी हुई चित्रकार है, आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं?
उत्तर. चित्रा एक मंझी हुई चित्रकार है। हम इस कथन से पूर्णतया सहमत है। चित्रा को चित्रकला का बहुत शौक है। वह अपना अधिकतर समय चित्र बनाने में व्यतीत करती है। अत्यंत संवेदनशील होने के कारण वह अपने चित्रों में जान भर देती है। मरी हुई भिखारिन और उसके रोते हुए बच्चों का चित्र बनाकर वह देश विदेश में प्रसिद्धि पाती है। उसकी कला संवेदनशीलता का उदाहरण है। इस तरह हम कह सकते हैं कि चित्रा एक मंझी हुई चित्रकार है।
प्रश्न 4 'दो कलाकार' कहानी के शीर्षक की सार्थकता को स्पष्ट कीजिए ।
उत्तर - 'दो कलाकार' शीर्षक हमारे विचार में पूर्णतया सार्थक है। अरुणा और चित्रा दोनों सखियों को लेखिका ने दो कलाकार माना है। चित्रा अपनी चित्रकला के कारण एक कलाकार का दर्जा पाती है, वही अरुणा अपने मानवीय गुणों के कारण चित्रा से भी बड़ी कलाकार कहलाती है। जिस भिखारिन और उसके रोते हुए बच्चों का चित्र बनाकर चित्रा देश-विदेश में प्रसिद्धि पाती है, उन्हीं अनाथ बच्चों का पालन पोषण कर अरुणा चित्रा से भी बड़ी कलाकार कहलाती है। इस तरह इस कहानी का शीर्षक 'दो कलाकार' पूर्णतया उपयुक्त शीर्षक है।

पाठ-10 नर्स (कला प्रकाश)

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए-
प्रश्न 1. महेश कितने साल का था ?
उत्तर- महेश **छह** साल का था ।
प्रश्न 2. महेश कहाँ दाखिल था ?
उत्तर- महेश अस्पताल में दाखिल था।
प्रश्न 3. अस्पताल में मुलाकातियों के मिलने का समय क्या था ?
उत्तर- अस्पताल में मुलाकातियों के मिलने का समय शाम चार से छः बजे का था ।
प्रश्न 4. वार्ड में कुल कितने बच्चे थे ?
उत्तर- वार्ड में कुल बारह बच्चे थे।
प्रश्न 5. सात बजे कौन-सी दो नर्सें वार्ड में आईं?
उत्तर- सात बजे मरींडा और मांजरेकर नाम की दो नर्सें वार्ड में आईं थीं ।
प्रश्न 6. महेश किस सिस्टर से घुल मिल गया था ?
उत्तर- महेश सिस्टर सूसान से घुल-मिल गया था ।
प्रश्न 7. महेश को अस्पताल से कितने दिन बाद छुट्टी मिली ?
उत्तर- महेश को तेरह दिन बाद अस्पताल से छुट्टी मिली ।
2) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए-
प्रश्न 1. सरस्वती की परेशानी का क्या कारण था ?

उत्तर- सरस्वती का बेटा अस्पताल में दाखिल था। उसका ऑपरेशन हुआ था। सरस्वती उससे मिलने अस्पताल आई थी तो वह उससे लिपट कर रोने लगा। वह उसे वहाँ से जाने नहीं दे रहा था और उसकी कोई बात नहीं सुन रहा था। बेटे का इस प्रकार रोना सरस्वती की परेशानी का कारण था।

प्रश्न 2. सरस्वती ने नौ नंबर वाले बच्चे से क्या मदद मांगी ?

उत्तर- सरस्वती को नौ नंबर बेड वाला बच्चा ज़्यादा समझदार लग रहा था। वह दस वर्ष का होगा। सरस्वती ने उसे पास बुला कर कहा कि वह उसके बेटे महेश को बातों में लगाए और उसे कोई कहानी आदि सुनाए ताकि वह वहाँ से बाहर जा सके। लड़के ने सरस्वती की बात मान ली और उसकी मदद को तैयार हो गया। वह महेश के पास जाकर बात करने लगा और इसी बीच सरस्वती वहाँ से बाहर आ गई।

प्रश्न 3. सिस्टर सूसान ने महेश को अपने बेटे के बारे में क्या बताया ?

उत्तर- जब सिस्टर सूसान ने महेश को रोते देखा था तो उसने महेश को बताया कि उसका बेटा भी उसी की भाँति रोता है। वह बहुत शैतान है। उसका नाम भी महेश है। वह अभी तीन महीने का है। बिल्कुल छोटा-सा है। उसने महेश को यह भी बताया कि आया जब उससे खेलती या गाना गाती है तो वह खुशी से हाथ पैर ऊपर नीचे करने लगता है जैसे नाच रहा हो। महेश के पूछने पर वह उसे बताती है कि उसके बेटे को अभी बोलना नहीं आता । इसलिए वह अभी ‘अगूं,अगूं......गूं,गूं......’ बोलता है ।

प्रश्न 4. दूसरे दिन महेश ने माँ को घर जाने की इजाज़त खुशी-खुशी कैसे दे दी ?

उत्तर- महेश ने अपनी माँ को घर जाने की इजाज़त खुशी-खुशी दे दी थी क्योंकि सिस्टर सूसान के छोटे से बेटे की बातें सुनकर उसने अपनी माँ के बारे में सोचा था। उसे अपनी छोटी बहन मोना के रोने की चिंता थी, जिसे मम्मी पास वाले राजू के घर छोड़ आई थी। वह नहीं चाहता था कि उसके रोने से माँ को किसी प्रकार की परेशानी हो ।

प्रश्न 5. सरस्वती द्वारा सिस्टर सूसान को गुलदस्ता और उसके बबलू के लिए गिफ़्ट पेश करने पर सिस्टर सूसान ने क्या कहा?

उत्तर- सरस्वती द्वारा सिस्टर सूसान को गुलदस्ता और उसके बबलू के लिए गिफ़्ट पेश करने पर सिस्टर सूसान ने कहा, “रंग-बिरंगे सुंदर फूलों वाला यह गुलदस्ता तो मैं ख़ुशी से ले रही हूँ। बाक़ी यह गिफ़्ट किसी ऐसी स्त्री को दे दीजिए, जिसका कोई बबलू हो। मेरा तो कोई बबलू है नहीं, मैंने तो अभी शादी ही नहीं की है।”

iii) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह-सात पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1. सिस्टर सूसान का चरित्र चित्रण अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- सिस्टर सूसान 'नर्स' कहानी की प्रमुख पात्रा है। उसका पेशा नर्स है और नर्स के सभी गुण उसमें मौजूद हैं। उसके लिए नर्सिंग केवल एक व्यवसाय ही नहीं बल्कि मानवता की सेवा भी है। कहानी में वह केवल रोगी का इलाज और देखभाल ही नहीं करती बल्कि रोगी की मनःस्थिति से परिचित होकर उसके अनुरूप व्यवहार भी करती है। जब अस्पताल में दाखिल छह वर्षीय महेश को अपनी माँ के बिना अच्छा नहीं लगता तो ऐसे में सिस्टर सूसान चिकित्सा और उपचार के अतिरिक्त अपनी बातचीत और व्यवहार से उसे माँ जैसी ममता, स्नेह और सुरक्षा प्रदान करती है। सिस्टर सूसान का व्यवहार और आत्मीयता महेश के लिए किसी भी औषधि से अधिक उपयोगी साबित होता है। सिस्टर सूसान महेश का विश्वास जीत उसका मनोबल बढ़ाती है और प्रतिकूल परिस्थिति को अनुकूल परिस्थिति में बदल देती है।

प्रश्न 2. 'नर्स कहानी का उद्देश्य अपने शब्दों में लिखिए ।

उत्तर- 'नर्स' कहानी का उद्देश्य नर्स के सेवाभाव और ममत्व को रोगी के हित में प्रस्तुत करना है। साथ ही एक बच्चे और माँ के मनोभावों को भी सशक्त ढंग से अभिव्यक्त करना है। नर्सिंग केवल एक व्यवसाय, पेशा या करियर नहीं है बल्कि मानवता की सेवा है। नर्स अस्पताल का अभिन्न हिस्सा होती है। नर्स का कर्त्तव्य रोगी का इलाज करना, उसकी देखभाल करना ही नहीं बल्कि उसका दायित्व रोगी की मन:स्थिति से परिचित होकर उसके अनुरूप व्यवहार करना भी है। इस कहानी में अस्पताल में दाखिल छह वर्षीय महेश को अपनी माँ के बिना अच्छा नहीं लगता। ऐसे में सिस्टर सूसान चिकित्सा और उपचार के अतिरिक्त अपनी बातचीत और व्यवहार से उसे माँ जैसी ममता, स्नेह और सुरक्षा प्रदान करती है। सिस्टर सूसान का व्यवहार और आत्मीयता महेश के लिए किसी भी औषधि से अधिक उपयोगी साबित होती है। सिस्टर सूसान महेश का विश्वास जीत उसका मनोबल बढ़ाती है और प्रतिकूल परिस्थिति को अनुकूल परिस्थिति में बदल देती है।

पाठ – 11(i) माँ का कमरा (श्यामसुंदर अग्रवाल)

विषय बोध

i) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए :

प्रश्न 1. बुज़ुर्ग बसंती कहाँ रह रही थी?

उत्तर :- बुज़ुर्ग बसंती छोटे-से पुश्तैनी मकान में रह रही थी ।

प्रश्न 2. बुज़ुर्ग बसंती को किस का पत्र मिला?

उत्तर : बुज़ुर्ग बसंती को अपने बेटे का पत्र मिला |

प्रश्न 3. बसंती की पड़ोसन कौन थी?

उत्तर :- बसंती की पड़ोसन रेशमा थी।

प्रश्न 4. बसंती बेटे के साथ कहाँ आई?

उत्तर :- बसंती बेटे के साथ शहर आई।

प्रश्न 5. कोठी में कितने कमरे थे?

उत्तर :- कोठी में तीन कमरे थे।

प्रश्न 6. नौकर ने बसंती का सामान कहाँ रखा?

उत्तर :- नौकरों ने बसंती का सामान बरामदे के साथ वाले कमरे में रखा।

प्रश्न 7. बसंती के कमरे में कौन-कौन सा सामान था?

उत्तर : बसंती के कमरे में एक डबल बैड बिछा था, गुस्लखाना भी साथ था। उस कमरे में एक टी.वी., एक टेपरिकॉर्डर और दो कुर्सियां पड़ी थीं। बैड पर गद्दे बहुत नरम थे।

ii) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दें :

प्रश्न 1. बेटे ने पत्र में अपनी माँ बसंती को क्या लिखा?

उत्तर : बेटे ने पत्र में अपनी माँ बसंती को लिखा कि उसकी तरक्की हो गई है। कंपनी की ओर से उसे बहुत बड़ी कोठी रहने को मिली है। अब तो उसे उसके पास शहर में आकर रहना ही होगा। वहाँ उसे कोई तकलीफ नहीं होगी।

प्रश्न 2. पड़ोसन रेशमा ने बसंती को क्या समझाया?

उत्तर : पड़ोसन रेशमा ने बसंती को समझाया कि उसे बेटे के पास रहने के लिए शहर नहीं जाना चाहिए। शहर में बहू-बेटे के पास रहकर बहुत दुर्गति होती है। उनके साथ नौकरों जैसा व्यवहार किया जाता है। यहाँ तक कि खाने पीने को भी समय से नहीं दिया जाता। कुत्ते से भी बुरी **हालत** हो जाती है।

प्रश्न 3. बसंती क्या सोचकर बेटे के साथ शहर आई?

उत्तर : पड़ोसन रेशमा की बातें सुनकर बसंती थोड़ा डर गई थी परंतु अगले दिन जब उसका बेटा कार लेकर आ गया तो बेटे की ज़िद के आगे बसंती की एक न चली। तब वह यह सोच कर उसके साथ चली गई कि 'जो होगा देखा जाएगा'।

प्रश्न 4. बसंती के कमरे में कौन-कौन सा सामान था?

उत्तर : बसंती को अपना कमरा स्वर्ग जैसा सुंदर लगा। उस कमरे में एक डबल बैड बिछा था, गुसलखाना भी साथ था। उस कमरे में एक टी.वी., एक टेपरिकॉर्डर और दो कुर्सियां पड़ी थी। बैड पर गद्दे बहुत नरम थे।

प्रश्न 5. बसंती की आँखों में आँसू क्यों आ गए?

उत्तर : बसंती ने जैसा नकारात्मक व्यवहार सोचा था, उसके पुत्र का व्यवहार उससे बिल्कुल विपरीत था। उसने ऐसा सुख भरा जीवन कभी नहीं जिया था। उसके पुत्र ने आजकल के स्वार्थी पुत्रों जैसा व्यवहार नहीं किया था। अब वह अपने पुत्र के साथ सुखपूर्वक रह सकेगी। इस प्रकार पुत्र का स्नेहपूर्ण व्यवहार पाकर बसंती की आँखों में खुशी के आँसू आ गए।

प्रश्न 6. 'माँ का कमरा' कहानी का उद्देश्य क्या है?

उत्तर : 'माँ का कमरा' एक उद्देश्यपूर्ण कहानी है। लेखक का मुख्य उद्देश्य बुज़ुर्गों की स्थिति को बेहतर बनाना और समाज में विघटित हो रहे मूल्यों को पुनः स्थापित करना है। लेखक यह भी बताना चाहता है कि हमें कभी भी किसी की बातों में नहीं आना चाहिए। यदि इस कहानी में बसंती अपनी पड़ोसन रेशमा की बातों में आकर अपने बेटे के साथ न जाती तो वह उसके स्नेहपूर्ण व्यवहार से वंचित रह जाती। इस प्रकार लेखक का उद्देश्य समाज की मानसिकता में बदलाव लाना भी है। यह कहानी हमें निराशा से आशा की ओर लेकर जाती है और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने की शिक्षा देती है।

पाठ – 11 (ii) अहसास (लघुकथा)

उषा आर. शर्मा (कहानीकार)

1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए :-

प्रश्न 1. दिवाकर की नए स्कूल में किसने मदद की ?

उत्तर :- दिवाकर की नए स्कूल में अध्यापिका नीरू मैडम ने मदद की।

प्रश्न 2. स्कूल बस में छात्र-छात्राएँ कहाँ जा रहे थे ?

उत्तर :- स्कूल बस में छात्र-छात्राएँ शैक्षिक भ्रमण के लिए रोज़ गार्डन जा रहे थे।

प्रश्न 3. छात्राएँ बस में क्या कर रही थीं ?

उत्तर :- छात्राएँ बस में अंताक्षरी खेल रही थीं।

प्रश्न 4. दिवाकर बस में बैठा क्या देख रहा था ?

उत्तर :- दिवाकर बस में बैठकर खिड़की के बाहर वृक्षों को तथा दूर तक फैले आसमान को देख रहा था।

प्रश्न 5. दिवाकर को अपने मन में अधूरेपन का अहसास क्यों होता था ?

उत्तर :- दिवाकर अपाहिज था और दूसरे बच्चों की भाँति उछल-कूद नहीं सकता था। इसलिए उसे अपने मन में अधूरे पन का अहसास होता था।

प्रश्न 6. कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राएँ क्या देख कर डर गए ?

उत्तर :- कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राएँ साँप को देखकर डर गए।

२. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए :-

प्रश्न 1. दिवाकर बैंच पर बैठकर क्या सोच रहा था ?

उत्तर :- रोज़ गार्डन में सभी बच्चे उछल कूद रहे थे और झूलों का आनंद ले रहे थे। दिवाकर एक बैंच पर बैठ गया था। उनको देखकर दिवाकर को दो साल पहले की बात याद आ गई , जब वह अपनी बड़ी मौसी के पास दिल्ली गया था और फन सिटी में उसने भी बहुत मस्ती की थी।

प्रश्न 2. साँप को देखकर दिवाकर क्यों नहीं डरा ?

उत्तर :- शहर आने से पहले दिवाकर गाँव के स्कूल में पढ़ता था। वह गाँव में खेतों में कई बार साँप और अन्य जानवरों को देख चुका था। साँप को देखना उसके लिए कोई नई बात नहीं थी, इसीलिए वह साँप को देखकर नहीं डरा।

प्रश्न 3. दिवाकर ने अचानक साँप को सामने देखकर क्या किया ?

उत्तर :- रोज़ गार्डन में इतने बड़े साँप को अचानक अपने सामने देखकर छात्र-छात्राओं के चेहरे का रंग उड़ गया परंतु दिवाकर बिल्कुल भी नहीं घबराया। किसी को कुछ नहीं सूझ रहा था। ऐसे में दिवाकर चीते की सी फुर्ती के साथ वहाँ पहुँच गया। उसकी निगाहें साँप पर थीं और उसने अचानक अपनी बैसाखी से साँप को उठाकर दूर फेंक दिया।

प्रश्न 4. दिवाकर को क्यों पुरस्कृत किया गया ?

उत्तर :- रोज़ गार्डन में दिवाकर ने साँप को बड़ी बहादुरी से दूर फेंक कर सभी बच्चों और अध्यापक की जान बचाई थी। इसीलिए उसकी सूझबूझ व बहादुरी के कारण प्रातःकालीन सभा में प्राचार्य महोदय ने उसे पुरस्कृत किया और उसे अपनी पूर्णता का अहसास दिलाया।

प्रश्न 5. लघुकथा 'अहसास' का उद्देश्य क्या है ?

उत्तर :- 'अहसास' लघुकथा शारीरिक चुनौतियों का सामना करने वाले बच्चों में आत्मविश्वास जगाने वाली एक प्रेरणादायक लघुकथा है। दिवाकर के माध्यम से लेखिका यह बताना चाहती है कि शारीरिक चुनौतियों का सामना करने वाले बच्चे किसी से कम नहीं हैं। अगर किसी कारणवश उनमें कुछ कमी आ गई है तो ईश्वर ने उन्हें कुछ खास भी दिया है, जो दूसरों के पास नहीं है। बस उस 'खास' के अहसास की ज़रूरत होती है। इसी के साथ यह बतलाना भी लेखिका का उद्देश्य है कि अध्यापकों का सहयोग व सौहार्दपूर्ण व्यवहार इस प्रकार के बच्चों को बहुत मदद देता है। अतः लेखिका अपने उद्देश्य को स्पष्ट करने में पूर्ण रूप से सफल भी रही है।

प्रश्न 6. 'अहसास' नामकरण की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- 'अहसास' कहानी का नामकरण उसकी मूल भावना पर आधारित है। यह शीर्षक अत्यंत आकर्षक व भावपूर्ण है। कहानी का मुख्य पात्र दिवाकर अपाहिज होने के कारण स्वयं को अपूर्ण समझता है, परंतु जब वह एक साँप से सभी की रक्षा करता है तो प्रातः कालीन सभा में प्राचार्य महोदय उसे सम्मानित करते हैं। तब तालियों की गड़गड़ाहट में उसे भी अपनी पूर्णता का अहसास होता है। उसके नीरस जीवन में सरसता का संचार हो जाता है। उसके मन का बदला हुआ यह भाव और अहसास ही इस कहानी का शीर्षक बना है। इस प्रकार इस कहानी का शीर्षक सर्वथा सार्थक है क्योंकि सारी कहानी इसी शीर्षक के साथ जुड़ी हुई है और इसी के इर्द-गिर्द घूमती है।

पाठ-12 मित्रता

(आचार्य रामचंद्र शुक्ल)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए:

1. घर से बाहर निकल कर बाहरी संसार में विचरने पर युवाओं के सामने पहली कठिनाई क्या आती है ?

उत्तर-घर से बाहर निकल कर बाहरी संसार में विचरने पर युवाओं के सामने पहली कठिनाई मित्र चुनने की आती है।

2. हमसे अधिक दृढ़ संकल्प वाले लोगों का साथ बुरा क्यों हो सकता है ?

उत्तर- ऐसे लोगों का साथ हमारे लिए बुरा है, जो हम से अधिक दृढ़ संकल्प के हैं क्योंकि हमें उनकी हर बात बिना विरोध के मानलेनी पड़ती है।

3. आजकल लोग दूसरों में कौन-कौन सी दो-चार बातें देखकर चटपट उसे अपना मित्र बना लेते हैं ?

उत्तर- आजकल लोग किसी का हँसमुख चेहरा, बातचीत का ढंग, थोड़ी चतुराई या साहस जैसी दो-चार बातें देखकर ही शीघ्रता से उसे अपना मित्र बना लेते हैं।

4. किस प्रकार के मित्र से भारी रक्षा रहती है ?

उत्तर- विश्वासपात्र मित्र से बड़ी भारी रक्षा रहती है क्योंकि जिसे ऐसा मित्र मिल जाए उसे समझना चाहिए कि खज़ाना मिल गया है।

5. चिंताशील, निर्बल तथा धीर पुरुष किस प्रकार का साथ ढूँढ़ते हैं ?

उत्तर- चिंताशील मनुष्य प्रफुल्लित व्यक्ति का, निर्बल पुरुष बली का तथा धीर व्यक्ति उत्साही पुरुष का साथ ढूँढ़ते हैं।

6. उच्च आकांक्षा वाला चन्द्रगुप्त युक्ति व उपाय के लिए किस का मुँह ताकता था?

उत्तर- उच्च आकांक्षा वाला चंद्रगुप्त युक्ति व उपाय के लिए चाणक्य का मुँह ताकता था।

7. नीति-विशारद अकबर मन बहलाने के लिए किसकी ओर देखता था ?

उत्तर- नीति- विशारद अकबर मन बहलाने के लिए बीरबल की ओर देखता था।

8. मकदूनिया के बादशाह डेमेट्रियस के पिता को दरवाज़े पर कौन सा ज्वर मिला था ?

उत्तर- मकदूनिया के बादशाह डेमेट्रियस के पिता को दरवाज़े पर मौज मस्ती में बादशाह का साथ देने वाला कुसंगति रूपी एक हँसमुख जवान नामक ज्वर मिला था।

9. राजदरबार में जगह न मिलने पर इंग्लैंड का एक विद्वान अपने भाग्य को क्यों सराहता रहा ?

उत्तर- क्योंकि उसे लगता था कि राजदरबारी बन कर वह बुरे लोगों की संगति में पड़ जाता जिससे वह आध्यात्मिक उन्नति न कर पाता। बुरी संगति से बचने के कारण वह अपने आप को सौभाग्यशाली मानता रहा।

10. हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय क्या है ?

उत्तर- हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय स्वयं को बुरी संगति से दूर रखना है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए :-

1. विश्वासपात्र मित्र को खज़ाना, औषध और माता जैसा क्यों कहा गया है ?

उत्तर- लेखक ने विश्वासपात्र मित्र को खज़ाना इसलिए कहा है क्योंकि जैसे खज़ाना मिलने से सभी प्रकार की कमियाँ दूर हो जाती हैं उसी प्रकार से विश्वासपात्र मित्र मिलने से सभी कमियां दूर हो जाती हैं। वह एक औषध के समान हमारी बुराइयों रूपी बीमारियों को ठीक कर देता है। वह माता के समान धैर्य और कोमलता से स्नेह देता है।

2. अपने से अधिक आत्मबल रखने वाले व्यक्ति को मित्र बनाने से क्या लाभ है ?

उत्तर- हमें अपने से अधिक आत्मबल रखने वाले व्यक्ति को अपना मित्र बनाना चाहिए। ऐसा व्यक्ति हमें उच्च और महान कार्यों को करने में सहायता देता है। वह हमारा मनोबल और साहस बढ़ाता है। उसकी प्रेरणा से हम अपनी शक्ति से अधिक कार्य कर लेते हैं। जैसे सुग्रीव ने श्री राम से मित्रता की थी। श्री राम से प्रेरणा प्राप्त कर उसने अपने से अधिक बलवान बाली से युद्ध किया था। ऐसे मित्रों के भरोसे से हम कठिन से कठिन कार्य भी आसानी से कर लेते हैं।

3. लेखक ने युवाओं के लिए कुसंगति और सत्संगति की तुलना किससे की और क्यों ?

उत्तर- सत्संगति से हमारा जीवन सफल होता है। सत्संगति सहारा देने वाली ऐसी बाहु के समान होती है जो हमें निरंतर उन्नति की ओर उठाती जाती है। कुसंगति के कारण हमारा जीवन नष्ट हो जाता है। कुसंगति पैरों में बंधी हुई चक्की के समान होती है जो हमें निरंतर अवनति के गड्ढे में गिराती जाती है।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छः या सात पंक्तियों में दीजिए :-

1. सच्चे मित्र के कौन-कौन से गुण लेखक ने बताएं हैं ?

उत्तर- लेखक के अनुसार सच्चा मित्र पथ-प्रदर्शक के समान होता है, जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकते हैं। वह हमारे भाई जैसा होता है, जिसे हम अपना प्रीति पात्र बना सकते हैं। सच्चे मित्र में निपुणता, अच्छी से अच्छी माता-सा धैर्य और कोमलता होती है। सच्चा मित्र हमारी बहुत रक्षा करता है। वैद्य-सा सच्चा मित्र हमें संकल्पों में दृढ़ करता है, दोषों से बचाता है तथा उत्तमतापूर्वक जीवन निर्वाह करने में हर प्रकार से सहायता देता है।

2. बाल्यावस्था और युवावस्था की मित्रता के अन्तर को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- बाल्यावस्था की मित्रता में एक मग्न करने वाला आनंद होता है। इसमें मन को प्रभावित करने वाली ईर्ष्या और खिन्नता का भाव भी होता है। इसमें बहुत अधिक मधुरता, प्रेम और विश्वास भी होता है। जल्दी ही रूठना और मनाना भी होता है। युवावस्था की मित्रता बाल्यावस्था की मित्रता की अपेक्षा अधिक दृढ़, शांत और गंभीर होती है। युवावस्था का मित्र सच्चे पथ प्रदर्शक के समान होता है।

3. 'दो भिन्न प्रकृति के लोगों में परस्पर प्रीति और मित्रता बनी रहती है'- उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- यह आवश्यक नहीं है कि मित्रता एक ही प्रकार के स्वभाव तथा कार्य करने वाले लोगों में हो। मित्रता भिन्न प्रकृति, स्वभाव और व्यवसाय के लोगों में भी हो जाती है जैसे मुग़ल सम्राट अकबर और बीरबल भिन्न स्वभाव के होते हुए भी मित्र थे। अकबर नीति विशारद तथा बीरबल हंसोड़ व्यक्ति थे। इसी प्रकार से धीर और शांत स्वभाव के राम और उग्र स्वभाव के लक्ष्मण में भी गहरी मित्रता थी।

4. मित्र का चुनाव करते समय हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

उत्तर- मित्र बनाते समय ध्यान रखना चाहिए कि वह हमसे अधिक दृढ़ संकल्प का न हो क्योंकि ऐसे व्यक्तियों की हर बात हमें बिना विरोध के माननी पड़ती है। वह हमारी हर बात को मानने वाला भी नहीं होना चाहिए क्योंकि तब हमारे ऊपर कोई नियंत्रण नहीं रहता। केवल हँसमुख चेहरा, बातचीत का ढंग, चतुराई आदि देखकर भी किसी को मित्र नहीं बनाना चाहिए। उसके गुणों तथा स्वभाव की परीक्षा करके ही मित्र बनाना चाहिए। वह हमें जीवन संग्राम में सहायता देने वाला होना चाहिए। केवल छोटे-मोटे काम निकालने के लिए किसी से मित्रता न करें। मित्र तो सच्चे पथ प्रदर्शक के समान होना चाहिए।

5. 'बुराई अटल भाव धारण करके बैठती है।' क्या आप लेखक की इस उक्ति से सहमत हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- लेखक का यह कथन पूरी तरह से सही है कि बुराई हमारे मन में अटल भाव धारण करके बैठ जाती है। भद्दे और फूहड़ गीत हमें बहुत जल्दी याद हो जाते हैं। अच्छी और गंभीर बात जल्दी समझ में नहीं आती। इसी प्रकार से बचपन में सुनी अथवा कही हुई गंदी गालियाँ कभी नहीं भूलतीं। ऐसे ही जिस व्यक्ति को कोई बुरी लत लग जाती है, जैसे सिगरेट, शराब आदि पीना, तो उसकी वह बुरी आदत भी आसानी से नहीं छूटती। कोई व्यक्ति हमें गंदे चुटकुले आदि सुनाकर हँसाता है तो हमें बहुत अच्छा लगता है। इस प्रकार बुरी बातें सहज ही हमारे मन में प्रवेश कर जाती हैं।

पाठ- 13 मैं और मेरा देश (निबंध)

कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर' (लेखक)

विषय - बोध

1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए :

प्रश्न 1. लेखक को अपनी पूर्णता का बोध कब हुआ?

उत्तर :- जब लेखक को यह पता चला कि उसे बहुतों की अपने लिए ज़रूरत पड़ती है और वह भी बहुतों की ज़रूरतों को पूरा करता है, तब उसे अपनी पूर्णता का बोध हुआ।

प्रश्न 2. मानसिक भूकम्प से क्या अभिप्राय है?

उत्तर :- मानसिक विचारों और विश्वासों में हलचल उत्पन्न होना ही मानसिक भूकम्प कहलाता है, जिससे मन में अनेक विचार आंदोलित होने लगते हैं।

प्रश्न 3. किस तेजस्वी पुरुष के अनुभव ने लेखक को हिला दिया?

उत्तर :- स्वर्गीय पंजाब केसरी लाला लाजपत राय जी के विदेश यात्रा के दौरान भारत वर्ष की गुलामी की लज्जा के कलंक के अनुभव ने लेखक को हिला दिया।

प्रश्न 4. मनुष्य के लिए संसार के सारे उपहारों और साधनों को व्यर्थ क्यों कहा?

उत्तर :- मनुष्य के लिए संसार के सभी उपहार और साधन तब व्यर्थ हो जाते हैं जब उसका देश गुलाम हो या किसी भी अन्य रूप से हीन हो।

प्रश्न 5. युद्ध में 'जय' बोलने वालों का क्या महत्व है?

उत्तर :- युद्ध क्षेत्र में लड़ने के अतिरिक्त 'जय' बोलने वाले भी सैनिकों का साहस और उत्साह बढ़ाने का कार्य करते हैं।

प्रश्न 6. दर्शकों की तालियाँ खिलाड़ियों पर क्या प्रभाव डालतीं हैं?

उत्तर :- दर्शकों की तालियों से खिलाड़ियों के पैरों में बिजली लग जाती है और गिरते खिलाड़ी भी उभर जाते हैं।

प्रश्न 7. जापान के स्टेशन पर स्वामी रामतीर्थ क्या ढूंढ रहे थे?

उत्तर :- जापान के स्टेशन पर स्वामी रामतीर्थ ताजे फल ढूंढ़ रहे थे।

प्रश्न 8. कमालपाशा कौन थे?

उत्तर :- कमालपाशा तुर्की के राष्ट्रपति थे।

प्रश्न 9. बूढ़े किसान ने कमालपाशा को क्या उपहार दिया?

उत्तर :- बूढ़े किसान ने कमालपाशा को मिट्टी की छोटी-सी हंडिया में पाव भर शहद उपहार में दिया।

प्रश्न 10. किसान ने पंडित जवाहरलाल नेहरू को क्या उपहार दिया?

उत्तर :- किसान ने पंडित जवाहरलाल नेहरू को रंगीन सुतलियों से बनी एक खाट उपहार में दी।

प्रश्न 11. लेखक के अनुसार हमारे देश को किन दो बातों की आवश्यकता है?

उत्तर :- लेखक के अनुसार हमारे देश को - शक्तिबोध और सौंदर्यबोध इन दो बातों की आवश्यकता है।

प्रश्न 12. शल्य कौन था?

उत्तर :- शल्य महाबली कर्ण का सारथी, माद्री का भाई और नकुल सहदेव का मामा था।

2) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए:

प्रश्न 1. लाला लाजपत राय के किस अनुभव ने लेखक की पूर्णता को अपूर्णता में बदल दिया ?

उत्तर :- लाला लाजपत राय जी सारे संसार में घूमे थे। संसार **के** देशों में घूम कर जब वे अपने देश लौटे तो उन्होंने अपनी विदेश यात्रा का अनुभव सुनाते हुए कहा कि वे अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस और संसार के अनेक देशों में घूमे परंतु जहाँ भी गए वहाँ भारतवर्ष की गुलामी की लज्जा का कलंक उनके माथे पर लगा ही रहा। उनके इसी अनुभव ने लेखक की पूर्णता को अपूर्णता में बदल दिया था।

प्रश्न 2. स्वामी रामतीर्थ द्वारा फलों की टोकरी का मूल्य पूछने पर जापानी युवक ने क्या कहा?

उत्तर :- एक बार स्वामी रामतीर्थ जापान के स्टेशन पर ताज़े फल ढूंढ़ रहे थे और फल न मिलने पर उन्होंने कहा कि शायद जापान में अच्छे फल नहीं मिलते। तभी एक जापानी युवक जो कि अपनी पत्नी को रेल में बैठाने आया था, ने उनकी यह बात सुन ली। तभी वह कहीं दूर से एक टोकरी ताज़े फल लाया और स्वामी जी को भेंट करते हुए कहा कि लीजिए, आपको ताज़े फलों की ज़रूरत थी। स्वामी जी ने उसे फल बेचने वाला समझकर उनका दाम देना चाहा तो उसने स्वामी जी से कहा कि यदि आप इनका मूल्य मुझे देना ही चाहते हैं तो वह यह है कि आप अपने देश में जाकर किसी से यह न कहिएगा कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते।

प्रश्न 3. किसी देश के विद्यार्थी ने जापान में ऐसा कौन-सा काम किया जिससे उसके देश के माथे पर कलंक का टीका लग गया?

उत्तर :- किसी देश का एक युवक जापान में शिक्षा लेने आया। एक दिन वह सरकारी पुस्तकालय से पुस्तक पढ़ने को लाया। उस पुस्तक में कुछ दुर्लभ चित्र थे। उस युवक ने पुस्तक में से वे चित्र निकाल लिए और पुस्तक वापस कर आया। किसी जापानी विद्यार्थी ने यह देख लिया और पुस्तकालय को इसकी सूचना दे दी। पुलिस ने तलाशी लेकर वे चित्र उस विद्यार्थी के कमरे से बरामद किए और उस विद्यार्थी को जापान से निकाल दिया और साथ ही पुस्तकालय के बाहर बोर्ड पर लिखवा दिया गया कि जिस देश का भी वह विद्यार्थी था उसका कोई भी निवासी इस पुस्तकालय में प्रवेश नहीं कर सकता। इस प्रकार उसने अपने काम से अपने देश के मस्तक पर कलंक का टीका लगा दिया।

प्रश्न 4. लेखक के अनुसार कोई भी कार्य महान कैसे बन जाता है?

उत्तर:- लेखक के अनुसार महत्व किसी कार्य की विशालता में नहीं है, बल्कि उस कार्य को करने की भावना में है। बड़े से बड़ा कार्य हीन है, यदि उसके पीछे अच्छी भावना नहीं है और छोटे से छोटा कार्य भी महान बन जाता है यदि उसको करने के पीछे अच्छी भावना है।

प्रश्न 5. शल्य ने कौन-सा महत्वपूर्ण कार्य किया? पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर :- शल्य महाबली कर्ण का सारथी था। जब भी कर्ण अपने पक्ष की विजय की घोषणा करता तो शल्य अर्जुन की अजेयता का हल्का-सा उल्लेख कर देता। बार-बार इस उल्लेख से कर्ण के आत्मविश्वास में कमी आ गई। इसी कमी के कारण वह अर्जुन से पराजित हुआ।

प्रश्न 6. शक्ति बोध और सौंदर्य बोध से क्या तात्पर्य है? पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर- शक्ति बोध का अर्थ देश को शक्तिशाली बनाने और शक्ति के ज्ञान से है। जब हम यह समझ लें कि हमारा कोई भी काम ऐसा न हो जो देश में कमज़ोरी की भावना को बल दे और हम अपने देश को दूसरों से श्रेष्ठ बनाने की कोशिश करें तो हम अपने देश को शक्तिशाली बनाते हैं। सौंदर्य बोध का अर्थ देश को सुंदर बनाने से है। जब हम यह समझ लें कि हमारे किसी भी काम से देश में कुरुचि की भावना पैदा न हो और देश की सुंदरता को कोई चोट न पहुँचे तो हम अपने देश को सुंदर बनाते हैं।

प्रश्न 7: हम अपने देश के शक्ति बोध को किस प्रकार चोट पहुँचाते है?

उत्तर :- जब हम रेलों, मुसाफिरखानों, क्लबों, चौपालों, मोटर बसों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर अपने देश की खामियों का वर्णन करते हैं और दूसरे देश की खुशहाली की प्रशंसा करते हैं। अपने देश की दूसरे देशों के साथ तुलना करते हुए अपने देश को हीन और दूसरे देशों को श्रेष्ठ सिद्ध करते हैं तो ऐसा करके हम अपने देश के शक्ति बोध को भयंकर चोट पहुँचाते हैं और स्वयं अपने ही देश के सामूहिक मानसिक बल को हीन कर देते हैं।

प्रश्न 8. हम अपने देश के सौन्दर्य बोध को किस प्रकार चोट पहुँचाते हैं?

उत्तर :- जब हम केला खाकर छिलका रास्ते में फेंकते हैं, घर का कूड़ा बाहर फेंकते हैं, मुँह **से** गंदे शब्दों से गंदे भाव प्रकट करते हैं, इधर की उधर, उधर की इधर लगाते हैं, अपना घर, दफ्तर, गली गंदा रखते हैं, होटलों, धर्मशालाओं या दूसरे स्थानों में, जीनों में, कोनों में पीक थूकते हैं। उत्सवों, मेलों, रेलों और खेलों में ठेलमठेल करते हैं, निमंत्रित होने पर समय से लेट पहुँचते हैं, वचन देकर भी घर आने वालों को समय पर नहीं मिलते, ऐसा सब करके हम अपने देश की संस्कृति और सौंदर्य बोध को चोट पहुँचाते हैं।

प्रश्न 9. देश की उच्चता और हीनता की कसौटी क्या है?

उत्तर :- देश की उच्चता और हीनता की कसौटी चुनाव है। जिस देश के नागरिक यह समझते हैं कि चुनाव में किसे अपना मत देना चाहिए और किसे नहीं, वह देश उच्च है और जहाँ के नागरिक गलत लोगों के उत्तेजक नारों या व्यक्तियों के गलत प्रभाव में आकर मत देते हैं, वह देश हीन है।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छः या सात पंक्तियों में दीजिए :-

प्रश्न 1. लाला लाजपत राय जी ने देश के लिए कौन-सा महत्वपूर्ण कार्य किया? निबंध के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर :- लाला लाजपत राय जी देश के स्वतंत्रता सेनानियों में से प्रमुख थे। उन्होंने देश की पराधीन स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए अनेक लेख लिखे। उन्होंने अपने लेखों और वाणी से देश के लोगों के अंदर स्वतंत्रता पाने के लिए जोश पैदा किया। वे संसार भर के देशों में घूमे। परंतु जहाँ भी गए भारत देश की गुलामी की लज्जा का कलंक होने के कारण मन ही मन बहुत दु:खी हुए। वे एक अद्भुत व्यक्तित्व वाले मनुष्य थे। जिससे भी मिलते थे, उस पर छा जाते थे। उनकी कलम और वाणी में तेजस्विता की ऐसी किरणें थीं जिससे अपने मुग्ध हो जाते थे और पराए भौंचक। उन्होंने भारतीयों को अंग्रेज़ों की गुलामी के कलंक से छुटकारा पाने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति में विशेष भूमिका निभाई।

प्रश्न 2. तुर्की के राष्ट्रपति कमाल पाशा और भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू से संबंधित घटनाओं द्वारा लेखक क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर :- तुर्की के राष्ट्रपति कमालपाशा को उनकी वर्षगाँठ के अवसर पर एक बूढ़े किसान ने मिट्टी की छोटी-सी हंडिया में पाव-भर शहद उपहार में दिया, जिसे कमालपाशा ने उस दिन का सर्वोत्तम उपहार कहा। ठीक उसी प्रकार प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को एक किसान ने रंगीन सुतलियों से बुनी खाट भेंट की जिसे देख कर पंडित जी भाव-विभोर हो गए थे। ये दोनों ही उपहार कोई विशेष या बहुत कीमती नहीं थे परंतु इन उपहारों को देने वाले भेंटकर्त्ताओं की भावना अच्छी और सच्ची थी जिसने उन साधारण से उपहारों को भी कीमती बना दिया। इस प्रकार इन घटनाओं से लेखक यही संदेश देना चाहता है कि महत्व किसी कार्य की विशालता में नहीं बल्कि उस कार्य को करने की भावना में है।

प्रश्न 3. लेखक ने देश के नागरिकों को चुनावों में किन बातों की ओर ध्यान देने के लिए कहा है?

उत्तर :- लेखक ने देश की उच्चता और हीनता की कसौटी चुनाव को कहा है। इसीलिए उसके अनुसार देश के प्रत्येक नागरिक को अपने मताधिकार का सही प्रयोग करना चाहिए। किसी भी नागरिक को गलत लोगों के उत्तेजक नारों या व्यक्तियों के गलत प्रभाव में आकर मत नहीं देना चाहिए। देश के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य है कि जब भी कोई चुनाव हो तो व्यक्ति विशेष के गुण-दोषों को विचार कर ठीक मनुष्य को ही अपना मत देना चाहिए न कि किसी लालच में आकर। तभी कोई देश उच्च बन सकता है।

पाठ - 14 राजेन्द्र बाबू (निबंध)
महादेवी वर्मा (लेखिका)

(क) विषय - बोध

1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक दो पंक्तियों में दीजिए :-

प्रश्न 1. राजेंद्र बाबू को लेखिका ने प्रथम बार कहाँ देखा था?

उत्तर : राजेंद्र बाबू को लेखिका ने प्रथम बार पटना स्टेशन पर देखा था ।

प्रश्न 2. राजेंद्र बाबू अपने स्वभाव और रहन-सहन में किसका प्रतिनिधित्व करते थे ?

उत्तर : राजेंद्र बाबू अपने स्वभाव और रहन-सहन में एक साधारण भारतीय कृषक का प्रतिनिधित्व करते थे।

प्रश्न 3. राजेंद्र बाबू के निजी सचिव और सहचर कौन थे?

उत्तर : राजेंद्र बाबू के निजी सचिव और सहचर भाई चक्रधर थे ।

प्रश्न 4. राजेंद्र बाबू ने किनकी शिक्षा की व्यवस्था करने के लिए लेखिका से अनुरोध किया ?

उत्तर : राजेंद्र बाबू ने लेखिका से अपनी 15-16 पौत्रियों की शिक्षा की व्यवस्था करने के लिए अनुरोध किया।

प्रश्न 5. लेखिका प्रयाग से कौन-सा उपहार लेकर राष्ट्रपति भवन पहुँची थीं?

उत्तर : लेखिका प्रयाग से सिरकी के बने बारह सूपों का उपहार लेकर राष्ट्रपति भवन पहुँची थीं।

प्रश्न 6. राष्ट्रपति को उपवास की समाप्ति पर क्या खाते देख कर लेखिका को हैरानी हुई?

उत्तर : राष्ट्रपति को उपवास की समाप्ति पर उबले आलू खाते देखकर लेखिका को हैरानी हुई।

2) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए:-

प्रश्न 1. राजेंद्र बाबू को देखकर हर किसी को यह क्यों लगता था कि उन्हें पहले कहीं देखा है?

उत्तर : राजेंद्र बाबू की आकृति और उनके शरीर का गठन एक सामान्य भारतीय की तरह था। उनकी वेशभूषा भी एक आम व्यक्ति के समान थी। उनका स्वभाव तथा रहन-सहन भी एक सामान्य भारतीय या भारतीय किसान के समान था। इसलिए उन्हें जो भी देखता था उसे ऐसा ही लगता था कि उन्हें पहले कहीं देखा है।

प्रश्न 2. पंडित जवाहरलाल नेहरू की अस्त-व्यस्तता तथा राजेंद्र बाबू की सारी व्यवस्था किसका पर्याय थी?

उत्तर : पंडित जवाहरलाल नेहरु जी की अस्त-व्यस्तता भी व्यवस्था से निर्मित होती थी किंतु राजेंद्र बाबू की सारी व्यवस्था ही अस्त-व्यस्तता से परिपूर्ण थी। **अर्थात्** जवाहरलाल नेहरू जी का सारा कार्य अस्त-व्यस्त होने पर भी व्यवस्थित दिखाई देता था और राजेंद्र बाबू का सारा काम व्यवस्थित होता था, ठीक होता था परंतु देखने में अस्त-व्यस्त दिखाई देता था और जब भी कोई उनकी अस्त-व्यस्तता देख लेता था तो वे एक बालक की भांति सकुचा जाते थे।

प्रश्न 3. राजेंद्र बाबू की वेशभूषा के साथ उनके निजी सचिव और सहचर चक्रधर बाबू का स्मरण लेखिका को क्यों हो आया ?

उत्तर : राजेंद्र बाबू की वेशभूषा के साथ उनके निजी सचिव और सहचर चक्रधर बाबू का स्मरण लेखिका को इसलिए हो आया क्योंकि चक्रधर बाबू भी तब तक अपने मोज़े तथा जूते नहीं बदलते थे जब तक मोजों से पाँचों उंगलियाँ बाहर नहीं निकलने लगतीं थीं। जूतों के तलवों में सुराख नहीं हो जाते थे। वे अपने वस्त्र भी जीर्ण-शीर्ण हो जाने तक नहीं बदलते थे। वे राजेंद्र बाबू के पुराने वस्त्रों को पहनकर वर्षों उनकी सेवा करते रहे ।

प्रश्न 4. लेखिका ने राजेंद्र बाबू की पत्नी को सच्चे अर्थों में धरती की पुत्री क्यों कहा है ?

उत्तर : राजेंद्र बाबू की पत्नी बहुत ही सरल, क्षमामयी तथा त्याग-भावना वाली स्त्री थीं । बिहार के ज़मींदार परिवार की बहू और भारत के प्रथम राष्ट्रपति की पत्नी होने पर भी उन्हें कोई अहंकार नहीं था। वे सभी का ध्यान रखती थीं। वे बहुत ही विनम्र स्वभाव की थीं। इसीलिए लेखिका ने उन्हें सच्चे अर्थों में धरती की पुत्री कहा है।

प्रश्न 5. राजेंद्र बाबू की पोतियों का छात्रावास में रहन-सहन कैसा था ?
उत्तर : राजेंद्र बाबू की पोतियाँ अन्य सामान्य बालिकाओं के समान छात्रावास में बहुत ही सादगी और संयम से रहती थीं। खादी के कपड़े पहनती थीं और स्वयं ही उन्हें धोती थीं। उनके साबुन, तेल आदि का खर्च भी सीमित था। कमरे की सफाई और झाड़-पोंछ भी वे स्वयं करती थीं। गुरुजनों की सेवा भी करती थीं।
प्रश्न 6. राष्ट्रपति भवन में रहते हुए भी राजेंद्र बाबू और उनकी पत्नी में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ - उदाहरण देकर स्पष्ट करें।
उत्तर : यह बात बिल्कुल ठीक है कि राष्ट्रपति भवन में रहते हुए भी राजेंद्र बाबू और उनकी पत्नी में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ , उदाहरण के तौर पर अपनी पोतियों के संबंध में उन्होंने लेखिका से कहा था कि उनकी पोतियाँ अब तक जैसे रहती आई हैं अब भी वैसे ही रहेंगी। उनकी पत्नी पहले की तरह ही स्वयं भोजन बनाकर पति, परिवार और परिजनों को खिलाने के बाद ही स्वयं अन्न ग्रहण करती थीं। उपवास की समाप्ति पर भी वे फल व मिठाइयों आदि के स्थान पर उबले हुए आलू खाते थे।
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 6-7 पंक्तियों में दीजिए :
प्रश्न 1. राजेंद्र बाबू की शारीरिक बनावट, वेशभूषा और स्वभाव का वर्णन करें।
उत्तर : राजेंद्र बाबू के बाल काले, घने और छोटे थे। उनका चौड़ा मुख, चौड़ा माथा, बड़ी-बड़ी आँखें, कुछ भारी नाक, गोलाई लिए चौड़ी ठुड्डी और सुडौल होंठ थे। उनका रंग गेहुँआ था। ग्रामीणों के जैसी बड़ी बड़ी मूँछें थीं। उनके हाथ, पैर और शरीर में लंबाई की विशेषता थी। वे खादी की मोटी धोती-कुर्ता, काला बंद गले का कोट, गाँधी टोपी, साधारण मोज़े और जूते पहनते थे। उनका स्वभाव बहुत ही शांत था। वे सदा सादगी पसंद करते थे। उनका खान-पान भी साधारण था। वे अपने स्वभाव और रहन-सहन में एक भारतीय किसान के समान थे।
प्रश्न 2. पाठ के आधार पर राजेंद्र बाबू की पत्नी की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन करें।
उत्तर : राजेंद्र बाबू की पत्नी एक सच्ची भारतीय नारी थी। वे धरती के समान सहनशील, क्षमामयी, त्याग भावना वाली व ममतामयी थीं। उनका विवाह बचपन में ही हो गया था। घंटों सिर नीचा करके बैठने के कारण उनकी रीढ़ की हड्डी इतनी झुक गई थी कि वे सीधी खड़ी नहीं हो पाती थीं। बिहार के जमींदार परिवार की बहू और भारत के प्रथम राष्ट्रपति की पत्नी होने का उन्हें कोई अहंकार नहीं था। वे राष्ट्रपति भवन में भी स्वयं भोजन बनाती थीं तथा पति, परिवार व परिजनों को खिलाकर ही स्वयं अन्न ग्रहण करती थीं। छात्रावास में अपनी पोतियों से मिलने जाने पर वह अपनी पोतियों के अतिरिक्त सभी में मिठाई बराबर बाँट देती थीं। गंगा स्नान के समय भी खूब दान करती थीं। वे सच्चे अर्थों में धरती की पुत्री थीं।
आशय स्पष्ट कीजिए :
(क) सत्य में जैसे कुछ घटाना या जोड़ना संभव नहीं रहता वैसे ही सच्चे व्यक्तित्व में कुछ भी जोड़ना-घटाना संभव नहीं है।
उत्तर :- प्रस्तुत कथन लेखिका महादेवी वर्मा ने राजेंद्र बाबू के संबंध में कहा है। उनके अनुसार जिस प्रकार सच में कुछ भी जोड़ा या घटाया नहीं जा सकता क्योंकि सच अपने आप में पूरा होता है, ठीक उसी प्रकार राजेंद्र बाबू जैसे सच्चे व्यक्तित्व वाले व्यक्ति में भी कुछ कम या अधिक नहीं किया जा सकता, न ही उसकी आवश्यकता होती है क्योंकि सच्चा व्यक्तित्व अपने आप में पवित्र और पूरा होता है।
(ख) क्या वह सांचा टूट गया जिसमें ऐसे कठिन कोमल चरित्र ढलते थे ।
उत्तर :- लेखिका महादेवी वर्मा ने यह कथन राजेंद्र बाबू जैसे सच्चे चरित्र वाले व्यक्ति को अपने समक्ष रखते हुए कहा है और उन्होंने राजेंद्र बाबू की तुलना आज के नेताओं से करते हुए चिंता भी व्यक्त की है। लेखिका प्रश्न करते हुए कहती हैं कि क्या ईश्वर के पास से वह सांचा टूट गया है जिसमें ढालकर भगवान ने डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद जैसे उच्च व पवित्र व्यक्तित्व वाले चरित्र का निर्माण किया था क्योंकि आजकल के नेताओं में राजेंद्र बाबू जैसी मधुरता, निश्चलता, सरलता और सौम्यता कहीं भी दिखाई नहीं देती ।

पाठ - 15 सदाचार का तावीज़ (निबंध)
हरिशंकर परसाई (लेखक)
विषय बोध

1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए :
प्रश्न 1. राजा ने राज्य में किस चीज़ के फैलने की बात दरबारियों से पूछी?
उत्तर :- राजा ने राज्य में भ्रष्टाचार फैलने की बात दरबारियों से पूछी।
प्रश्न 2. राजा ने भ्रष्टाचार ढूँढने का काम किसे सौंपा ?
उत्तर :- राजा ने भ्रष्टाचार ढूँढने का काम विशेषज्ञों को सौंपा।
प्रश्न 3. एक दिन दरबारियों ने राजा के सामने किसे पेश किया?
उत्तर :- एक दिन दरबारियों ने राजा के सामने एक साधु को पेश किया।
प्रश्न 4. साधु ने राजा को कौन-सी वस्तु दिखायी?
उत्तर :- साधु ने राजा को एक तावीज़ दिखाया।
प्रश्न 5. साधु ने तावीज़ का प्रयोग किस पर किया?
उत्तर :- साधु ने तावीज़ का प्रयोग एक कुत्ते पर किया।
प्रश्न 6. तावीज़ों को बनाने का ठेका किसे दिया गया?
उत्तर :- तावीज़ों को बनाने का ठेका साधु बाबा को दिया गया।
प्रश्न 7. राजा वेश बदलकर पहली बार कार्यालय कब गए थे?
उत्तर :- राजा वेश बदलकर पहली बार 2 तारीख को कार्यालय गए थे।
प्रश्न 8. साधु को तावीज़ बनाने के लिए कितनी पेशगी दी गई ?
उत्तर :- साधु को तावीज़ बनाने के लिए 5 करोड़ रुपए की पेशगी दी गई।
2) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए :
प्रश्न 1. दरबारियों ने भ्रष्टाचार न दिखने का क्या कारण बताया ?
उत्तर :- दरबारियों ने भ्रष्टाचार न दिखाई देने का कारण बताते हुए कहा कि वह बहुत बारीक होता है और उनकी आँखों को तो महाराज की विराटता देखने की आदत हो गई है। इसलिए उन्हें बारीक चीज़ नहीं दिखती। यदि उन्हें भ्रष्टाचार दिखा भी तो उसमें उन्हें महाराज की ही छवि दिखेगी क्योंकि उनकी आँखों में तो केवल महाराज की ही सूरत बसी हुई है। अतः ऐसी स्थिति में उनके लिए किसी और वस्तु को देख पाना संभव नहीं है।
प्रश्न 2. राजा ने भ्रष्टाचार की तुलना ईश्वर से क्यों की?

उत्तर :- जब विशेषज्ञों ने राजा को भ्रष्टाचार के बारे में बताते हुए कहा कि वह हाथ की पकड़ में नहीं आता।वह स्थूल नहीं सूक्ष्म है, अगोचर है पर सर्वत्र व्याप्त है, उसे देखा नहीं जा सकता, केवल अनुभव किया जा सकता है | तब उनकी बातें सुनकर राजा सोच में पड़ गए और बोले कि **ये** सभी गुण तो ईश्वर में होते हैं। तब इन सभी गुणों के बारे में सुनकर उन्होंने भ्रष्टाचार की तुलना ईश्वर से की।

प्रश्न 3. राजा का स्वास्थ्य क्यों बिगड़ता जा रहा था?

उत्तर :- राजा अपने राज्य में फैले भ्रष्टाचार से बहुत परेशान थे। विशेषज्ञों ने भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए एक बहुत बड़ी योजना तैयार कर के राजा के आगे रख दी थी। जिस को लागू करना बहुत मुश्किल था। सारी व्यवस्था उलट-पुलट हो जानी थी। जिससे और नई-नई कठिनाइयां पैदा हो सकती थीं। इसलिए भ्रष्टाचार का कोई हल न दिखाई देने के कारण राजा चिंतित रहने लगे और राजा का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा।

प्रश्न 4. साधु ने सदाचार और भ्रष्टाचार के बारे में क्या कहा ?

उत्तर :- साधु ने सदाचार और भ्रष्टाचार के बारे में बताते हुए कहा कि ये दोनों मनुष्य की आत्मा में ही होते हैं। जब ईश्वर मनुष्य को बनाता है तब किसी की आत्मा में ईमान की कल फिट कर देता है तो किसी की आत्मा में बेईमानी की। इस कल में से ईमान या बेईमानी के स्वर निकलते रहते हैं जिसे 'आत्मा की पुकार' कहते हैं। इसी आत्मा की पुकार के अनुसार आदमी काम करता है।

प्रश्न 5. साधु को तावीज़ बनाने के लिए कितनी पेशगी दी गई ?

उत्तर :- राजा को राज्य में से भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए लाखों नहीं करोड़ों तावीज़ चाहिए थे। इसलिए एक मंत्री के सुझाव पर उन्होंने साधु बाबा को ही तावीज़ बनाने का ठेका देने का निर्णय किया ताकि वे स्वयं ही अपनी मंडली से तावीज़ बनवा कर राज्य को सप्लाई कर दें। तब तावीज़ों को बनाने का कारखाना खोलने के लिए उन्हें 5 करोड़ रुपए पेशगी दी गई।

प्रश्न 6. तावीज़ किस लिए बनवाए गए थे ?

उत्तर :- राजा ने अपने राज्य में हर जगह फैले भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए तावीज़ बनवाए क्योंकि साधु बाबा के अनुसार जिस आदमी की भुजा पर यह तावीज़ बँधा होगा वह सदाचारी हो जाएगा। उसने एक कुत्ते पर इसका प्रयोग भी किया था। यह तावीज़ कुत्ते के गले में बाँधने पर कुत्ता भी रोटी नहीं चुराता था। इसलिए तावीज़ की यह विशेषताएँ सुनकर राजा ने साधु को करोड़ों तावीज़ बनाने के लिए कहा ताकि राज्य के प्रत्येक सरकारी कर्मचारी की भुजा पर इसे बाँधा जा सके और भ्रष्टाचार को रोका जा सके।

प्रश्न 7. महीने के आखिरी दिन तावीज़ में से कौन-से स्वर निकल रहे थे?

उत्तर :- महीने के आखिरी दिन जब राजा वेश बदलकर तावीज़ का प्रभाव देखने के लिए एक कर्मचारी के पास गए और उसे 5 रुपये का नोट दिखाया तो उस कर्मचारी ने नोट लेकर अपनी जेब में रख लिया। राजा ने तभी उसका हाथ पकड़ लिया और पूछा कि क्या तुम आज सदाचार का तावीज़ बाँधकर नहीं आए। कर्मचारी ने अपनी आस्तीन चढ़ाकर राजा को तावीज़ दिखा दिया। राजा असमंजस में पड़ गए। उन्होंने तावीज़ पर कान लगाकर सुना तो तावीज़ में से स्वर निकल रहे थे , "अरे ! आज इकतीस है। आज तो ले ले।"

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 6 या 7 पंक्तियों में दीजिए :

प्रश्न 1. विशेषज्ञों ने भ्रष्टाचार खत्म करने के क्या-क्या उपाय बताए ?

उत्तर :- विशेषज्ञों ने भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए एक योजना तैयार की जिसके अनुसार व्यवस्था में कई परिवर्तन करने और भ्रष्टाचार के मौके मिटाने को कहा। उन्होंने ठेका प्रथा को समाप्त करने के लिए कहा क्योंकि यदि ठेके हैं तो ठेकेदार हैं, ठेकेदार हैं तो अधिकारियों को घूस है, ठेका मिट जाए तो उनकी घूस भी मिट जाएगी। उन्होंने कहा कि हमें यह भी पता लगाना होगा कि आदमी किन कारणों से घूस लेता या देता है ताकि उन कारणों को ही समाप्त किया जा सके।

प्रश्न 2. साधु ने तावीज़ के क्या गुण बताए?

उत्तर :- साधु ने तावीज़ के गुण बताते हुए कहा कि उसने कई वर्षों के चिंतन के बाद इस तावीज़ को बनाया है। यह मंत्रों से सिद्ध है, जिस आदमी की भुजा पर बाँधा जाता है, वह सदाचार के रास्ते पर चल पड़ता है। साधु ने इस तावीज़ का प्रयोग एक कुत्ते पर भी किया था। यह तावीज़ गले में बाँध देने से कुत्ता भी रोटी नहीं चुराता क्योंकि इस तावीज़ में से सदाचार के स्वर निकलते हैं, जब किसी की आत्मा बेईमानी के स्वर निकालने लगती है तब इस तावीज़ की शक्ति आत्मा का गला घोंटती है और आदमी को तावीज़ से ईमान के स्वर सुनाई पड़ते हैं। वह इन स्वरों को आत्मा की पुकार समझकर सदाचार की ओर प्रेरित होता है और उसका आचरण शुद्ध और पवित्र हो जाता है।

प्रश्न 3. सदाचार का तावीज़' पाठ में छिपे व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- सदाचार का तावीज़' 'हरिशंकर परसाई' जी द्वारा रचित एक व्यंग्यात्मक रचना है जिसमें देशभर में फैले भ्रष्टाचार पर व्यंग्य कसा गया है। इसमें लेखक दिखाते हैं कि हम एक ऐसी व्यवस्था में रह रहे हैं जिसमें भ्रष्टाचार को दूर करने के उपायों में भी भ्रष्टाचार के अवसर ढूँढ़ लिए जाते हैं। केवल भाषणों, नैतिक स्लोगनों, पुलसिया कार्यवाही, वाद-विवाद आदि से भ्रष्टाचार को समाप्त नहीं किया जा सकता। भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अपना नैतिक स्तर दृढ़ करना होगा। अपने अंदर नैतिक मूल्यों, ईमानदारी, सच्चाई, मेहनत जैसे गुण विकसित करने होंगे। यदि सभी कर्मचारियों को उनकी आवश्यकता के अनुसार पर्याप्त वेतन दिया जाए तब कहीं जाकर भ्रष्टाचार की नकेल कसी जा सकती है। भ्रष्टाचार पर लगाम लगाना किसी एक व्यक्ति का काम नहीं बल्कि पूरे समाज की ज़िम्मेदारी है जिसे मिलकर ही निभाया जा सकता है।

पाठ – 16 ठेले पर हिमालय

लेखक - डॉ. धर्मवीर भारती

(क) विषय - बोध

1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए -

क) लेखक कौसानी क्यों गए थे?

उत्तर - हिमालय की बर्फ़ को बहुत निकट से देख पाने के लिए लेखक कौसानी गए थे।

ख) बस पर सवार लेखक ने साथ-साथ बहने वाली किस नदी का ज़िक्र किया है?

उत्तर - बस पर सवार लेखक ने साथ- साथ बहने वाली कोसी नदी का ज़िक्र किया है।

ग) कौसानी कहाँ बसा हुआ है?

उत्तर- सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उस पर, बिल्कुल शिखर पर कौसानी बसा हुआ है।

घ) लेखक और उनके मित्रों की निराशा और थकावट किस के दर्शन से छूमंतर हो गई?

उत्तर- लेखक और उनके मित्रों की निराशा और थकावट हिम दर्शन से छूमंतर हो गई।

ङ) लेखक और उनके मित्र कहाँ ठहरे थे?

उत्तर- लेखक और उनके मित्र डाक बंगले में ठहरे थे।

च) दूसरे दिन घाटी से उतरकर लेखक और उनके मित्र कहाँ पहुँचे?

उत्तर- दूसरे दिन घाटी से उतरकर लेखक और उनके मित्र बैजनाथ पहुँचे, जहाँ गोमती नदी बहती है।

छ) बैजनाथ में कौन-सी नदी बहती है?

उत्तर- बैजनाथ में गोमती नदी बहती है।

2) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए:-

1) लेखक को ऐसा क्यों लगा जैसे वे ठगे गए हैं?

उत्तर- कौसानी के अड्डे पर जाकर जब बस रुकी तो छोटा-सा, बिल्कुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ़ का कहीं नाम-निशान न देखकर लेखक को ऐसा लगा कि जैसे वे ठगे गए हैं।

2) सबसे पहले बर्फ़ दिखाई देने का वर्णन लेखक ने कैसे किया है?

उत्तर- लेखक को सबसे पहले बर्फ़ बादलों के टुकड़े जैसी लगी थी, जिसका अजब-सा रंग था - न सफ़ेद, न रूपहला और न ही हल्का नीला, पर तीनों का ही आभास देता हुआ रंग था। फिर अचानक लेखक के मन में विचार आया कि हिमालय की बर्फ़ को ही बादलों ने ढाँप रखा है। उसे ऐसा लगा कि जैसे कोई छोटा-सा बाल स्वभाव वाला शिखर बादलों की खिड़की से झाँक रहा है।

3) खानसामे ने सबको खुशकिस्मत क्यों कहा?

उत्तर- क्योंकि उनके आते ही उन्हें बर्फ़ दिखाई दे गई थी। उनसे पहले 14 टूरिस्ट वहाँ आए थे। वे हफ़्ते भर बर्फ़ का इंतज़ार करते रहे लेकिन उन्हें बर्फ़ नहीं दिखी थी। इसलिए खानसामे ने सब मित्रों को खुशकिस्मत कहा।

4) सूरज के डूबने पर सब गुमसुम क्यों हो गए थे?

उत्तर- सूरज के डूबने पर सब गुमसुम इसलिए हो गए थे क्योंकि जिस हिम दर्शन की आशा में वे काफ़ी समय से टकटकी लगाकर देख रहे थे, उनकी यह इच्छा मिट्टी में मिल गई थी।

5) लेखक ने बैजनाथ पहुँच कर हिमालय से किस रूप में भेंट की?

उत्तर- लेखक ने बैजनाथ पहुँच कर देखा कि वहाँ पर गोमती नदी बह रही थी। गोमती की उज्ज्वल जलराशि में हिमालय की बर्फ़ीली चोटियों की छाया तैर रही थी। लेखक ने इस जल में तैरते हुए हिमालय से जी भर कर भेंट की।

3) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए-

क) कोसी से कौसानी तक में लेखक को किन-किन दृश्यों ने आकर्षित किया?

उत्तर- 1) सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत।

2) सोमेश्वर की सुंदर घाटी

3) छोटे-छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दुकानें और कभी-कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी-नालों पर बने हुए पुल।

4) सोमेश्वर घाटी के उत्तर में ऊँची पर्वतमाला, जिसके शिखर पर बसा कौसानी।

5) पर्वतमाला के अंचल में पचासों मील चौड़ी कत्यूर की घाटी।

6) हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफ़ेद-सफ़ेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझ जाने वाली बेलों की लड़ियों-सी नदियाँ।

7) हरे खेत, नदियाँ और वन जो क्षितिज के धुँधलेपन में, नीले कोहरे में घुल रहे थे।

8) बादल के एक टुकड़े के हटते ही हिम दर्शन

9) पिघलते केसर जैसा ग्लेशियरों में डूबता सूर्य।

10) लाल कमल के फूलों जैसी बर्फ़।

कोसी से कौसानी तक इन सभी दृश्यों ने लेखक को आकर्षित किया।

ख) लेखक को ऐसा क्यों लगा कि वे किसी दूसरे ही लोक में चले आए हैं?

उत्तर- सोमेश्वर की घाटी से चलने पर उत्तर दिशा में जब लेखक को कौसानी दिखाई दिया तो उसने देखा कि सामने की घाटी में अपार सौंदर्य बिखरा हुआ था। पर्वतमाला ने अपने अंचल में कत्यूर की रंग-बिरंगी घाटी छिपा रखी थी। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफ़ेद-सफ़ेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझ जाने वाली बेलों की लड़ियों-सी नदियाँ। इन सभी दृश्यों को देखकर लेखक को ऐसा लगा कि वे किसी दूसरे ही लोक में चले आए हैं।

ग) लेखक को 'ठेले पर हिमालय' शीर्षक कैसे सूझा?

उत्तर- लेखक को इस शीर्षक को बिल्कुल भी ढूँढना नहीं पड़ा। यह शीर्षक उसके मन में बैठे-बिठाए तब आया, जब वह एक पान की दुकान पर अपने अल्मोड़ावासी मित्र के साथ खड़ा था कि तभी ठेले पर बर्फ़ की सिलें लादे हुए बर्फ़ वाला आया। ठंडी, चिकनी, चमकती बर्फ़ से भाप उड़ रही थी। वे क्षणभर उस बर्फ़ को देखते रहे, उठती हुई भाप में खोए रहे और खोए-खोए से ही बोले,"यही बर्फ़ तो हिमालय की शोभा है।" और तभी लेखक को 'ठेले पर हिमालय' शीर्षक सूझ गया।

पाठ - 17 श्री गुरु नानक देव जी

(डॉ. सुखविन्द्र कौर बाठ)

(क) विषय बोध

1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए-

1) गुरु नानक देव जी का जन्म कब और कहाँ हुआ?

उत्तर- गुरु नानक देव जी का जन्म कार्तिक पूर्णिमा को सन् 1469 ई. में ज़िला शेखूपुरा के तलवंडी (अब पाकिस्तान) गाँव में हुआ।

2) गुरु नानक देव जी के माता और पिता का क्या नाम था?

उत्तर- गुरु नानक देव जी के माता का नाम तृप्ता देवी और पिता का नाम मेहता कालू था।

3) गुरु नानक देव जी ने छोटी आयु में ही कौन-कौन सी भाषाओं का ज्ञान अर्जित कर लिया था?

उत्तर- गुरु नानक देव जी ने छोटी आयु में ही पंजाबी, फ़ारसी, हिंदी तथा संस्कृत भाषाओं का ज्ञान अर्जित कर लिया था।

4) गुरु नानक देव जी को किस व्यक्ति ने दुनियावी तौर पर जीविकोपार्जन संबंधी कार्यों में लगाने का प्रयास किया था?

उत्तर- गुरु नानक देव जी को उनके पिता मेहता कालू जी ने दुनियावी तौर पर जीविकोपार्जन संबंधी कार्यों में लगाने का प्रयास किया था।

5) गुरु नानक देव जी को दुनियादारी में बाँधने के लिए इनके पिता जी ने क्या किया?

उत्तर- गुरु नानक देव जी को दुनियादारी में बाँधने के लिए आपके पिता जी ने आपकी शादी देवी सुलखनी से कर दी।

6) गुरु नानक देव जी के कितनी सन्तानें थीं और उनके नाम क्या थे?

उत्तर- गुरु नानक देव जी के दो सन्तानें थीं। उनके नाम लखमी दास और श्री चंद थे।
7) इस्लामी देशों की यात्रा के दौरान आपने किस धर्म की शिक्षा दी?
उत्तर- इस्लामी देशों की यात्रा के दौरान आपने सांझे धर्म की शिक्षा दी।
8) 'श्री गुरु ग्रंथ' साहिब में गुरु नानक देव जी के कुल कितने पद और श्लोक हैं?
उत्तर- 'श्री गुरु ग्रंथ' साहिब में गुरु नानक देव जी के कुल 974 पद और श्लोक हैं।
9) श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मुख्य कितने राग हैं?
उत्तर- श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मुख्य 31 राग हैं।
10) गुरु नानक देव जी के जीवन के अन्तिम वर्ष कहाँ बीते?
उत्तर- गुरु नानक देव जी के जीवन के अन्तिम वर्ष करतारपुर में बीते, जो अब पाकिस्तान में है।
11) - गुरु नानक देव जी के जन्म के संबंध में भाई गुरदास जी ने कौन-सी तुक लिखी ?
उत्तर - भाई गुरदास जी ने लिखा था-

'सुनी पुकार दातार प्रभु,
गुरु नानक जग माहिं पठाया।'

12) - गुरु नानक देव जी पढ़ने के लिए किन-किन के पास गए थे?
उत्तर - सात वर्ष की आयु में गुरु नानक देव जी को पांडे के पास पढ़ने के लिए भेजा गया । मौलवी सैय्यद हुसैन और पंडित बृजनाथ ने भी उन्हें पढ़ाया । छोटी-सी आयु में ही इन्होंने पंजाबी, फ़ारसी, हिंदी, संस्कृत आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर लिया था।
2) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए-
1) - साधुओं की संगति में रहकर गुरु नानक देव जी ने कौन-कौन से ज्ञान प्राप्त किए?
उत्तर - साधुओं की संगति में रहकर गुरु नानक देव जी ने भारतीय धर्म और विभिन्न संप्रदायों का ज्ञान प्राप्त किया । भारतीय धर्म ग्रंथों और शास्त्रों का भी ज्ञान आपको साधुओं की संगति से मिला।
2) - गुरु नानक देव जी ने यात्राओं के दौरान कौन-कौन से महत्वपूर्ण शहरों की यात्रा की?
उत्तर - गुरु नानक देव जी ने यात्राओं के दौरान आसाम, लंका, ताशकंद, मक्का- मदीना आदि शहरों की यात्रा की। आपने हिमालय पर स्थित योगियों के केंद्रों की भी यात्रा की। आपने हिंदू, मुसलमान सब को सही मार्ग दिखाया ।
3) गुरु नानक देव जी ने तत्कालीन भारतीय जनता को किन बुराइयों से स्वतन्त्र कराने का प्रयास किया?
उत्तर- गुरु नानक देव जी ने तत्कालीन भारतीय जनता को धार्मिक आडंबरों तथा संकीर्णताओं से स्वतंत्र कराने का प्रयास किया। उन्होंने भारतीय जनता के सामने वास्तविक सत्य को प्रस्तुत कर दिया, जिससे संकीर्ण विचार और आडंबर अपने आप ही ढीले पड़ गए।
4) - गुरु नानक देव जी की रचनाओं के नाम लिखें?
उत्तर - गुरु नानक देव जी की रचनाएँ जपुजी साहिब, आसा दी वार, सिद्ध गोष्टि, पट्टी, दक्खनी ऊँकार, पहरे- तिथि, बारह माह, सुचज्जी-कुचज्जी, आरती आदि हैं।
3) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात वाक्यों में दीजिए-
1)- जिस समय गुरु नानक देव जी का जन्म हुआ, उस समय भारतीय समाज की क्या स्थिति थी ?
उत्तर - जिस समय गुरु नानक देव जी का जन्म हुआ था, उस समय भारतीय समाज में अनेक बुराइयाँ थीं। समाज अनेक जातियों, संप्रदायों और धर्मों में बंटा हुआ था । लोग रूढ़ियों में फँसे हुए थे। उनके विचार बहुत ही संकीर्ण थे । वे घृणा करने योग्य कार्यों में लगे रहते थे। धर्म के नाम पर दिखावे का बोलबाला था। आम जनता का बहुत शोषण होता था। दलितों पर बहुत अत्याचार होते थे।
2) गुरु नानक देव जी ने अपनी यात्राओं के दौरान कहाँ-कहाँ और किन-किन लोगों को क्या उपदेश दिए?
उत्तर- श्री गुरु नानक देव जी ने 1499 ई. से लेकर 1522 ई. के समय में पूर्व, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण दिशाओं में चार उदासियाँ (यात्राएँ) कीं। इन यात्राओं में आपने क्रमशः आसाम, मक्का मदीना, लंका तथा ताशकन्द तक की यात्राएँ कीं। इसी समय के दौरान ही आपने करतारपुर नगर बसाया। यात्राओं के दौरान ही आपने कई स्थानों पर उचित उपदेश द्वारा भटके हुए जनमानस को सुरुचिपूर्ण मार्ग दर्शाया। कश्मीर के पंडितों से विचार- विमर्श किया। हिमालय पर योगियों को सही धर्म सिखाया तथा योगी सिद्धों को जन-सेवा का उपदेश दिया। हिंदुस्तान में घूमते समय आपका अनेक पीरों-फ़कीरों, सूफ़ी-संतों के साथ भी तर्क-वितर्क हुआ। मौलवी व मुसलमानों को आपने सही रास्ता दिखाया। इस्लामी देशों में यात्राओं द्वारा आपने '**साँझे**' धर्म की शिक्षा दी। लगभग बाईस वर्ष आप घूम फिर कर धर्म का प्रचार करते रहे।

पाठ – 18 सूखी डाली (एकांकी)
उपेंद्रनाथ अश्क (रचनाकार)

(क) विषय बोध

1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए :
प्रश्न 1. दादा मूलराज के बड़े पुत्र की मृत्यु कैसे हुई ?
उत्तर : दादा मूलराज के बड़े पुत्र की मृत्यु 1914 के महायुद्ध में सरकार की ओर से लड़ते-लड़ते हुई।
प्रश्न 2. 'सूखी डाली' एकांकी में घर में काम करने वाली नौकरानी का क्या नाम था?
उत्तर: घर में काम करने वाली नौकरानी का नाम रजवा था।
प्रश्न 3. बेला का मायका किस शहर में था?
उत्तर : बेला का मायका लाहौर शहर में था।
प्रश्न 4. दादा जी की पोती इन्दु ने कहाँ **तक शिक्षा प्राप्त की थी?**
उत्तर : दादा जी की पोती इन्दु ने प्राइमरी स्कूल तक शिक्षा प्राप्त की थी।
प्रश्न 5. 'सूखी डाली' एकांकी में दादा जी ने अपने कुटुम्ब की तुलना किससे की है?
उत्तर : 'सूखी डाली' एकांकी में दादा जी ने अपने कुटुम्ब की तुलना वट के महान वृक्ष से की है।
प्रश्न 6. बेला ने अपने कमरे में से फर्नीचर बाहर क्यों निकाल दिया?
उत्तर : बेला ने अपने कमरे का फर्नीचर बाहर इसलिए निकाल दिया क्योंकि वह पुराना हो गया था और टूट-फूट भी गया था।
प्रश्न 7. दादा जी पुराने नौकरों के हक में क्यों थे?

उत्तर : दादा जी पुराने नौकरों के हक में इसलिए थे क्योंकि वे ईमानदार और विश्वसनीय होते हैं।

प्रश्न 8. बेला ने मिश्रानी को काम से क्यों हटा दिया?

उत्तर : बेला ने मिश्रानी को काम से इसलिए हटा दिया क्योंकि बेला के अनुसार उसे ढंग से काम करना नहीं आता था और उसे काम का सलीका भी नहीं था।

प्रश्न 9. एकांकी के अंत में बेला रुंधे कंठ से क्या कहती है?

उत्तर - एकांकी के अंत में बेला रुंधे कंठ से दादा जी को कहती है कि आप पेड़ से किसी डाली का टूट कर अलग होना पसंद नहीं करते, पर क्या आप यह चाहेंगे कि पेड़ से लगी-लगी वह डाल सूख **कर** मुरझा जाए।

2) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए :

प्रश्न 1. एकांकी के पहले दृश्य में इन्दु बिफरी हुई क्यों दिखाई देती है?

उत्तर : एकांकी के पहले दृश्य में इन्दु बिफरी हुई दिखाई देती है क्योंकि उसके अनुसार नई बहू अपने मायके और अपने सामने किसी को कुछ नहीं समझती। उसने आते ही मिश्रानी को काम से हटा दिया क्योंकि नई बहू के अनुसार मिश्रानी को काम करना नहीं आता। इंदु ने जब उसे समझाया कि वह काम करना सीख जाएगी और हमें नौकरों से काम लेने की भी तमीज़ होनी चाहिए तो उसने इंदु को कह दिया कि वह तमीज़ तो केवल आप लोगों में ही है। इस प्रकार नई बहू से कहा-सुनी होने के कारण इंदु बिफरी हुई दिखाई देती है।

प्रश्न 2. दादा जी कर्मचंद की किस बात से चिंतित हो उठते हैं?

उत्तर : दादा जी कर्मचंद से परेश के घर से अलग होने की बात सुनकर चिंतित हो उठते हैं क्योंकि उनके अनुसार उनका परिवार बरगद के पेड़ के समान है। अगर एक बार पेड़ से कोई डाली टूट जाती है तो उसे कितना ही पानी क्यों न दिया जाए उसमें सरसता कभी नहीं आती और वे कभी नहीं चाहते कि उनके परिवार रूपी पेड़ से कोई भी डाली टूट कर अलग हो जाए या उनका परिवार किसी भी कीमत पर टूट जाए।

प्रश्न 3. कर्मचंद ने दादा जी को छोटी बहू बेला के विषय में क्या बताया?

उत्तर : कर्मचंद ने दादा जी को छोटी बहू बेला के विषय में बताते हुए कहा कि उनका विचार है कि छोटी बहू में दर्प की मात्रा ज़रूरत से कुछ ज़्यादा है। उन्होंने जो मलमल के थान और रज़ाई के अबरे ला कर दिए थे, वह सब ने रख लिए परंतु छोटी बहू को पसंद नहीं आए। शायद छोटी बहू अपने मायके के घराने को इस घराने से बड़ा समझती है और इस घर को घृणा की दृष्टि से देखती है।

प्रश्न 4. परेश ने दादा जी के पास जाकर अपनी पत्नी बेला के सम्बन्ध में क्या बताया?

उत्तर: परेश ने दादा जी के पास जाकर अपनी पत्नी बेला के सम्बन्ध में बताया कि बेला को कोई भी पसंद नहीं करता। सब उसकी निंदा करते हैं। परेश दादा जी से कहता है कि बेला के अनुसार सब उसका अपमान करते हैं, हँसी उड़ाते हैं और समय नष्ट करते हैं। वह ऐसा महसूस करती है जैसे कि परायों में आ गई हो। उसे यहाँ पर कोई भी अपना दिखाई नहीं देता।

प्रश्न 5. जब परेश ने दादा जी से कहा कि बेला अपनी गृहस्थी अलग बसाना चाहती है तो दादा जी ने परेश को क्या समझाया?

उत्तर : जब परेश ने दादा जी से कहा कि बेला अपनी अलग गृहस्थी बसाना चाहती है तो दादा जी ने कहा कि उनके जीते जी यह संभव नहीं है। उन्होंने सदा इस परिवार को एक महान वट वृक्ष के रूप में देखा है जिसे वह टूटते हुए नहीं देख सकते। उन्होंने परेश को यह विश्वास दिलाया कि वे घर में सभी को समझा देंगे। कोई भी बेला का अपमान नहीं करेगा, उसका समय नष्ट नहीं करेगा। उसे वही आदर सत्कार यहाँ पर भी मिलेगा जो उसे अपने घर में प्राप्त था। वह अपने आप को परायों में घिरा महसूस नहीं करेगी।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 6 या 7 पंक्तियों में दीजिए :

प्रश्न 1. इंदु को बेला की कौन-सी बात सबसे अधिक परेशान करती है? क्यों?

उत्तर : इंदु बेला की ननद है। बेला के घर में आने से पहले वह सबसे अधिक पढ़ी-लिखी समझी जाती थी। घर में उसकी खूब चलती थी। परंतु बेला उससे अधिक पढ़ी लिखी है और वह हर बात में अपने मायके की बात करती है। बेला ने घर में आते ही मिश्रानी को यह कह कर काम से हटा दिया कि उसे काम करना नहीं आता। इंदु जब उसे कहती है कि हमें नौकरों से भी काम लेने की तमीज़ होनी चाहिए तो बेला उसे यह कह देती है कि वह ढंग उसे नहीं आता । उसके मायके में तो ऐसे नौकर घड़ी भर भी नहीं टिकते। इस प्रकार बेला का बात-बात में अपने मायके की बात करना और हर बात में अपने मायके के घराने को अच्छा बताना और इस घर को घृणा की दृष्टि से देखना इंदु को सबसे अधिक परेशान करता है।

प्रश्न 2. दादा जी छोटी बहू के अलावा घर के सभी सदस्यों को बुलाकर क्या समझाते हैं?

उत्तर : दादा जी छोटी बहू के अलावा घर के सभी सदस्यों को बुलाकर समझाते हैं कि वह बड़े घर की पढ़ी-लिखी लड़की है। यदि उसका यहाँ पर मन नहीं लगा तो उसमें दोष उसका नहीं हमारा है। कोई भी व्यक्ति उम्र या दर्जे से बड़ा नहीं होता, बुद्धि से बड़ा होता है। छोटी बहू उम्र में न सही परंतु बुद्धि में हम सबसे बड़ी है। इसलिए हमें उसकी बुद्धि का लाभ उठाना चाहिए। उसे वही आदर सत्कार देना चाहिए जो उसे अपने घर में प्राप्त था। सभी उसका कहना मानें, उस से परामर्श लें और उसके काम को आपस में बाँट लें। उसे पढ़ने-लिखने का अधिक अवसर दें ताकि उसे यह अनुभव न हो कि वह किसी दूसरे घर में आ गई है। साथ ही दादा जी यह चेतावनी भी देते हैं कि यदि किसी ने छोटी बहू का निरादर किया तो उसका नाता दादा जी से हमेशा के लिए टूट जाएगा।

प्रश्न 3. एकांकी के अंतिम भाग में घर के सदस्यों के बदले हुए व्यवहार से बेला परेशान क्यों हो जाती है?

उत्तर : एकांकी के अंतिम भाग में घर के सदस्यों के बदले हुए व्यवहार से बेला परेशान हो जाती है क्योंकि उसे उनका ऐसा व्यवहार बहुत ही ज्यादा औपचारिक प्रतीत होता है। सब उसको आदर देने लगते हैं। उसकी सलाह माँगने लगते हैं। उसको देख कर सब चुप हो जाते हैं। उसे कोई काम नहीं करने देते। उसे इतना अधिक आदर सत्कार और आराम भी अच्छा नहीं लगता उसे ऐसा महसूस होता है जैसे कि सभी उसके साथ जानबूझ कर ऐसा व्यवहार कर रहे हों।

प्रश्न 4. मँझली **बहू के चरित्र की कौन-सी विशेषता इस एकांकी में सबसे अधिक दृष्टिगोचर होती है?**

उत्तर : इस एकांकी में मँझली बहू हँसी ठिठोली करने वाली हँसमुख स्वभाव की स्त्री के रूप में दृष्टिगोचर होती है। वह सारा दिन छोटी-छोटी बातों पर हँसती मुस्कुराती रहती है। किसी के विचित्र व्यवहार पर हँसना और ठहाके लगाना उसके लिए सामान्य-सी बात है। परेश और बेला में हुई बहस को सुनकर वह इतना हँसती है कि बेकाबू हो जाती है। उसकी हँसी बेला को और भी खिझा देती है। इसीलिए दादा जी उसे विशेष रूप से यह समझाते हैं कि उसे अपनी हँसी उन लोगों तक ही सीमित रखनी चाहिए जो उसे सहन कर सकते हैं। घर के लोगों को तब तक हँसी का निशाना नहीं बनाना चाहिए जब तक वे पूर्णतया घर का अंग न बन जाएं।

प्रश्न 5. 'सूखी डाली' एकांकी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर : 'सूखी डाली' एकांकी 'उपेंद्रनाथ अश्क' जी द्वारा रचित एक शिक्षाप्रद पारिवारिक एकांकी है। जिसमें अश्क जी ने एकांकी के विभिन्न पात्रों के माध्यम से संयुक्त परिवारों की एक झाँकी प्रस्तुत करते हुए हमें यह शिक्षा देने का प्रयत्न किया है कि हमें परिवार में अपने **बुज़ुर्ग**, माता-पिता आदि का आदर करना चाहिए। उनके प्रति श्रद्धा भाव रखना चाहिए। उनके सुझावों को खुशी से मानना चाहिए। कोई भी व्यक्ति उम्र से छोटा या बड़ा नहीं होता बल्कि बुद्धि व ज्ञान से होता है। छोटा हो या बड़ा सभी के गुणों का सम्मान करना चाहिए। स्वयं को सुशिक्षित या सुसंस्कृत मानकर घमंड में चूर नहीं रहना चाहिए अन्यथा घमंड में रहने वाला व्यक्ति परिवार के साथ रहते हुए भी सूखी डाली के समान जड़ बन कर रह जाता है। इस एकांकी में दादा जी के माध्यम से यह भी शिक्षा दी

गई है कि नए और पुराने की टक्कर तथा घर में होने वाले संघर्ष को भी सूझबूझ से दूर किया जा सकता है। इस प्रकार लेखक ने घर के सभी सदस्यों को मिलजुल कर रहने की शिक्षा दी है।

पाठ -19 देश के दुश्मन
लेखक :- (जयनाथ नलिन)
(क) विषय बोध

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक - दो पंक्तियों में दीजिए -

प्रश्न 1. सुमित्रा के पुत्र का नाम बताइए ।
उत्तर -सुमित्रा के पुत्र का नाम जयदेव है ।
प्रश्न 2. वाघा बॉर्डर पर सरकारी अफ़सरों **के मारे जाने की ख़बर सुमित्रा कहाँ सुनती है ?**
उत्तर– वाघा बॉर्डर पर सरकारी अफ़सरों के मारे जाने की ख़बर सुमित्रा माधोराम के घर रेडियो पर सुनती है ।
प्रश्न 3. जयदेव वाघा बॉर्डर पर किस पद पर नियुक्त था ?
उत्तर- जयदेव वाघा बॉर्डर पर डी०एस०पी० के पद पर नियुक्त था ।
प्रश्न 4. जयदेव की पत्नी कौन थी ?
उत्तर- जयदेव की पत्नी नीलम थी ।
प्रश्न 5. वाघा बॉर्डर पर मारे जाने वाले दो सरकारी अफ़सरों **कौन थे ?**
उत्तर- एक हैड कॉन्सटेबल तथा दूसरा सब इंस्पेक्टर था ।
प्रश्न 6. जयदेव ने तस्करों को मार कर उनसे कितने लाख का सोना छीना ?
उत्तर- जयदेव ने तस्करों को मारकर उनसे पाँच लाख रुपए का सोना छीना ।
प्रश्न 7. जयदेव को स्वागत - सभा में कितने रुपए इनाम में देने के लिए सोचा गया ?
उत्तर- जयदेव को स्वागत - सभा में दस हज़ार रुपए इनाम में देने के लिए सोचा गया ।
प्रश्न 8. मीना कौन थी ?
उत्तर- मीना जयदेव की बहन थी ।
प्रश्न 9. नीलम क्यों चाहती थी कि डी.सी. दोपहर के बाद जयदेव को मिलने आए ?
उत्तर : - जयदेव अभी - अभी घर आए थे और बहुत थके हुए थे । इसी कारण नीलम चाहती थी कि डी.सी. दोपहर के बाद जयदेव को मिलने आए।
प्रश्न 10 - डी.सी.आकर सुमित्रा को क्या ख़ुशख़बरी देते हैं ?
उत्तर : - डी. सी. आकर सुमित्रा को ख़ुशख़बरी देते हैं कि जयदेव की वीरता और साहस के लिए उन्हें सम्मानित किया जाएगा और गवर्नर साहब की ओर से दस हज़ार रुपए का इनाम भी सभा में घोषित किया जाएगा ।
प्रश्न 11. जयदेव इनाम में मिलने वाली राशि के विषय में क्या घोषणा करवाना चाहता है ?
उत्तर- जयदेव इनाम में मिलने वाली राशि के विषय में यह घोषणा करवाना चाहता है कि इनाम राशि के आधे-आधे पैसे दोनों मृत पुलिस अफ़सरों की विधवा पत्नियों में बांट दिए जाएँ ।

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन- चार पंक्तियों में दीजिए :-

प्रश्न .1 सुमित्रा क्यों कहती है कि अब उसका हृदय इतना दुर्बल हो चुका है कि ज़रा-सी आशंका से काँप उठता है ?
उत्तर- सुमित्रा ऐसा इसलिए कहती है क्योंकि उसने अपने पति के बलिदान को तो हृदय पर पत्थर रखकर सहन कर लिया था । अब उसकी हिम्मत टूट चुकी है , देह जर्जर हो चुकी है और जयदेव ही उसका एकमात्र सहारा है । अगर उसे भी कुछ हो गया तो वह जी न सकेगी ।
प्रश्न 2 नीलम जयदेव से मान भरी मुद्रा में क्या कहती है ?
उत्तर : - नीलम जयदेव से मान भरी मुद्रा में कहती है – "अब बताइये , इतने दिन कहाँ लगाये ? यहाँ तो राह देखते - देखते आँखें पथरा गई , वहाँ जनाब को परवाह तक नहीं कि किसी के दिल पर क्या बीत रही है ।"
प्रश्न . 3 जयदेव को गुप्तचरों से क्या समाचार मिला ?
उत्तर : - जयदेव को गुप्तचरों से यह समाचार मिला कि रात के अंधेरे में पुलिस पिकिट से एक डेढ़ मील दक्षिण की तर**फ़** से कुछ लोग **बॉर्डर** पार करने वाले हैं । ऐसा शक है कि वे सोना स्मगल करके ला रहे हैं ।
प्रश्न 4 - जयदेव ने अपनी छुट्टी कैंसिल क्यों करा दी थी ?
उत्तर : - जयदेव को छुट्टी आने से दो - तीन घंटे पहले ही गुप्तचरों से यह सूचना मिली कि रात के अंधेरे में पुलिस पिकिट से एक डेढ़ मील दक्षिण की तरफ से कुछ लोग सोना स्मगल कर बॉर्डर पार करने वाले हैं। जयदेव इस अवसर को हाथ से जाने नहीं देना चाहता था , इसी कारण उसने अपनी छुट्टी कैंसिल करा दी।
प्रश्न 5- एकांकी में डी.सी.के किस संवाद से पता चलता है कि डी.सी. और जयदेव में घनिष्ठता थी ?
उत्तर : - जब डी. सी.जयदेव से मिलने उनके घर आते हैं , तब जयदेव उन्हें सर कहकर बुलाता है , तभी डी.सी. कहते हैं " सर बैठा होगा ऑफिस की कुर्सी में। खबरदार जो यहाँ सर वर कहा । मैं वही तुम्हारा बचपन का दोस्त और क्लासमेट हूँ , जिससे बिना हाथापाई किए तुम्हें रोटी हज़म नहीं होती थी । "

III निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छः- सात पंक्तियों में दीजिए :-

प्रश्न 1 : - चाचा अपने बेटे बलुआ के विषय में क्या बताते हैं ?
उत्तर - चाचा अपने बेटे बलुआ के विषय में बताते हैं कि वह भी बहुत लापरवाह है । वह भी दो- दो महीने में , यहाँ से 4-5 चिट्ठी जाने के बाद ही एक आध पत्र लिखता है और उल्टे हमें ही शिक्षा देता है कि आप तो यूँ ही दो - चार दिनों में घबरा जाते हैं । काम बहुत रहता है , समय ही नहीं मिलता और आजकल तो ड्यूटी बड़ी कड़ी है । दम मारने को टाइम नहीं ।
प्रश्न 2 : चाचा सुमित्रा को अख़बार में आई कौन सी खबर सुनाते हैं ?
उत्तर : - चाचा सुमित्रा को अ**ख़**बार में आई **ख़**बर पढ़कर सुनाते हैं कि जयदेव की वीरता और सूझबूझ की खूब प्रशंसा हुई है । जयदेव ने तस्करों से किस बहादुरी और चतुराई से मोर्चा लिया , किस तरह उनको मार भगाया और किस तरह उनके चार आदमियों को गोलियों का निशाना बनाया तथा पाँच लाख का सोना उनसे छीन लिया ।
प्रश्न 3 : जयदेव ने तस्करों को कैसे पकड़ा ?
उत्तर : - जब जयदेव को गुप्तचरों से सोना स्मगल होने की **ख़**बर मिली तो उसने मौका हाथ से नहीं निकलने दिया और अपनी छुट्टी कैंसिल करवा ली । जयदेव ने इन बदमाशों को पकड़ने का पक्का इरादा किया । आधी रात के बाद जब तस्कर उनकी चौकी से दो मील दूर एक **ख़**तरनाक घने ढाक के ऊबड़ खाबड़

रास्ते से बॉर्डर पार करने लगे तभी जयदेव और उसके साथियों ने उन्हें चैलेंज किया , जिसके बदले उन लोगों ने गोलियाँ चला दी । जयदेव ने उनकी चुनौती को स्वीकार कर अपनी दो तीन जीपों से उनका पीछा किया और अपने अचूक निशाने से उनकी जीप का पहिया उड़ा दिया । जिससे जीप लुढ़ककर एक खड्डे में जा गिरी । जयदेव और उसके अफ़सरों ने स्मगलरों की घेराबंदी की और उन्हें पकड़ लिया ।

1) निम्नलिखित में संधि-विच्छेद/संधि कीजिए :

संधि	संधि-विच्छेद	संधि-विच्छेद	संधि
• चरणामृत	चरण+अमृत	• प्रति + एक	प्रत्येक
• पुस्तकालय	पुस्तक+आलय	• गज + आनन	गजानन
• मुनीश	मुनि+ईश	• सु + अच्छ	स्वच्छ
• लघूत्तर	लघु+उत्तर	• वन + ओषधि	वनौषधि
• दशमेश	दशम+ईश	• यदि + अपि	यद्यपि
• यथेष्ट	यथा+इष्ट	• शिष्ट + आचार	शिष्टाचार
• लोकोक्ति	लोक+उक्ति	• गुरु + आगमन	गुर्वागमन
• पर्यावरण	परि+आवरण	• सूर्य + उदय	सूर्योदय
• उपर्युक्त	उपरि+उक्त	• अति + अंत	अत्यंत
• इत्यादि	इति+आदि	• मत + एक्य	मतैक्य

2) निम्नलिखित पदों में समास / समास विग्रह कीजिए : -

विग्रह	समास	समास	विग्रह
• मन से गढ़ंत	मनगढ़ंत	बाढ़-पीड़ित	बाढ़ से पीडित
• जेब के लिए खर्च	जेबखर्च	युद्ध-अभ्यास	युद्ध के लिए अभ्यास
• धर्म से भ्रष्ट	धर्मभ्रष्ट	भुखमरा	भूख से मरा
• कर्तव्य में निष्ठा	कर्तव्यनिष्ठा	जन्मरोगी	जन्म से रोगी
• देश के लिए प्रेम	देशप्रेम	भारतरत्न	भारत का रत्न
• लाखों का पति	लखपति	राजकुमारी	राजा की कुमारी
• आराम के लिए कुर्सी	आरामकुर्सी	आँखों-देखी	आँखों से देखी
• सबको प्रिय	सर्वप्रिय	मृत्यु-दंड	मृत्यु का दंड
• परीक्षा के लिए केन्द्र	परीक्षाकेन्द्र	नगरवास	नगर में वास
• पाप से मुक्त	पापमुक्त	पैदलपथ	पैदल चलने के लिए पथ

3) निम्नलिखित शब्दों की भाववाचक संज्ञा बनाइए :-

शब्द	भाववाचक संज्ञा	शब्द	भाववाचक संज्ञा
• मित्र	मित्रता	• चिकित्सक	चिकित्सा
• ठग	ठगी	• पराया	परायापन
• युवक	यौवन	• भक्त	भक्ति
• नारी	नारीत्व	• ईमानदार	ईमानदारी
• आलसी	आलस्य	• कमाना	कमाई
• संतुष्ट	संतुष्टि	• पूजना	पूजा
• राष्ट्रीय	राष्ट्रीयता	• समीप	समीपता
• लिखना	लिखावट	• सुंदर	सुंदरता
• बच्चा	बचपन	• बंधु	बंधुत्व

4) निम्नलिखित शब्दों के विशेषण बनाइए :-

शब्द	विशेषण	शब्द	विशेषण
• सप्ताह	साप्ताहिक	• बिकना	बिकाऊ
• पंजाब	पंजाबी	• प्रदेश	प्रादेशिक
• साहित्य	साहित्यिक	• काँटा	कँटीला
• टिकना	टिकाऊ	• राष्ट्र	राष्ट्रीय
• निंदा	निंदनीय	• सेना	सेनापरिच्छद
• सुख	सुखी	• पराक्रम	पराक्रमी
• पत्थर	पत्थरीला	• अध्यात्म	आध्यात्मिक
• रोग	रोगी	• लालच	लालची
• प्रमाण	प्रामाणिक	• रंग	रंगीला
• पुस्तक	पुस्तकीय	• सम्मान	सम्माननीय
• बुद्धि	बुद्धिमान	• शरीर	शारीरिक
• ज्ञान	ज्ञानी	• प्यास	प्यासा
• आधार	आधारिक	• कुदरत	कुदरती
• विधान	वैधानिक	• आदर	आदरणीय
• खाना	खानाबदोश	• तैरना	तैराक

5) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :-

शब्द	पर्यायवाची शब्द
• अंधेरा	तमस, तम
• अहंकार	घमंड, मद

- आनन्द हर्ष, प्रसन्नता
- उन्नति उत्कर्ष, उत्थान
- किसान कृषक, कृषिजीवी
- गहना जेवर, अलंकार

6) निम्नलिखित समरूपी भिन्नार्थक शब्द-युग्म का प्रयोग वाक्य में करके अर्थ स्पष्ट कीजिए :-

क्रम संख्या	शब्द युग्म	वाक्य
1.	अन्न	अन्न को व्यर्थ न छोड़ें।
	अन्य	राम के अतिरिक्त अन्य कोई स्कूल नहीं आया।
2.	गिरि	गिरिराज हिमालय भारत देश की उत्तर दिशा में है।
	गिरी	वह छत से गिरी थी।
3.	गुर	उसने हस्तकला का यह गुर कहाँ से पाया ?
	गुरु	गुरु जी नगर में परसों पधारेंगे।
4.	नियत	वे नियत समय पर कभी नहीं आते।
	नीयत	उनकी नीयत तो खराब प्रतीत होती है।
5.	प्रहार	गुंडे ने चाकू से प्रहार किए थे।
	परिहार	गुरुजी अन्न का परिहार कर चुके हैं।

7) निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए :-

अनेक शब्द/वाक्यांश	एक शब्द	अनेक शब्द/वाक्यांश	एक शब्द
• जो कभी न मरे	अमर	• अपना नाम स्वयं लिखना	हस्ताक्षर
• जो संभव न हो सके	असंभव	• जो स्वयं सेवा करता हो	स्वयंसेवी
• दर्द से भरा हुआ	दर्दीला	• छात्रों के रहने का स्थान	छात्रावास
• अपने ऊपर बीती	आपबीती	• जिसके आने की तिथि मालूम न हो	अतिथि
• दूर की बात सोचने वाला	दूरदर्शी	• मास में एक बार होने वाला	मासिक
• जिसका कोई दोष न हो	निर्दोष	• दूसरे के काम में हाथ डालना	हस्तक्षेप
• जो पहले हो चुका हो	अतीत/पूर्वघटित	• दया करने वाला	दयावान / दयालु
• पंचों की सभा	पंचायत	• जो दो भाषाएँ जानता हो	द्विभाषी
• मीठा बोलने वाला	मृदुभाषी	• जो काम से जी चुराए	कामचोर
• ईश्वर में विश्वास न रखनेवाला	नास्तिक	• जिसके मन में कपट हो	कपटी

8) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :-

शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द
• अनुज	अग्रज	• आयात	निर्यात
• कृतज्ञ	कृतघ्न	• उधार	नकद
• एकता	अनेकता	• निर्माण	विनाश
• प्रत्यक्ष	परोक्ष	• मानव	दानव
• वीर	कायर	• हार	जीत

9) निम्नलिखित शब्दों के अनेकार्थक शब्द लिखिए :

शब्द अनेकार्थक शब्द

- अंक गोद, नाटक का अंक
- अंबर वस्त्र, आकाश
- आम मामूली,आम का फल
- गुरु बड़ा, भारी
- घट घड़ा, शरीर
- निशान चिह्न, ध्वज

10) निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :-

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.वह बुधवार के दिन आएगा।	1. वह बुधवार को आएगा।
2. चारों अपराधियों का नाम बताओ।	2. चारों अपराधियों के नाम बताओ।
3. मेरे को दिल्ली जाना है।	3. मुझे दिल्ली जाना है।
4. उसका आँसू निकल आया।	4. उसके आँसू निकल आए।
5. मेले में बच्ची गुम हो गया।	5. मेले में बच्ची गुम हो गई।
6. रानी छत में खेल रही है।	6. रानी छत पर खेल रही है।
7. वह चले गए।	7. वे चले गए।
8. मैं गर्म गाय का दूध पीना चाहता हूँ।	8. मैं गाय का गर्म दूध पीना चाहता हूँ।
9. मैंने उसका गाना और नृत्य देखा।	9. मैंने उसका गाना सुना और नृत्य देखा।
10. बालक को थाली में रखकर खाना खिलाओ।	10. खाना थाली में रखकर बालक को खिलाओ।

पाठ - 11 (अपठित गद्यांश)

1) इस संसार में प्रकृति द्वारा मनुष्य को दिया गया सबसे अमूल्य उपहार 'समय' है। ढह गई इमारत को दोबारा खड़ा किया जा सकता है; बीमार व्यक्ति को इलाज द्वारा स्वस्थ किया जा सकता है ; खोया हुआ धन दोबारा प्राप्त किया जा सकता है ; किन्तु एक बार बीता समय पुनः नहीं पाया जा सकता। जो समय के महत्त्व को पहचानता है, वह उन्नति की सीढ़ियाँ चढ़ता जाता है। जो समय का तिरस्कार करता है, हर काम में टालमटोल करता है, समय को बर्बाद करता है,

समय भी उसे एक दिन बर्बाद कर देता है। समय पर किया गया हर काम सफलता में बदल जाता है जबकि समय के बीत जाने पर बहुत कोशिशों के बावजूद भी कार्य को सिद्ध नहीं किया जा सकता। समय का सदुपयोग केवल कर्मठ व्यक्ति ही कर सकता है, लापरवाह, कामचोर और आलसी नहीं। आलस्य मनुष्य की बुद्धि और समय दोनों का नाश करता है। समय के प्रति सावधान रहने वाला मनुष्य आलस्य से दूर भागता है तथा परिश्रम, लगन व सत्कर्म को गले लगाता है। विद्यार्थी जीवन में समय का अत्यधिक महत्त्व होता है। विद्यार्थी को अपने समय का सदुपयोग ज्ञानार्जन में करना चाहिए न कि अनावश्यक बातों, आमोद-प्रमोद या फैशन में।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

प्रश्न 1. प्रकृति द्वारा मनुष्य को दिया गया सबसे अमूल्य उपहार क्या है ?

उत्तर - प्रकृति द्वारा मनुष्य को दिया गया सबसे अमूल्य उपहार समय है।

प्रश्न 2. समय के प्रति सावधान रहने वाला व्यक्ति किससे दूर भागता है ?

उत्तर - समय के प्रति सावधान रहने वाला व्यक्ति आलस्य से दूर भागता है।

प्रश्न 3. विद्यार्थी को समय का सदुपयोग कैसे करना चाहिए?

उत्तर - विद्यार्थी को समय का सदुपयोग ज्ञानार्जन में करना चाहिए।

प्रश्न 4. 'कर्मठ' तथा 'तिरस्कार' शब्दों के अर्थ लिखिए।

उत्तर - 1) कर्मठ - परिश्रमी 2) तिरस्कार - अपमान।

प्रश्न 5. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

उत्तर - प्रकृति का अमूल्य उपहार - समय।

2) हर देश, जाति और धर्म के महापुरुषों ने 'सादा जीवन और उच्च विचार' के सिद्धांत पर बल दिया है, क्योंकि हर समाज में ऐश्वर्यपूर्ण, स्वच्छंद और आडम्बरपूर्ण जीवन जीने वाले लोग अधिक हैं। आज मनुष्य सुख-भोग और धन-दौलत के पीछे भाग रहा है। उसकी असीमित इच्छाएँ उसे स्वार्थी बना रही हैं। वह अपने स्वार्थ के सामने दूसरों की सामान्य इच्छा और आवश्यकता तक की परवाह नहीं करता जबकि विचारों की उच्चता में ऐसी शक्ति होती है कि मनुष्य की इच्छाएँ सीमित हो जाती हैं। सादगीपूर्ण जीवन जीने से उसमें संतोष और संयम जैसे अनेक सद्गुण स्वतः ही उत्पन्न हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त उसके जीवन में लोभ, द्वेष और ईर्ष्या का कोई स्थान नहीं रहता। उच्च विचारों से उसका स्वाभिमान भी बढ़ जाता है जो कि उसके चरित्र की प्रमुख पहचान बन जाता है। इससे वह छल-कपट, प्रमाद और अहंकार से दूर रहता है। किन्तु आज की इस भाग-दौड़ वाली ज़िन्दगी में हरेक व्यक्ति की यही लालसा रहती है कि उसकी ज़िन्दगी ऐशो-आराम से भरी हो। वास्तव में आज के वातावरण में मानव पश्चिमी सभ्यता, फैशन और भौतिक सुख साधनों से भ्रमित होकर उनमें संलिप्त होता जा रहा है। ऐसे में मानवता की रक्षा केवल सादा जीवन और उच्च विचार रखने वाले महापुरुषों के आदर्शों पर चलकर ही की जा सकती है।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

प्रश्न 1. हर देश जाति और धर्म के महापुरुषों ने किस सिद्धांत पर बल दिया है ?

उत्तर -हर देश, जाति और धर्म के महापुरुषों ने 'सादा जीवन और उच्च विचार' के सिद्धांत पर बल दिया है।

प्रश्न 2. अपने स्वार्थ के सामने मनुष्य को किस चीज़ की परवाह नहीं रहती ?

उत्तर - अपने स्वार्थ के सामने मनुष्य को दूसरों की सामान्य इच्छा और आवश्यकता की भी परवाह नहीं रहती।

प्रश्न 3. सादगीपूर्ण जीवन जीने से मनुष्य में कौन-कौन से गुण उत्पन्न हो जाते हैं?

उत्तर- सादगीपूर्ण जीवन जीने से मनुष्य में संतोष और संयम के गुण उत्पन्न हो जाते हैं।

प्रश्न 4. 'प्रमाद' तथा 'लालसा' शब्दों के अर्थ लिखिए।

उत्तर - 1) प्रमाद - नशा 2) लालसा – अभिलाषा।

प्रश्न 5. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

उत्तर – सादा जीवन और उच्च विचार।

अनुच्छेद-लेखन

मेरी दिनचर्या

दिनचर्या से अभिप्राय है- नित्य किए जाने वाले काम। इन कामों को योजनाबद्ध तरीके से करना चाहिए। मैंने अपनी पढ़ाई, व्यायाम, खेलकूद, मनोरंजन व विश्राम आदि के आधार पर अपनी दिनचर्या बनायी हुई है। इसी के आधार पर मैं दिनभर काम करता हूँ। मेरा स्कूल सुबह आठ बजे लगता है, किन्तु मैं सुबह पाँच बजे उठकर पहले अपने पिता जी के साथ सैर को जाता हूँ। कुछ व्यायाम भी करता हूँ। घर आकर नहा-धोकर थोड़ी देर पढ़ता हूँ क्योंकि इस समय वातावरण में शान्ति होती है तथा दिमाग ताज़ा होता है। नाश्ता करके मैं सुबह स्कूल चला जाता हूँ। स्कूल से छुट्टी के बाद खाना खाकर मैं पहले थोड़ी देर आराम करता हूँ। मुझे फुटबॉल खेलना बहुत अच्छा लगता है। इसलिए मैं शाम को एक घंटा फुटबॉल खेलता हूँ। मैं खेलने के बाद घर आकर स्कूल से मिले होमवर्क को करता हूँ। होमवर्क के बाद मैं कठिन विषयों का अभ्यास भी करता हूँ। इसके बाद लगभग आधा घंटा टेलीविज़न पर अपना मनपसंद चैनल देखता हूँ। फिर खाना खाकर थोड़ी देर सैर भी करता हूँ। तत्पश्चात सरल विषयों का भी अध्ययन करता हूँ। मैं रात को सोने से पहले प्रभु का स्मरण करता हूँ और सो जाता हूँ। इस दिनचर्या से मेरा जीवन नियमित हो गया है।

मेरी पहली हवाई यात्रा

इस बार गर्मियों की छुट्टियों में मेरे माता-पिता ने श्रीनगर जाने का प्रोग्राम बनाया। मेरे पिता जी ने इंटरनेट के माध्यम से 'गो एयर' कंपनी की टिकटें बुक करवा दीं। यात्रा के निर्धारित दिन हम टैक्सी से हवाई अड्डे पर पहुँच गए। हम पूछताछ करके 'गो एयर' कंपनी के काउंटर पर पहुँचे। हमनें अपना सामान चैक करवाया और उन्होंने बताया कि हमारा वह सामान सीधा जहाज़ में रखवा दिया जाएगा। हमें अपने सामान की रसीद और यात्री पास दे दिए गए। सामान जमा करवाकर हम उस ओर बढ़े जहाँ व्यक्तियों के हैंडबैग, मोबाइल, लैपटॉप, कैमरा आदि की चैकिंग की जा रही थी। कम्प्यूटर तकनीक के माध्यम से सामान की चैकिंग देखकर मैं दंग रह गई। पहली हवाई यात्रा का आनन्द उठाने के लिए मैं उत्सुक थी। इसके बाद हम निर्धारित स्थान पर पहुँच गए, हमारी टिकटें चैक हुईं और हम जहाज़ में जा बैठे। जहाज़ में विमान परिचारिकाओं ने हमारा स्वागत किया, हमें सीट बैल्ट बाँधने की हिदायतें दीं और कुछ ही पलों में जहाज़ ने उड़ान भरी और देखते ही देखते वह बादलों के बीच था। इतनी सुखद व रोमांचकारी यात्रा मेरे लिए अविस्मरणीय रहेगी।

पाठ - 13 (पत्र - लेखन)

1) अपनी गलती के लिए क्षमा याचना करते हुए अपने स्कूल के प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र लिखिए।

सेवा में
प्रधानाचार्य
बाल विकास विद्यालय

हैदराबाद।
दिनांक : 12.08.2025
विषय : क्षमा याचना के लिए प्रार्थना पत्र।
माननीय महोदय,
सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय में दसवीं कक्षा का विद्यार्थी हूँ। मुझसे एक गलती हुई है जिसके लिए मैं आपसे क्षमा माँगना चाहता हूँ।
मैंने आज लाइब्रेरी के पीरियड में चोरी से एक किताब से दो पन्ने फाड़ लिए थे। मेरी इस धृष्टता को अध्यापक ने देख लिया। मेरी चोरी पकड़ी गयी। अब मैं बहुत ही शर्मिंदा हूँ। यह मेरी पहली गलती है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं भविष्य में कभी ऐसी गलती नहीं करूँगा।
कृपया मेरी इस गलती को माफ कर दीजिए। मैं आपका अति आभारी रहूँगा।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
शिशुपाल सिंह
(शिशुपाल सिंह)
कक्षा-दसवीं-ए
रोल नम्बर-13

2) विषय बदलने के लिए विद्यालय के प्रधानाचार्या को पत्र लिखिए।

सेवा में
प्रधानाचार्य
उत्थान पब्लिक स्कूल
चंडीगढ़ ।
दिनांक : 17.09.2022

विषय: विषय बदलने के लिए प्रार्थना पत्र
माननीय महोदया,
सविनय निवेदन यह है कि मैं दसवीं-सी कक्षा का विद्यार्थी हूँ। मैं लिए गए विषयों में से एक विषय बदलना चाहता हूँ।
इस कक्षा के लिए प्रवेश फार्म भरते समय मैंने 'चित्रकला' विषय को चुना था किन्तु अब मुझे इस विषय को पढ़ते समय कठिनाई हो रही है। मैं इस विषय के स्थान पर 'खेतीबाड़ी' विषय पढ़ना चाहता हूँ। मेरी खेतीबाड़ी में बहुत रुचि है।
अतः आपसे विनती है कि मुझे कृपया विषय परिवर्तन की आज्ञा दी जाए। इस कृपा के लिए मैं आपका बहुत आभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
नीरज वर्मा
(नीरज वर्मा)
कक्षा दसवीं-सी
रोल नम्बर- 08

पाठ -14
अनुवाद

निम्नलिखित पंजाबी के गद्यांशों का हिंदी में अनुवाद करें

1. ਮੈਨੂੰ ਜਦੋਂ ਵੀ ਆਪਣਾ ਬਚਪਨ ਯਾਦ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਮੇਰਾ ਦਿਲ ਕਰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਉਸੇ ਬਚਪਨ ਵਿਚ ਗੁਮ ਹੋ ਜਾਵਾਂ | ਮਨ ਬਚਪਨ ਦੀਆਂ ਖੇਡਾਂ ਵਲ ਚਲਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ । ਪਤੰਗ ਉਡਾਣਾ, ਦੋਸਤਾਂ ਨਾਲ਼ ਸਾਈਕਲ ਦੀਆਂ ਰੇਸਾਂ ਲਗਾਉਣਾ, ਬੰਟੇ ਖੇਡਣੇ ਅਤੇ ਰਾਤ ਨੂੰ ਲੁਕਣ-ਮੀਟੀ ਖੇਡਣਾ ਮੈਨੂੰ ਅੱਜ ਵੀ ਯਾਦ ਹੈ । ਤਪਦੀ ਗਰਮੀ ਵਿਚ ਬਾਗ਼ ਵਿੱਚ ਅੰਬ ਤੋੜ ਕੇ ਖਾਣੇ ਅਤੇ ਬਹੁਤ ਤੇਜ਼ ਮੀਂਹ ਵਿਚ ਨਹਾਉਣਾ ਮੈਨੂੰ ਬਹੁਤ ਚੰਗਾ ਲਗਦਾ ਸੀ ।
अनुवाद- मुझे जब भी अपना बचपन याद आता है तो मेरा दिल करता है कि मैं अपने उस बचपन में गुम हो जाऊँ। मन बचपन की खेलों की तरफ़ चला जाता है। पतंग उड़ाना, मित्रों के साथ साइकिल की दौड़ें लगाना, कंचे खेलने और रात को छुपम-छुपाई खेलना मुझे आज भी याद है। तपती गर्मी में बाग़ में आम तोड़ कर खाने और बहुत तेज़ बारिश में नहाना मुझे बहुत अच्छा लगता था।
2. ਭ੍ਰਿਸ਼ਟ ਆਚਰਣ ਹੀ ਭ੍ਰਿਸ਼ਟਾਚਾਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ । ਕੁਝ ਲੋਕ ਕੇਵਲ ਪੈਸੇ ਦੀ ਹੇਰਾਫੇਰੀ ਅਤੇ ਘਪਲੇਬਾਜ਼ੀ ਨੂੰ ਹੀ ਭ੍ਰਿਸ਼ਟਾਚਾਰ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਪਰ ਇਸ ਵਿਚ ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਮਿਲਾਵਟ, ਅਨਿਆਂ, ਸ਼ਿਫਾਰਿਸ, ਕਾਲਾਬਾਜ਼ਾਰੀ, ਸ਼ੋਸ਼ਣ ਅਤੇ ਧੋਖਾ ਆਦਿ ਸਭ ਕੁਝ ਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਸਾਰਾ ਸਮਾਜ ਇੱਕ ਜੁਟ ਹੋ ਕੇ ਹੀ ਭ੍ਰਿਸ਼ਟਾਚਾਰ ਰੂਪੀ ਇਸ ਦੈਂਤ ਨੂੰ ਖ਼ਤਮ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ ।
अनुवाद - भ्रष्ट आचरण ही भ्रष्टाचार होता है। कुछ लोग केवल पैसे की हेराफेरी और घपलेबाज़ी को ही भ्रष्टाचार कहते हैं। पर इसके अतिरिक्त मिलावट, अन्याय, सिफ़ारिश, कालाबाज़ारी, शोषण और धोखा आदि सब कुछ आ जाता है। सारा समाज एकजुट हो कर भ्रष्टाचार रूपी इस दैत्य को समाप्त कर सकता है।

पाठ-15 (मुहावरे/लोकोक्तियाँ)

नीचे दिए गए मुहावरों के अर्थ समझकर वाक्य बनाइए :
1. अपने पैरों पर खड़े होना - (आत्मनिर्भर होना) - समाज में अपने पैरों पर खड़े होने वाले का बहुत सम्मान होता है ।
2. आँच न आने देना - (किसी तरह का नुकसान न होने देना) - हमें अपने देश की मान-मर्यादा पर आँच नहीं आने देनी चाहिए।
3. उन्नीस-बीस का अंतर होना - (बहुत कम अंतर होना) - रवि और राजन की उम्र में उन्नीस-बीस का अंतर है ।
4. कान में तेल डाल लेना - (बात न सुनना) - रजनी को कितना बुलाओ सुनती ही नहीं, लगता है उस ने कान में तेल डाल लिया है।
5. गले का हार - (बहुत प्यारा) - राम अपने माता-पिता के गले का हार है ।

नीचे दिए गए लोकोक्तियों के अर्थ समझकर वाक्य बनाइए :
1. अपना वही जो आवे काम - (मित्र वही है जो मुसीबत में काम आए) - जसबीर सिंह की बेटी की शादी में जब उसे कुछ रुपयों की ज़रूरत पड़ी तब रविन्द्र सिंह ने उसे मुँह- माँगी रकम तुरंत दे दी तो जसबीर सिंह कह उठा - अपना वही जो आवे काम ।

2. आग लगाकर पानी को दौड़ना - (झगड़ा कराने के बाद स्वयं ही सुलह कराने बैठना) - पहले तो पिंकी हरमन से लड़ती रही फिर स्वयं ही उसे मनाने लगी तो हरमन ने कहा तुम तो आग लगा कर पानी को दौड़ने का काम कर रही हो ।

3. उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे - (अपराध करने वाला उल्टी धौंस जमाए) - रवि ने साइकिल से ठोकर मार कर वृद्ध को गिरा दिया और फिर उसे बुरा-भला कहने लगा, इसी को कहते हैं उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे ।

4. ओस चाटे प्यास नहीं बुझती - (अधिक आवश्यकता वाले को थोड़े - से संतुष्टि नहीं होती) - हाथी का पेट एक केले से नहीं भरता उसे तो कई दर्जन केले खाने के लिए देने होंगे क्योंकि उसकी ओस चाटे प्यास नहीं बुझती ।

5. कोठी वाला रोये छप्पर वाला सोये - (धनी प्रायः चिन्तित रहते हैं और निर्धन निश्चिंत रहते हैं) - राजकुमार करोड़ों का मालिक है । उसे अपने धन की सुरक्षा की सदा चिंता बनी रहती है। जबकि फकीरचंद फक्कड़ है, इसलिए सदा खुश रहता है । इसीलिए कहते हैं कि कोठी वाला रोये छप्पर वाला सोये।

पाठ - 16 (विज्ञापन,सूचना और प्रतिवेदन)

i) विज्ञापन

अभ्यास

1. आपका नाम प्रज्ञा है। आप समाज सेविका हैं। आपके कोचिंग सेंटर का नाम है- प्रज्ञा कोचिंग सैंटर। आपका फोन नम्बर 1891000000 है। आपने शामपुरा शहर में दसवीं, बारहवीं कक्षा के गरीब विद्यार्थियों के लिए साइंस व गणित विषयों की निःशुल्क कोचिंग कक्षाएं एक नये कोचिंग सेंटर में खोली हैं। कोचिंग सेंटर के उद्घाटन के सम्बन्ध में एक विज्ञापन का प्रारूप तैयार करके लिखिए।

उत्तर - **प्रज्ञा कोचिंग सेंटर**

आगामी शिक्षा सत्र को ध्यान में रखते हुए आपके अपने शहर में दसवीं, बारहवीं के विद्यार्थियों के लिए निःशुल्क साइंस व गणित विषय की तैयारी हेतु कोचिंग सेंटर को आरंभ किया जा रहा है। संपर्क करें :- प्रज्ञा। डायरेक्टर, प्रज्ञा कोचिंग सेंटर, शामपुरा। मोबाइल नं० 1891000000.

2. आपका नाम मंगल राय है। आपकी मेन बाज़ार, अम्बाला में कपड़े की दुकान है। आपका फोन नंबर 1746578673 है। वर्गीकृत विज्ञापन के अंतर्गत 'सेल्ज़मैन की आवश्यकता है' का प्रारूप तैयार करके लिखें।

उत्तर - **सेल्ज़मैन की आवश्यकता**

कपड़े की दुकान पर एक कुशल सेल्ज़मैन को आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार। शीघ्र मिलें - मंगलराय। मेन बाज़ार,अम्बाला। मोबाइल नं० 1746578673.

(ii) सूचना

अभ्यास

1. सरकारी हाई स्कूल, सैक्टर-14, चंडीगढ़ के मुख्याध्यापक की ओर से स्कूल के सूचना-पट (नोटिस बोर्ड) के लिए एक सूचना तैयार कीजिए, जिसमें स्कूल की सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए सैक्शन बदलने की अंतिम तिथि 07.05.2022 दी गयी हो।

उत्तर - **सैक्शन बदलने संबंधी सूचना** **29.04.2022**

सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि जो विद्यार्थी किसी भी कारण अपना सेक्शन बदलना चाहता है, वह अपना नाम अपने कक्षा अध्यापक को दिनांक 07 मई, 2022 से पहले लिखवा दे।

मुख्याध्यापक
सरकारी हाई स्कूल
सैक्टर-14, चंडीगढ़।

2. आपका नाम प्रदीप कुमार है। आप सूर्या सीनियर सेकंडरी स्कूल, पठानकोट में हिंदी के अध्यापक हैं। आप स्कूल की हिंदी साहित्य समिति के सचिव हैं। इस समिति द्वारा आपके स्कूल में दिनांक 11.08.2022 को 'सड़क सुरक्षा' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस संबंध में आप अपनी ओर से एक सूचना तैयार कीजिए जिसमें विद्यार्थियों को इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए कहा गया हो।

उत्तर - **भाषण प्रतियोगिता का आयोजन** **22.07.2022**

विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि हिंदी साहित्य समिति की ओर से दिनांक 11 अगस्त, 2022 को विद्यालय के हाल में 'सड़क सुरक्षा' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु आप सभी आमंत्रित हैं। आप अपना नाम 27 जुलाई तक निम्नहस्ताक्षरी को लिखवा दें।

प्रदीप कुमार
सचिव, हिंदी साहित्य समिति।
सूर्या सीनियर सेकेंडरी स्कूल, पठानकोट।

iii) प्रतिवेदन

अभ्यास

1. आपका नाम संदीप कुमार है। आप सरकारी हाई स्कूल, नवाँशहर में पढ़ते हैं। आप अपने स्कूल के छात्र-संघ के सचिव हैं। आपके स्कूल में दिनांक 14 नवम्बर, 2022 को ट्रैफिक पुलिस अधिकारी द्वारा विद्यार्थियों को सड़क पर चलने के नियमों की जानकारी दी गयी तथा इस सम्बन्धी पढ़ने की सामग्री भी दी गयी। इस आधार पर प्रतिवेदन लिखिए।

उत्तर - **शीर्षक- सड़क सुरक्षा गोष्टी**

सरकारी हाई स्कूल, नवांशहर के परिसर में दिनांक 14 नवंबर, 2022 को प्रातः 9 बजे स्थानीय ट्रैफिक पुलिस अधिकारी द्वारा विद्यार्थियों को सड़क पर चलने के नियमों की जानकारी देते हुए बताया गया कि। उन्होंने यातायात से संबंधित विभिन्न नियमों की सामग्री भी पढ़ने के लिए विद्यार्थियों में वितरित की। उन्होंने मंत्र दिया कि सड़क पर सावधानी से चलने में ही सुरक्षा है। मुख्याध्यापक महोदय ने उनकी इस महत्त्वपूर्ण जानकारी देने के लिए आभार व्यक्त किया।

संदीप कुमार
सचिव, छात्र-संघ
सरकारी हाई स्कूल, नवाँशहर

2. आपका नाम मनजीत सिंह है। आप चंडीगढ़ पब्लिक स्कूल, चंडीगढ़ में पढ़ते हैं। आप अपने स्कूल के हिन्दी-साहित्य-परिषद् के सचिव हैं। आपके स्कूल में दिनांक 20 नवम्बर, 2022 को हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थियों ने भाग लिया। कवियों द्वारा अपनी हास्य कविताओं से सभी का मनोरंजन किया गया। इस आधार पर प्रतिवेदन लिखिए।

उत्तर - **शीर्षक-हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन**

चंडीगढ़ पब्लिक स्कूल, चंडीगढ़ के परिसर में दिनांक 20 नवंबर, 2022 को प्रातः 10 बजे मुख्याध्यापक श्री विकास शर्मा जी की अध्यक्षता में एक हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न कक्षाओं के तीस विद्यार्थियों ने अपनी हास्य कविताओं से सभी का मनोरंजन किया। सर्वश्रेष्ठ प्रथम तीन विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

मनजीत सिंह
सचिव, हिन्दी साहित्य परिषद्
चंडीगढ़ पब्लिक स्कूल, चंडीगढ

पाठ - 17
प्रपत्र-पूर्ति

1) मान लीजिए आपका नाम राज कुमार है। आपका हिंदोस्तान बैंक, शाखा-मुम्बई में एक बचत खाता है, जिसका नम्बर 7338380103 है। आपको अपने इस खाते में से 7500/- रुपये निकलवाने हैं। इस अनुसार निम्नलिखित प्रपत्र को अपनी उत्तर-पुस्तिका पर उतारकर भरें।

हिंदोस्तान बैंक, शाखा - मुम्बई
बचत बैंक आहरण प्रपत्र

बचत खाताधारक का नाम : .... राज कुमार ....

खाता नम्बर : ....7338380103 ....कृपया मुझे

.... 7500/- रु. (अंकों में) .... केवल सात हज़ार पाँच सौ रुपये ...... (शब्दों में) अदा करें।

खाताधारक के हस्ताक्षर : ....राज क़ुमार......

2) मान लीजिए आपका नाम शिखर कुमार है। आपको लोकेश कुमार को दिनांक 06.12.2023 को 10,000/- रु. का स्वहस्ताक्षरित रेखांकित किया हुआ चेक लिखकर देना है। इस अनुसार निम्नलिखित चेक के प्रपत्र को भरें :

दिनांक : ....06.12.2023.........

.... लोकेश कुमार ....

या धारक को रुपये .... दस हज़ार ....

10000/

.... अदा करें

.... शिखर कुमार ....

कृपया यहाँ हस्ताक्षर करें

3) मान लीजिए आपका नाम कांता देवी है। आपको रेखा कुमारी को दिनांक 03.12.2023 को ₹20000 का स्वाहस्ताक्षरित रेखांकित किया हुआ चेक लिखकर देना है। इस अनुसार निम्नलिखित चेक के प्रपत्र को भरें :-

दिनांक : ...... 03.12.2023 ......

.... रेखा कुमारी ....

....या धारक को

रुपये .... बीस हज़ार ....

रु. 20,000

.... अदा करें

कृपया यहाँ हस्ताक्षर करें

.... कांता देवी ....

4) मान लीजिए आपका नाम जगदीश सिंह है। आपका भारत बैंक, शाखा - गंगानगर में एक बचत खाता है, जिसका नम्बर 492694213 है। आपको अपने इस खाते में से 3500/- रुपये निकलवाने हैं। इस अनुसार निम्नलिखित प्रपत्र को अपनी उत्तर-पुस्तिका पर उतारकर भरें।

भारत बैंक, शाखा - गंगानगर

बचत बैंक आहरण प्रपत्र

बचत खाताधारक का नाम: .... जगदीश सिंह ....
खाता नम्बर: .... 492694213 .... कृपया मुझे
.... 3500/- रु. (अंकों में ....केवल तीन हज़ार पाँच सौ रुपये .... (शब्दों में) अदा करें।

खाताधारक के हस्ताक्षर : .... जगदीश सिंह ....

5) मान लीजिए आपका नाम विजय दीनानाथ चौहान है। आपका अरावली बैंक, शाखा-चण्डीगढ़ में एक बचत खाता है, जिसका नम्बर 7873826633 है। आपको अपने इस खाते में दिनांक 26.12.2023 को 4500/- रुपये जमा करवाने हैं। इस अनुसार निम्नलिखित प्रपत्र को अपनी उत्तर-पुस्तिका पर उतारकर भरें।

अरावली बैंक, शाखा - चण्डीगढ़

बैंक में रुपये जमा करवाने हेतु प्रपत्र

दिनांक : .....26.12.2023.........

जमा बचत खाता नम्बर : ...... 7873826633 ......जो कि श्री ..... विजय दीनानाथ चौहान .... के नाम से है,

में ....रुपये चार हज़ार पाँच सौ केवल .... (शब्दों में) की राशि जमा करें।

जमाकर्ता के हस्ताक्षर .... विजय दीनानाथ चौहान ....

6) मान लीजिए आपका नाम सूर्य कुमार यादव है। आपका हिमालय बैंक, शाखा सोलन में एक बचत खाता है, जिसका नंबर 123498734242 है। आपको अपने इस खाते में दिनांक 23.06.2023 को ₹3000 जमा करवाने हैं। इस अनुसार निम्नलिखित प्रपत्र को अपनी उत्तर पुस्तिका पर उतारकर भरें :-

हिमालय बैंक, शाखा : सोलन
बैंक में रुपये जमा करवाने हेतु प्रपत्र

दिनांक : ..... 23.06.2023 ....

जमा बचत खाता नम्बर : ...... 123498734242 .... जो कि श्री ..... सूर्य कुमार यादव .... के नाम से है,

में .... रुपए तीन हज़ार केवल .... (शब्दों में) की राशि जमा करें।

जमाकर्ता के हस्ताक्षर : .... सूर्य कुमार यादव ....

7) मान लीजिए आपका नाम मेधावी है। आपका भारतीय डाक के सेक्टर – 47, चंडीगढ़ में एक बचत खाता है, जिसका नम्बर 6283389291 है। आपको अपने इस खाते में से दिनांक 21.08.2023 को 10,000/- रुपये निकलवाने हैं। इस अनुसार निम्नलिखित प्रपत्र को अपनी उत्तर-पुस्तिका पर उतारकर भरें।

रुपये निकालने का फार्म
(जमाकर्ता द्वारा भरा जाए)
डाकघर का नाम : सेक्टर – 47,चंडीगढ़

दिनांक : ...... 21.08.2023 ....

बचत खाता सं : .... 6283389291 ....
कृपया मुझे ....10,000/- रु. (अंकों में) .... केवल दस हज़ार रुपये .... (शब्दों में)
का भुगतान करें।

जमाकर्ता के हस्ताक्षर : ....मेधावी...........

8) मान लीजिए आपका नाम चार्वी है। आपका भारतीय डाक के सेक्टर – 43, चंडीगढ़ में एक बचत खाता है, जिसका नम्बर 37289932411 है। आपको अपने इस खाते में से दिनांक 05.11.2023 को 25,000/- रुपये निकलवाने हैं। इस अनुसार निम्नलिखित प्रपत्र को अपनी उत्तर-पुस्तिका पर उतारकर भरें।

रुपये निकालने का फार्म
(जमाकर्ता द्वारा भरा जाए)
डाकघर का नाम: सेक्टर – 43, चण्डीगढ़

दिनांक : ..... 05.11.2023 ....

बचत खाता सं: ..... 37289932411 ....

कृपया मुझे ...... 25,000/- रु. (अंकों में) ....केवल पच्चीस हज़ार रुपये ....(शब्दों में) का भुगतान करें।

जमाकर्ता के हस्ताक्षर : ....चार्वी......

मार्गदर्शक

- डॉ. राजन एस.आर.पी. हिंदी पंजाब

तैयार कर्ता:

- अनवर हुसैन, हिंदी अध्यापक, स.मि. स्कूल, चणों , फतेहगढ़ साहिब
- दीपक कुमार, हिंदी अध्यापक, स.मि. स्कूल शेरगढ़, बठिंडा